



ऊर्जा संरक्षण विशेषांक

रेल राजभाषा

अंक 144 जनवरी-मार्च 2026



रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) नई दिल्ली

रेलवे हिंदी सलाहकार समिति की 62वीं बैठक की झलकियां





निदेशक राजभाषा की कलम से...



प्रिय पाठकों,

देहरादून शहर के बाहर लगभग 14-15 किमी की दूरी पर एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। नाम है उसका 'सहस्र धारा'। वर्षों पहले उसे एक बार देखने का अवसर मिला। वहाँ धाराएं हजारों तो नहीं बह रही थीं, लेकिन हाँ, हजारों लोग जरूर थे। कुछ लोग वहाँ बह रहे झरनों में नहा रहे थे तो कुछ फोटो खिंचा रहे थे। कुछ झुंड में थे तो कुछ अकेले या दुकेले थे। कुछ शांत तो कुछ कोलाहलपूर्ण। बहुत कुछ था वहाँ, मानों वहाँ मानव समाज की गतिविधियों की 'सहस्र धाराएं' बह रही हों, अर्थात् सभी में एक निरंतरता थी, जीवंतता थी। मैं सोच रही थी कि इस जगह का यह नाम भले ही कभी प्राकृतिक रूप से हजारों धाराओं अथवा झरनों के कारण पड़ा हो, जो अब वहाँ की बसावट या प्राकृतिक बदलाव के कारण लुप्तप्राय सी हो गई है। लेकिन अब वहाँ भारत की विविधता की 'सहस्र धारा' अवश्य बह रही है, जो भारत को अनूठा, अद्वितीय और आश्चर्यजनक बनाती है।

किसी भी देश, समाज अथवा समुदाय को गतिशील बनाए रखने और सकारात्मक दिशा की ओर प्रवृत्त करने के लिए उसे निरंतर ऊर्जस्वित रखना होता है। मतलब यह कि देश, समाज अथवा समुदाय से एकता, अखंडता, जीवंतता, व्यापकता और नवोन्मेशी चिंतन एवं समावेशी सौहार्द्र की एक सतत धारा प्रस्फुटित होती रहनी चाहिए। जैसा कि भारतीय रेल अपनी ऊर्जा की भावी आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु तरह-तरह के ऊर्जा स्रोतों/संसाधनों/तकनीकों/नवोन्मेषी अनुसंधानों की ओर प्रवृत्त है।

जैसा कि भारतीय रेल अपने सुचारू प्रचालन हेतु ऊर्जा संरक्षण की नीतियों को अभिन्न अंग बनाया हुआ है और 2030 तक 'नेट जीरो कार्बन एमिशन' का लक्ष्य निर्धारित करते हुए सौर ऊर्जा, ऊर्जा-दक्ष प्रकाश व्यवस्था और हरित परिवहन जैसे क्षेत्रों में क्रांतिकारी कदम उठाए हैं। उदाहरणस्वरूप, रूफ टॉप एवं अन्य खाली जगहों पर सौर पैनलों की स्थापना, पूर्वी रेलवे द्वारा विभिन्न स्थानों पर सौर संयंत्र लगाया जाना, वाराणसी में रेल पटरियों पर नई तकनीक के सौर पैनलों की पायलट परियोजना स्थापित करना आदि हमारी जीवंतता के प्रतीक हैं। ये सौर पैनल न केवल स्टेशनों और कार्यालय भवनों की छतों पर लगाए गए हैं, बल्कि ट्रेनों को शक्ति प्रदान करने के लिए भी उपयोग में लाए जा रहे हैं, जिससे जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम हो रही है। रेल मंत्रालय के अनुसार, 500 मेगावाट ग्रिड-कनेक्टेड रूफटॉप सौर फोटोवोल्टिक सिस्टम की योजना के तहत, रेलवे स्टेशनों पर 100% सौर ऊर्जा आधारित कर्षण रहित बिजली आपूर्ति का लक्ष्य हासिल किया जा रहा है।

भारतीय रेल देश की सम्मानित जनता के लिए मात्र आवागमन एवं परिवहन सुविधाओं को मुहैया कराने वाली संस्था ही नहीं है, बल्कि यह भारत निर्माण का एक अहम अंशधारक भी है। यह अपनी सेवाओं से देश और समाज में 'सहस्र धारा' की तरह ही एकता, अखंडता, विविधता, गतिशीलता, प्रगतिशीलता और समावेशिता आदि जैसी अनेक धाराओं का संचार करती है, जिसका स्पंदन भारत की विभिन्न भाषाओं, उपभाषाओं और बोलियों में संप्रेषित होता है। भारतीय रेल के प्रचालनगत दर्शन एवं सेवाओं को जन-जन तक पहुँचाने में हिंदी और भारतीय रेल परस्पर एक दूसरे के पूरक बने हुए हैं। क्योंकि हिंदी भाषा की जीवंतता, व्यापकता और समावेशी प्रकृति देश के सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूप को ऊर्जस्वित करती है, जिसकी आज वैश्विक अशांति के माहौल में अत्यंत आवश्यकता है।

आइए! भारत निर्माण के महान लक्ष्य और भाषा के विकास एवं संवर्धन के प्रति समर्पित होते हुए अपनी भाषा में अंतर्निहित ऊर्जा का आसवन करते हुए इसे जन-जन तक पहुँचाएं और एक श्रेष्ठ भारत के निर्माण के लिए दी गई भूमिकाओं को पूरी लगन एवं निष्ठा से निभाएं।

'रेल राजभाषा' के इस 'ऊर्जा संरक्षण विशेषांक' को आपके हाथों में सौंपते हुए सभी पाठकों, लेखक-लेखिकाओं और अपनी संपादकीय टीम के प्रति कृतज्ञता भी प्रकट करती हूँ और कटु आलोचनाओं सहित सुझावों की अपेक्षा भी रखती हूँ।

वी सुगुणा

(डॉ. वी. सुगुणा)

निदेशक, राजभाषा, रेलवे बोर्ड

संरक्षक

श्री सतीश कुमार
अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी,
रेलवे बोर्ड

परामर्शदाता

श्रीमती अरुणा नायर
महानिदेशक (मानव संसाधन)

मार्गदर्शक

डॉ. वी.जी. भूमा
अपर सदस्य (मानव संसाधन)

सलाहकार

श्रीमती विनीता वर्मा
कार्यपालक निदेशक, स्था. (श्रम कानून)

प्रधान संपादक

डॉ. वी. सुगुणा
निदेशक, राजभाषा

उप संपादक

श्री सतविंदर सिंह
उप निदेशक, राजभाषा

सह संपादक

श्री अमन शर्मा
सहायक निदेशक
हिंदी (समिति) एवं हिंदी (पत्रिका)

संपादन सहयोग

श्री अखिलेश कुमार
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
श्री राजेश रंजन
कनिष्ठ सचिवालय सहायक

पता :-

राजभाषा निदेशालय,
कमरा नं. 301, पत्रिका अनुभाग
कॉफमो कार्यालय परिसर
तिलक ब्रिज, नई दिल्ली-110002
ई-मेल:
patrikahindi@gmail.com

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक/कवि	पृष्ठ
1	ऊर्जा संरक्षण : भारतीय रेल द्वारा की गई पहल	सोनाली सुधस्मिता त्रिपाठी	5
2	नाम का बहुत ही महत्त्व है	डॉ. वी. जी. भूमा	8
3	मिशन 2026 : हरित रेलवे के माध्यम से भारत की ऊर्जा क्रांति का ब्लूप्रिंट	मनीष कटारा	10
4	ऊर्जा बचेगी, भविष्य सजेगा (कविता)	हरजीत राम सैनी	11
5	साझी पराजय (कहानी)	डॉ. वी. सुगुणा	12
6	रेल पटरियों के बीच उगता सूर्य-ऊर्जा संरक्षण की दिशा में बरेका का अभिनव कदम	राजेश कुमार	17
7	प्रकृति का वरदान	गौरव चाँदना	18
8	भारतीय रेल में ऊर्जा संरक्षण के दिशा में जारी है अभिनव प्रयास	संजीव कुमार सिंह	19
9	ऊर्जा संरक्षण (कविता)	राम प्रजापति	21
10	सौर ऊर्जा आत्मनिर्भरता की ओर बनारस लोकोमोटिव वर्क्स का सशक्त कदम	जगन्नाथ मुखर्जी	22
11	बसंत के दूत (कविता)	रेखा शाह आरबी	23
12	बदलते सामाजिक परिप्रेक्ष्य में सशक्त होती महिलाएँ	डॉ. प्रियंका पाठक	24
13	दो-दूनी चार (कविता)	महेश केशरी	26
14	रेल कर्मी और ऊर्जा संरक्षण (कविता)	नीरज सिंह	27
15	विवेकानंद का ऐतिहासिक शिकागो जयघोष	सुभाष सेतिया	27
16	रेलवे हिंदी सलाहकार समिति की 62वीं बैठक की झलकियाँ		31
17	संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा रेल कार्यालयों के निरीक्षण की झलकियाँ		34
18	रेलवे बोर्ड में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 157वीं बैठक की झलकियाँ		37
19	रेल मंत्री राजभाषा शील्ड/ट्रॉफी पुरस्कार-2024 वितरण की झलकियाँ		38
20	क्षेत्रीय रेलों/उत्पादन इकाइयों/प्रशिक्षण संस्थानों/उपक्रमों के उप महाप्रबंधकों (राजभाषा), वरिष्ठ राजभाषा अधिकारियों/ राजभाषा अधिकारियों की बैठक की झलकियाँ		40
21	आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना में आयोजित अखिल रेल हिंदी प्रतियोगिता-2024 की झलकियाँ		41
22	रेलवे बोर्ड में आयोजित जयन्ती कार्यक्रम की झलकियाँ		42
23	ऊर्जा संरक्षण और भारतीय रेल	अभिषेक कुमार प्रसाद	43
24	मेंढक और अजगर (कविता)	डॉ. कमलेन्द्र कुमार	44
25	जलती दोपहर (कहानी)	स्नेहा सिंह	45
26	सानिध्य (कविता)	अतुल कुमार	47
27	प्रशंसा में नहीं प्रसन्नता में जाएँ : स्वयं को स्वयं से स्वयं के द्वारा प्यार करना सीखो	अभय कुमार जैन	48
28	दफ्तर वगैरह (कविता)	विवेक कुमार गुप्ता	53
29	हिंदी साहित्य सृजन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका	गौरीशंकर वैश्य	54
30	ऊर्जा संरक्षण-आज की जरूरत	रणजीत सिंह ठाकुर	60
31	मेरी 'हम्पटा पास' की यात्रा	डॉ. स्नेहलता सिंह	66
32	व्यवहार से प्रमाणन (सर्टिफिकेशन) तक	दीपक मिश्रा	68
33	साधारण पुरुष का असाधारण प्रेम (कविता)	मेघा राठी	70



ऊर्जा संरक्षण : भारतीय रेल द्वारा की गई पहल

ऊर्जा संरक्षण एक अत्यावश्यक और आधुनिक आवश्यकता है। जिस तरह कोयला और तेल तेजी से घट रहे हैं, वहीं गैर-नवीकरणीय संसाधन बढ़ती वैश्विक मांग को पूरा करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। ऊर्जा संरक्षण से पर्यावरणीय क्षति कम होती है, लागत घटती है और यह सतत विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है। ऊर्जा संरक्षण, ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करता है और राष्ट्र की आत्मनिर्भरता बढ़ाने में सहायक होता है। हालांकि ऊर्जा संरक्षण एक दिन में हासिल नहीं किया जा सकता, लेकिन इसे हमारे व्यवहार, दैनिक जीवन और परिवेश का हिस्सा बनाना होगा और अंततः यह हमारी आदत बन जानी चाहिए, जिससे ऊर्जा का प्रयोग प्रभावी ढंग से किया जा सके।



ऊर्जा संरक्षण की अवधारणा :

ऊर्जा संरक्षण का अर्थ है, अपव्यय से बचना। लेकिन, अधिक सटीक रूप से इसका अर्थ है, उपलब्ध ऊर्जा संसाधनों का इष्टतम उपयोग करके कम ऊर्जा खपत के साथ उच्च दक्षता प्राप्त करना। यह ऊर्जा दक्षता और व्यवहार परिवर्तन दोनों का संयोजन है। वैकल्पिक ऊर्जा का सबसे सस्ता रूप, ऊर्जा की बचत करना है। संक्षेप में अगर हम कहें तो, ऊर्जा संरक्षण में किसी भी प्रकार का त्याग शामिल नहीं है। बल्कि इसका तात्पर्य ऊष्मागतिकी (थर्मोडाइनामिक्स)

के नियमों के अनुरूप ऊर्जा का अधिक तर्कसंगत, कुशल एवं प्रभावी ढंग से उपयोग करना है। ऊर्जा संरक्षण को “अदृश्य ऊर्जा स्रोत” भी कहा जाता है। क्योंकि, बचाई गई ऊर्जा सबसे स्वच्छ ऊर्जा होती है।

‘ऊर्जा संरक्षण’ आज की आवश्यकता क्यों है?

ऊर्जा संरक्षण आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता बन गई है। तीव्र औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के साथ ही ऊर्जा की मांग दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। हालांकि हमारे ऊर्जा संसाधन, विशेष रूप से जीवाश्म ईंधन (fossil fuel) सीमित हैं और तेजी से समाप्त हो रहे हैं। इसलिए, यदि हम ऊर्जा संरक्षण के लिए तत्काल कदम नहीं उठाते हैं, तो हमें शीघ्र ही गंभीर संकट का सामना करना पड़ेगा, जो हमारे देश की प्रगति में बाधा डाल सकता है और पर्यावरण को भी क्षति पहुँचा सकता है। भारत जैसे विकासशील देशों में ऊर्जा संरक्षण, गरीबी उन्मूलन और सामाजिक विकास से भी जुड़ा हुआ है।

■ **संसाधनों का क्षय** : गैर-नवीकरणीय संसाधन, जैसे कोयला, प्राकृतिक गैस और पेट्रोलियम आदि सीमित हैं और तेजी से समाप्त हो रहे हैं। यदि वर्तमान खपत-दर जारी रही, तो भावी पीढ़ियों के लिए ये संसाधन पर्याप्त नहीं रह पाएंगे। इससे



ऊर्जा आयात पर निर्भरता भी बढ़ेगी।

- **पर्यावरण संरक्षण** : ऊर्जा की अधिक खपत से कार्बन उत्सर्जन, वायु प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन में वृद्धि होती है। ऊर्जा संरक्षण से पर्यावरण पर पड़ने वाले इस दुष्प्रभाव में प्रत्यक्ष रूप से सुधार होता है। यह वैश्विक तापमान वृद्धि को सीमित करने में भी सहायक है।
- **आर्थिक प्रभाव** : ऊर्जा संरक्षण से घरों और उद्योगों का बिजली बिल कम होता है और साथ ही आयातित ईंधन पर विदेशी मुद्रा की बचत भी होती है। ऊर्जा दक्षता से उद्योगों की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता बढ़ती है।
- **वहनीयता** : सतत विकास की मांग है कि, भविष्य की पीढ़ियों की जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता ना करते हुए, हम अपनी वर्तमान की जरूरतों को पूरा करें। संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) में भी ऊर्जा संरक्षण को प्राथमिकता दी गई है।

ऊर्जा संरक्षण के सरल उपाय

- सरल दैनिक आदतों के माध्यम से ऊर्जा की बचत संभव है। व्यक्तिगत स्तर पर किया गया प्रत्येक छोटा प्रयास, सामूहिक रूप से, बड़े परिणाम ला सकता है।
- **प्रकाश व्यवस्था एवं उपकरण** : आवश्यकता ना हो तो पंखे, बल्ब और ए.सी (AC) बंद कर



दें। तापदीप्त (Incandescent) बल्ब के स्थान पर एल.ई.डी (LED) बल्बों का प्रयोग करें। दिन के समय प्राकृतिक प्रकाश का अधिकतम उपयोग करें।

- **दैनिक आदतें** : विद्युत खपत को कम करने के लिए प्राकृतिक सौर ऊर्जा का उपयोग करें। मोबाइल चार्जर, टीवी और अन्य उपकरणों को स्टैंडबाय मोड में न छोड़ें।
- **परिवहन** : सड़क पर वाहनों की संख्या कम करने के लिए सार्वजनिक परिवहन जैसे बस, रेल आदि का प्रयोग करें। कार-पूलिंग और साइकिल जैसे विकल्प अपनाकर ईंधन की बचत की जा सकती है।
- **उपकरण उन्नयन** : विद्युत खपत को काफी हद तक कम करने के लिए पुराने उपकरणों को ऊर्जा-कुशल (जैसे 5-स्टार रेटिंग वाले) उपकरणों से बदलें। स्मार्ट मीटर और स्मार्ट होम तकनीक, ऊर्जा खपत को नियंत्रित करने में सहायक हैं।

ऊर्जा संरक्षण के लिए भारतीय रेल द्वारा उठाए गए कदम

भारतीय रेल, वर्ष 2030 तक, 100% विद्युतीकरण, रेल इंजनों/रेलगाड़ियों में पुनर्योजी ब्रेकिंग, एंड ऑन जेनेरेशन (EOG) से हेड ऑन जेनेरेशन (HOG) में बदलाव पर ध्यान केंद्रित करते हुए, नेट-जीरो कार्बन उत्सर्जन हासिल करने के लिए ऊर्जा-संरक्षण के क्षेत्र में आक्रामक रूप से प्रयासरत है। प्रमुख उपायों में, दक्षता बढ़ाने के लिए एल.ई.डी लाइटिंग, स्टार-रेटेड उपकरण, सौर पैनल और स्मार्ट मॉनीटरिंग का उपयोग शामिल है। भारतीय रेल विश्व के सबसे बड़े रेलवे नेटवर्क में से एक होने के कारण, ऊर्जा संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

भारतीय रेल द्वारा ऊर्जा संरक्षण के क्षेत्र में की गई प्रमुख पहलें

- **पुनर्योजी ब्रेकिंग** : इलेक्ट्रिक लोकोमोटिव (WAG-9, WAP-5) और 3-फेज EMU/MEMU/



वंदे भारत ट्रेनें पुनर्योजी ब्रेकिंग का उपयोग करती हैं, जो ऊर्जा को ग्रिड वापस भेजती है, जिससे 20-30% तक ऊर्जा की बचत होती है। यह तकनीक हरित परिवहन को बढ़ावा देती है।

- **हेड ऑन जेनरेशन (HOG) प्रौद्योगिकी** : एंड ऑन जेनरेशन (EOG) से हेड ऑन जेनरेशन (HOG) में परिवर्तन करने से बिजली से चलने वाली कारों में डीजल की खपत में कमी होती है, जिससे ध्वनि और वायु प्रदूषण में सुधार होता है। इससे यात्रियों के लिए भी आरामदायक और शांत यात्रा संभव हो पाती है।
- **विद्युतीकरण और आधुनिकीकरण** : रेल मार्गों का तेजी से विद्युतीकरण करने के साथ ही ऊर्जा-कुशल 3-फेज विद्युत रेल इंजनों को अपनाया जा रहा है। विद्युतीकरण से परिचालन लागत में उल्लेखनीय कमी आती है।
- **नवीकरणीय ऊर्जा** : स्टेशनों और इमारतों की छतों पर सौर पैनलों की व्यापक स्थापना की जा रही है, जिससे विद्युत ऊर्जा की खपत में कमी होती है। कुछ स्टेशन सौर ऊर्जा से आत्मनिर्भर बनने की दिशा में अग्रसर हैं।
- **ऊर्जा-कुशल उपकरण** : स्टेशनों, सेवा भवनों और सवारी डिब्बों में 100% एल.ई.डी (LED) प्रकाश व्यवस्था, साथ ही बीएलडीसी (BLDC) मोटर वाले पंखे लगाए जा रहे हैं। इससे 40-50% तक बिजली की बचत संभव है।
- **डीजल संरक्षण** : डीजल इंजनों में सहायक विद्युत इकाइयों (APU) का प्रयोग किया जा रहा है, जो निष्क्रिय समय के दौरान, इंजन को बंद कर देता है और साथ ही 5% जैव-डीजल मिश्रण का उपयोग किया जा रहा है। यह कार्बन फुटप्रिंट को कम करने में सहायक है।
- **निगरानी और लेखापरीक्षा** : नियमित ऊर्जा ऑडिट और खपत की निगरानी के लिए, स्मार्ट ऊर्जा मीटरों का उपयोग किया जा रहा है। डेटा आधारित निर्णय, ऊर्जा-दक्षता को बढ़ाने में मदद करते हैं।



- **हरित पहल** : ग्रीनको (GreenCo) रेटिंग को अपनाया जा रहा है और कुछ मामलों में सीएनजी (CNG) से चलने वाली डीईएमयू (DEMU) ट्रेनों की ओर रुख किया जा रहा है। ग्रीन स्टेशन और ग्रीन बिल्डिंग अवधारणा को भी बढ़ावा दिया जा रहा है।

भारतीय रेल, सतत विकास के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए ऊर्जा-कुशल और पर्यावरण-अनुकूल स्टेशन भवनों पर भी ध्यान केंद्रित कर रही है। वर्षा जल संचयन, कचरा प्रबंधन और हरित क्षेत्र विकास भी रेलवे की प्राथमिकताओं में शामिल हैं।

निष्कर्ष

ऊर्जा-संरक्षण केवल संसाधनों को बचाने तक ही सीमित नहीं है; यह जीवन ग्रह की रक्षा करने और आने वाली पीढ़ियों के लिए, एक स्थिर जीवन सुनिश्चित करने की दिशा में अत्यंत ही महत्वपूर्ण कदम है। हर छोटा कदम मायने रखता है, इसलिए हर व्यक्ति की यह जिम्मेदारी होनी चाहिए कि वह ऊर्जा का संरक्षण करे और एक स्थायी, हरित और सुरक्षित भविष्य बनाने में अपना योगदान दे। आज बचाई गई ऊर्जा ही कल की सबसे बड़ी पूंजी होगी।

सोनाली सुधस्मिता त्रिपाठी

सामान्य सहायक/राजभाषा विभाग, पूर्व तट रेलवे, मुख्यालय



नाम का बहुत ही महत्त्व है



शे क्सपियर जी कृपया मुझे माफ कर दें, क्योंकि मैं आपसे बिल्कुल सहमत नहीं हूँ। हो सकता है, चाँदनी भरी रात में अपनी बॉल्कनी से झाँकती किसी कमसिन और इश्क के सागर में डूबी जूलियट के लिए नाम का कोई महत्त्व न हो। लेकिन कैरियर के प्रति समर्पित मुझ जैसे नौकरशाह और ऊपर से एच आर अधिकारी के लिए नाम का बहुत ही महत्त्व है।

खैर, मेरा नाम वी जी भूमा है और इसी नाम की वजह से मेरी जिंदगी में कई रोचक घटनाएँ घटी हैं। दरअसल, हम अपना नाम जैसा लिखते हैं, वहीं से किस्सों की शुरुआत होती है। वैसे भारत के जिस भूभाग में मैं रहती हूँ, जहाँ 'सरनेम' लिखने का रोग अधिक व्यापक नहीं है, आपके नाम का पहला अक्षर, जो आपके पिताजी के नाम का पहला अक्षर भी होता है, जिससे आपके वंश का पता चल जाता है। यदि बेटी की शादी हो जाती है, तो पति के नाम का वही पहला अक्षर पत्नी के नाम का पहला अक्षर बन जाता है। लेकिन जब मैंने इस परंपरा का विरोध किया तो कई लोग मुझे अनेक नामों से बुलाने लगे, जिसमें मेरे असली नाम का अस्तित्व मिट सा गया।

मेरे पिता जी का नाम अंग्रेजी के अक्षर 'जी' से शुरु होता है। उन्होंने अपने वंश का नाम 'वी', यानि 'वीरवल्ली' भी जोड़ने का निर्णय लिया। और इस प्रकार मेरे रिकार्ड्स के हिसाब से मेरा नाम बना 'वी जी भूमा'। मुझे जब भी किसी को अपना नाम नोट कराना होता था तो मैं उन्हें सिर्फ साफ-साफ बताने के लिए, 'वी जी', कह देती थी, 'वी जी', यानि श्वेरी गुडश। मुझे बार-बार सिर्फ 'वेरी गुड' ही क्यों सुनना है, 'आउटस्टैंडिंग' क्यों नहीं? कोई भी नौकरशाह अपनी गोपनीय रिपोर्ट के बारे में सोचना कभी भी बंद नहीं कर सकता। भगवान ही उन्हें बचाएं।

खैर इस बात पर विराम चिह्न लगाते हुए मैंने कलमी नाम 'भूमा वीरवल्ली' लिखना शुरु किया। मैं तमिलनाडु की

रहने वाली हूँ और तमिल विरासत का सम्मान करती हूँ और सुब्रह्मण्य भारती एवं कन्नदासन जी की कविताओं को खूब पसंद करती हूँ। लेकिन यहाँ पर

भी मेरा नाम एक प्रकार से मेरे लिए चुनौती बन गया। जाहिर सी बात है कि मेरा कलमी नाम आंध्र प्रदेश के एक गाँव के नाम से मेल खाता है। तेलुगु भाषी मेरे दोस्त बोलते हैं कि मैं मूलतः तेलुगु क्षेत्र से ताल्लुक रखती हूँ, न कि कट्टर तमिल, जिसका मैं दावा करती रहती हूँ। तमिल भाषी मेरे दोस्त कहते हैं कि मेरे नाम से उन्हें प्रेरणा मिलती है 'वीरवल्ली, यानि साहसी वल्ली, जो भगवान 'मुरुगन' की पत्नी हैं। बेचारे मेरे दोस्त, मेरे साथ भाषाई संबंध का दावा करके किस दलदल में फँस रहे हैं, खुद नहीं जानते।

खैर.. छोड़िए, मैंने अपने नाम के साथ जुड़े इस जगह बनाम देवी वाले इतिहास को खत्म करने का फैसला किया। इसलिए जब आंध्र प्रदेश में मेरी पोस्टिंग हुई, तब मैंने मन की तलहटी में दबी इसी उम्मीद के साथ सोचा कि मैं वह गाँव देखने जाऊँ, जहाँ कोई मेरा पुराना विस्मृत हुआ, ऐसा अमीर व ताकतवर रिश्तेदार सैकड़ों एकड़ की जमीन, जो बहुत पहले ही मेरे नाम कर दी गई हो, मुझे दिल से सौंपने खड़ा हो। मैं भी उदार हो जाती और उन्हें संतुष्ट करते हुए तेलुगु जड़ों को सहर्ष अपना लेती। आखिर तेलुगु भाषी भी तो भारती की कविताएँ पसंद करते होंगे, है न?

भारत की शेष गाँवों की तरह किसी धूल भरे, ठेठ गाँव से गुजरते हुए मुझे एहसास हुआ कि मैं भाषा और कविताओं के प्रति लगाव दोनों की वजह से भारती की ही होकर रह जाऊँ, शायद भारती भी यही चाहते थे। बाद में जब मुझे पता चला कि दुनिया में 'वीरवल्लीस' का 'फेसबुक पेज' भी है। मुझे लगा कि मैं बेहिचक उस समूह से जुड़ सकती हूँ।



मेरे कैरियर के शुरुआती दौर में एक साहसपूर्ण कार्य की वजह से दक्षिण भारत के बाहर भी मेरे नाम का दावा होने लगा। एक सिविल सर्वेंट के तौर पर प्रोबेशनरी ट्रेनिंग के दौरान 'एक अत्यंत उत्साही प्रोबेशनर' होने के नाते, मैं और मेरा एक बैचमेट एक ऐसे टीम के सदस्य बन गए, जिसने भारत के पश्चिमी तट से हो रही 278 किलोग्राम सोने की तस्करी को पकड़ा था। हमारे इस 'ऑपरेशन' की कहानी ने एक और नई मुसीबत खड़ा कर दी। स्थानीय अखबारों ने हमारी तस्वीरें अपने पहले पन्ने पर छापकर इस समाचार का खूब फायदा उठाया। उन्हें गर्व था कि एक 'वेरावल की लड़की' - पड़ोसी वेरावल की एक लड़की - इस साहसपूर्ण किस्से की हिस्सा थी। एक नई जमीन से मेरे नाम 'वीरवल्लि' पर दावा शुरु हो गया।

मेरे नाम की यह व्यापकता भारतीय सीमाओं को पार कर ऑस्ट्रेलिया की लाइब्रेरी में भी पहुँच गई। लंबी छुट्टी के दौरान किसी समय मैं मेलबॉर्न के स्थानीय पुस्तकालय से लगातार पुस्तकें उधार पर लिया करती थी। मुझे अपने नाम के अलावा किसी और

नाम से पुकारे जाने की आदत नहीं थी। इसलिए मुझे यह समझने में थोड़ा समय लगा कि वे मुझे ही ढूँढ रहे थे, जब उन्होंने 'मिस वीरवल्लि' नाम से पुकारा। जब मैंने सारी औपचारिकताएँ पूरी कर लीं तो एक गोरा चिट्ठा नौजवान झिझकते हुए मेरे पास आया और पूछा कि 'क्या आपका कोई इटैलियन कनेक्शन है।' मुझे नहीं पता था कि उसे कैसे समझाऊँ कि मेरा नाम मैकियावेली से मिलता-जुलता हो सकता है, लेकिन मेरा इटैलियन कनेक्शन बस इतना ही था।

सिर्फ सरनेम ने मेरी जिंदगी को रोचक नहीं बनाया, बल्कि मेरे नाम ने भी बहुत रोचक बनाया। ड्यूटी पर रिपोर्ट करने के पहले दिन, नोटिस बोर्ड या की-बोर्ड

पर कहीं भी मेरा नाम नहीं था। परेशान होकर, मैं कोऑर्डिनेटर के पास गई, जिसके आस-पास ऑफिसर ट्रेनीज का पूरा बैच इंतजार कर रहा था। जब वहाँ आवाज दी जा रही थी, तो 'सिर्फ एक व्यक्ति उपस्थित नहीं हो पा रहा था। आवाज लगाई जा रही थी 'भीमा कहाँ है?' मैंने अपना हाथ उठाया, और पूरा क्लास जोर से हँस पड़ा। मेरे नाम के अंग्रेजी स्पेलिंग में 'व' को उन्होंने 'म' के रूप में लिख लिया था। और, महाभारत के हट्टे-कट्टे राजकुमार की जगह, मुश्किल से 5 फुट 4 इंच ऊँचाई और 40 किलो की वजन वाली मैं खड़ी हो गई। नाम की वजह से इससे बड़ा और उपहास क्या हो सकता था?



लेकिन कभी-कभी मेरा नाम मेरे बहुत काम आया। सेंट्रल तमिलनाडु में एक मंदिर है, जिसकी पौराणिक कथा कुछ इस प्रकार है। देवी लक्ष्मी का जन्म उस गाँव में किसी संत के घर पर हुआ था। देवी बहुत छोटी थीं, जब भगवान नारायण उनसे शादी करने आए। संत ने भगवान को समझाने की कोशिश की कि कन्या अभी अबोध है, और उसे खाने में नमक डालने का

भी शऊर नहीं है। भगवान ने वचन दिया कि 'मैं उसे अपनी दिव्य पत्नी के रूप में स्वीकार करूँगा और स्वयं कभी नमक का पान नहीं करूँगा।' इसलिए आज भी, मंदिर में प्रसाद बिना नमक के बनाया जाता है।

जब भी मेरी सास मेरे स्वादहीन खाने की शिकायत करती हैं तो मैं हमेशा बोलती हूँ कि 'यह मेरी गलती नहीं, मंदिर की गलती है और मंदिर में स्थित देवी का नाम 'भूमा देवी' है।

क्या आप अभी भी कहेंगे कि 'नाम में क्या रखा है?'

डॉ. वी. जी. भूमा

अपर सदस्य (मानव संसाधन), रेलवे बोर्ड



मिशन 2026 : हरित रेलवे के माध्यम से भारत की ऊर्जा क्रांति का ब्लूप्रिंट



वर्ष 2026 तक, भारत का ऊर्जा संरक्षण दृष्टिकोण 'बचत' से बदलकर 'इंटेलिजेंट ऑप्टिमाइजेशन' (सटीक प्रबंधन) पर केंद्रित हो गया है। इस परिवर्तन का सबसे बड़ा वाहक भारतीय रेल है, जो 2030 तक दुनिया का सबसे बड़ा नेट-जीरो कार्बन उत्सर्जक बनने की राह पर है। 2026 के तथ्यों और नवाचारों पर आधारित विस्तृत विवरण नीचे दिया गया है:-

1. 100% विद्युतीकरण का मील का पत्थर (लक्ष्य 2026)

वित्तीय वर्ष 2025-26 के अंत तक, भारतीय रेल अपने सभी ब्रॉड-गेज नेटवर्क के 100% विद्युतीकरण के लक्ष्य को पूर्णता प्रदान कर रहा है।

तथ्य : इस बदलाव से सालाना लगभग 3 अरब लीटर डीजल की खपत समाप्त हो रही है।

नवाचार : रेलवे अब 'ओपन एक्सेस' मॉडल के तहत सीधे सौर और पवन ऊर्जा उत्पादकों से बिजली

खरीद रहा है, जिससे ऊर्जा बिलों में 12,000 करोड़ रुपये से अधिक की बचत हो रही है।

2. 'हाइड्रोजन फॉर हेरिटेज' पहल

2026 में, भारत की पहली हाइड्रोजन रेलगाड़ी पायलट प्रोजेक्ट से निकलकर परिचालन में आ चुकी है।

तकनीक : ये रेलगाड़ियां 'फ्यूल सेल' का उपयोग करती हैं जो हाइड्रोजन और ऑक्सीजन को बिजली में बदलते हैं, जिसमें उत्सर्जन के रूप में केवल पानी निकलता है।

प्रभाव : कालका-शिमला और नीलगिरी जैसे संवेदनशील पारिस्थितिक क्षेत्रों में कार्बन फुटप्रिंट शून्य हो गया है। यह भारत की ऊर्जा आत्मनिर्भरता की दिशा में एक बड़ा कदम है।

3. रिजेनेरेटिव ब्रेकिंग 2.0

2026 के सबसे प्रभावशाली नवाचारों में से एक है- 3-फेज इलेक्ट्रिक लोकोमोटिव और वंदे भारत ट्रेनों में 'रिजेनेरेटिव ब्रेकिंग' का व्यापक उपयोग।



प्रक्रिया : जब ट्रेन ब्रेक लगाती है, तो मोटर एक जनरेटर की तरह काम करती है और गतिज ऊर्जा को बिजली में बदल देती है।

बचत : यह तकनीक खपत की गई ऊर्जा का 15% से 20% हिस्सा वापस ओवरहेड लाइनों (OHE) में भेज देती है। 2026 तक, इस तकनीक से राष्ट्रीय ग्रिड में सालाना 2 अरब यूनिट (kWh) बिजली की बचत का अनुमान है।

4. AI-आधारित ऊर्जा प्रबंधन प्रणाली (AEMS)

2026 तक, नई दिल्ली और सीएसएमटी (मुंबई) जैसे प्रमुख स्टेशनों पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का उपयोग ऊर्जा प्रबंधन के लिए किया जा रहा है।

स्मार्ट लाइटिंग : सेंसर यात्रियों की संख्या के आधार पर लाइटों की चमक को नियंत्रित करते हैं।

AC अनुकूलन : ट्रेनों के भीतर AI-कंट्रोलर बाहर के तापमान और यात्रियों की भीड़ के आधार पर कूलिंग को एडजस्ट करते हैं, जिससे ऊर्जा खपत 12% कम हो गई है।

5. वेस्ट-टू-एनर्जी (W2E) संयंत्र

रेलवे स्टेशनों और कॉलोनिनों से निकलने वाले कचरे को ऊर्जा में बदलने के लिए 2026 तक बायो-मिथेनेशन प्लांट अनिवार्य कर दिए गए हैं। यह कचरा अब बिजली और बेस किचन के लिए खाना पकाने की गैस में परिवर्तित हो रहा है।

निष्कर्ष :

2026 का यह मॉडल सिद्ध करता है कि भारतीय रेल केवल यात्रियों का वाहक नहीं, बल्कि एक 'चलता-फिरता ग्रीन पावर ग्रिड' बन गया है। हाइड्रोजन, सौर ऊर्जा और AI का यह एकीकरण भारत को वैश्विक ऊर्जा मानचित्र पर एक अग्रणी शक्ति के रूप में स्थापित कर रहा है।

मनीष कटारा

कनिष्ठ अभियंता/डी एंड डी, उत्तर पश्चिम रेलवे/ मुख्यालय

ऊर्जा बचेगी, भविष्य सजेगा



ऊर्जा संरक्षण करना ही मुख्य विचारधारा है, इसके बिना भविष्य का कोई उजियारा नहीं, बस अधियारा है।

प्रकृति ने दिया हमें अनमोल उपहार, पर मानव ने ही इसे डुबोया, फिर खुद को ही तारा है।

हर बल्ब, हर बूँद, हर कण में जीवन बसता है, पर फिजूलखर्ची से ये खजाना चुपचाप लुटता है। हम सबका यही कहना है, यही संकल्प हमारा है, ऊर्जा को व्यर्थ बहाना नहीं, यही समय का इशारा है।

यदि आज न संभले, न समझे इसकी कीमत, तो वो दिन दूर नहीं जब मिट जाएगी रोशनी की हैसियत।

आओ बनें हम ऊर्जा के सच्चे कद्रदान, हर घर, हर मन में जगाएँ संरक्षण का ज्ञान।

आज बचाएँगे तो कल बचेगा संसार, ऊर्जा है जीवन की डोर, इसका रखो तुम ध्यान। संकल्प यही दोहराना है, सबको यह बताना है- ऊर्जा को बचाना है, और व्यर्थ नहीं बहाना है।

(हरजीत राम सैनी)

मुख्य कार्यालय अधीक्षक/सिग्नल एवं दूरसंचार विभाग
मुख्यालय, उत्तर पश्चिम रेलवे जयपुर



साड़ी पराजय

सु बह के साढ़े सात बज चुके थे। ट्यूशन के सभी बच्चे आ चुके थे, लेकिन संतोषी का अभी तक कोई अता-पता नहीं था। संतोषी कभी लेट नहीं होती। लेट होती भी तो उसे बहुत मलाल हो जाता। वह बार-बार सॉरी भी कहती। रुक्मिणी अब तक कई बार उसे याद कर चुकी थी। उसके आने से ट्यूशन में कुछ अलग ही रौनक हो जाती। रुक्मिणी का मन बार-बार संतोषी पर ही आकर रुक जा रहा था। '... आज क्या बात हुई होगी? ...पता नहीं, क्यों नहीं आई?' रुक्मिणी को बच्चों से बहुत लगाव था। इस लगाव की वजह से ही वह मुहल्ले के गरीब बच्चों को मुफ्त में ट्यूशन पढ़ाती थी। संतोषी से उसे विशेष लगाव था। संतोषी को वह टूटकर चाहती थी। क्योंकि संतोषी थी ही ऐसी कि जिससे भी वह दो-चार बार बात कर ले, वह उसका मुरीद हो जाता।

हल्का सांवला रंग, उम्र यहीं कहीं 15-16 की, मोहक छवि, बड़ी-बड़ी आँखें, कमर तक लटके घने व

काले घुँघराले बाल, छरहरा शरीर, शरीर में गजब की फुर्ती, खूब बातूनी, कमाल की हाजिर जवाबी, कुशाग्र और संघर्ष करने की अपार जज्बे से लबरेज, संतोषी किसको प्यारी नहीं लगेगी?

दरअसल संतोषी की माँ तुलसी और उसके पिता भोलू दोनों ही गाँव से काम-धंधे की तलाश में आज से बीसों बरस पहले शहर आ गए थे और उसी मुहल्ले में रहते थे, जिसमें रुक्मिणी और शर्मा जी रहते थे। संतोषी के माँ-बाप कम पढ़े-लिखे थे। पर शहर आने के बाद पढ़ाई का मतलब खूब समझने लगे थे। हालाँकि संतोषी के रूप में उन्हें संतान सुख शादी के सात-आठ साल बाद मिला था।

भोलू किसी ठेकेदार के यहाँ काम करता था। वह भी बहुत मेहनती और व्यवहार कुशल था। तुलसी भी लोगों के घरों में झाड़ू-बर्तन करके कुछ खर्च निकाल लेती थी। तुलसी ने सबसे पहले रुक्मिणी के यहाँ काम करना शुरू किया था। उसे यहाँ पैसे के साथ-साथ





प्यार भी खूब मिलता था। उन दिनों शर्मा जी सिंगापुर में नौकरी करते थे। तब तुलसी ही रुक्मिणी का सहारा थी। उनके दो बच्चों की देखभाल और घर के सभी तरह के कामों में हाथ बंटाने-बंटाने तुलसी कब रुक्मिणी की सखी बन गई, पता ही नहीं चला। देखते-देखते शर्मा जी के बच्चे पढ़-लिख कर नौकरी में चले गए थे। शर्मा जी भी सिंगापुर से वापस आ गए थे। क्योंकि रुक्मिणी पिछले कुछ वर्षों से लंग कैंसर से जूझ रही थी। दवाइयों की वजह से उसके चलने-फिरने की ताकत कम हो गई थी। ज्यादातर, वह खटिए पर ही पड़ी रहती थी।

लेकिन बच्चों से उसे बहुत लगाव था, इसलिए बच्चों के खातिर ही वह खटिए से उठकर उनमें घुल-मिल जाती। उनसे हँसी-ठिठोली करती, उनकी प्यारी बातों का रसपान करती। ट्यूशन पढ़ा लेने के बाद वह दिन भर के लिए तरो-ताजा हो जाती थी। उनके चार मंजिले मकान में बच्चों की चहक गूँजने से प्रसन्नता की एक महक घुल जाती। रुक्मिणी को इन सब कामों में शर्मा जी एवं तुलसी का भरपूर सहयोग मिलता था। रुक्मिणी को संतोषी से अगाध लगाव था। उनके लिए संतोषी नौकरानी की बेटा नहीं, बल्कि अपनी बेटा सरीखी हो चुकी थी।

रुक्मिणी भुनभुना ही रही थी, तभी सामने से शर्मा जी हाथ में चाय का प्याला लिए आ गए। रुक्मिणी की संतोषी के प्रति भाव-विह्वलता फूट पड़ी और शर्मा जी से कहने लगी “माँ से झगड़ लिया होगा। यह तो उसकी रोज की आदत सी हो गई है। माँ को तो वह बिल्कुल कुछ समझती ही नहीं। धीरे-धीरे बाधिन होती जा रही है।”

शर्मा जी रुक्मिणी और संतोषी के बीच के अनुबंध से बखूबी वाकिफ थे, उन्होंने प्यार से कहा, “मास्टरनी जी! वह बच्ची है, किसी कारणवश आलस कर गई होगी। ...आती ही होगी। और हाँ! सुना है, आजकल वह स्कूल की टीम की ओर से फुटबाल भी खेलने लगी है। इसलिए शायद थक भी गई हो, थोड़ी देर ही सही पर वह आएगी जरूर।”

“अजी आप नहीं जानते, फुटबाल तो वह रोज ही खेलती है। फिर आज इतनी देर क्यों?”

चाय का प्याला आगे बढ़ाते हुए शर्मा जी ने कहा “तुम चाय पी लो...। मैं किसी को भेजता हूँ। वह संतोषी को बुला लाएगा।”

शर्मा जी किसी को भेजते, इससे पहले ही संतोषी आ गई। उसका चेहरा मुरझाया हुआ था। ट्यूशन के सभी बच्चे जा चुके थे। रुक्मिणी उसे देखते ही समझ गई कि आज वह फिर माँ या बाप किसी न किसी से झगड़ कर आई है।

शर्मा जी उसके लिए दूध ले आए और फिर प्यार से पूछा, “संतोषी! क्या हुआ बेटा? आज इतनी देर क्यों लगा दी...?” संतोषी मुँह लटाकाए रही।

शर्मा जी को बनावटी झिड़की देते हुए रुक्मिणी ने कहा, “अजी! आप भी न... अनावश्यक सवाल ज्यादा करते हैं। संतोषी! चलो..., दूध पी लो।” फिर भी संतोषी टस से मस न हुई।

रुक्मिणी ने पूछा, ‘क्या बात है? माँ से झगड़ा कर लिया?’

“मैंने कहाँ किया...। माँ ही शुरू कर देती है? सुबह उठते ही, हो जाती है। पंखा बंद करो... यह करो... वह करो। न जाने क्या-क्या बोलने लग जाती है?”

“बाबा! आप ही बताओ...। रोज देर रात तक पढ़ती हूँ। फुटबाल खेलकर भी थकी रहती हूँ। दुनिया भर का होमवर्क करना पड़ता है। टीचर-प्रिंसिपल मैडम और आप लोगों की उम्मीदें मुझसे जुड़ी हुई हैं। किताबें और अपना सामान सब ठीक से रखना भूल जाती हूँ। माँ भी तो ये सब कर सकती है। मैं जानबूझ कर थोड़े ही करती हूँ। कोई समझता ही नहीं। आखिर मेरे पर भी कई तरह के प्रेशर हैं। दादी बताओ न मैं क्या करूँ” कहते हुए संतोषी, रुक्मिणी से लिपट कर फफक उठी। रुक्मिणी भी भावुक हो उठी। किसी तरह से संतोषी को उसने शांत किया। उसे ढाढ़स बंधाया।

शर्मा जी ने कहा, “बस इतनी सी बात...? मैं इसका

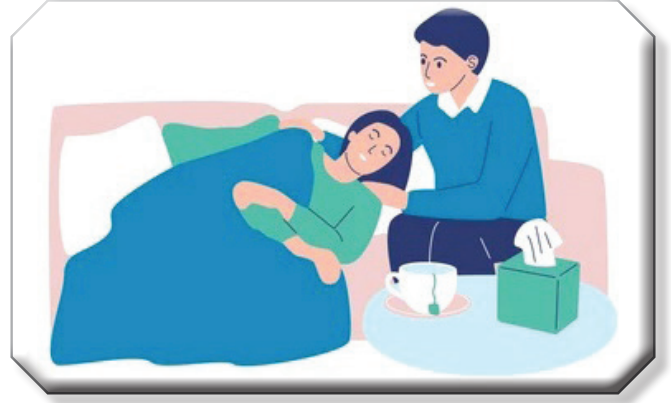


हल निकालता हूँ। ...चलो दूध पी लो।“ संतोषी उठ खड़ी हुई और दूध का गिलास उठाते हुए बोली, ‘बाबा! आप माँ को समझाओ न...। माँ किसी की नहीं सुनती है।’ शर्मा जी ने बनावटी गुस्सा दिखाते हुए कहा “आने दो तुलसी को... आज उसे समझाऊँगा नहीं, पीटूँगा।” संतोषी के चेहरे पर स्मित मुस्कान तैर गई। वह दूध का गिलास टेबुल पर रख कर खुश होकर रुक्मिणी से लिपट गई, “बाबा झूठ बोल रहे हैं, वे माँ को कुछ नहीं कहेंगे, मुझे पता है।” धीरे-धीरे संतोषी और रुक्मिणी सामान्य हो गईं और ढेर सारी बातें कीं।

शर्माजी उसे समझा रहे थे, “पढ़ाई के साथ-साथ खेलना भी जरूरी है। खेलने या व्यायाम करने से शारीरिक व मानसिक संतुलन बना रहता है। इससे हमेशा स्वयं को चुस्त-दुरुस्त पाओगी। इससे पढ़ाई का तनाव भी कम होगा।” कुछ देर रुक्मिणी और शर्मा जी के पास बिताकर संतोषी उनका आशीर्वाद लेते हुए स्कूल चली गईं।

लेकिन दो-चार दिन बाद ही संतोषी फिर से रोनी सूरत बनाए आ गईं। भोलू और तुलसी दोनों को डर था कि कहीं उनकी बेटी फुटबाल की वजह से पढ़ाई से भटक न जाए। क्योंकि वे सोचते थे कि फुटबाल से तो संतोषी का कैरियर नहीं बनने वाला है। फुटबाल तो केवल मनोरंजन का एक साधन मात्र है। बेटी को राष्ट्रीय अथवा अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी तो हमें बनाना नहीं है। तो फिर इसमें बेवजह समय क्यों बर्बाद करना? लेकिन संतोषी शर्मा जी एवं रुक्मिणी को अपना आदर्श मानती थी। उनकी बातों को मन ही मन गुन लेती थी। वह सब कुछ करना चाहती थी, जो उसके कैरियर एवं व्यक्तित्व दोनों के लिए लाभदायक हो। असली टकराव की वजह माँ की दकियानूसी बातें थीं। शर्मा जी और रुक्मिणी के सामने आकर तुलसी की सारी दलीलें हवा हो जाती थीं। चाहे वह उनके प्रति सम्मान के कारण हो या फिर अपनी अज्ञानता के कारण। तुलसी को सिर हिलाकर “जी! सर” अथवा “जी! मैडम” कहना ही पड़ता था।

एक बार स्कूल का वार्षिकोत्सव था। संतोषी ने



सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने के लिए अपना नाम दे दिया। तुलसी यह जानकर आग-बबूला हो उठी। संतोषी ने भी अनाप-शनाप कुछ बक कर शर्मा जी से शिकायत करने आ गईं। पीछे-पीछे उसकी माँ तुलसी भी आ गईं। तुलसी चाह रही थी कि उसकी बेटी स्कूल के बाद सीधे घर आ जाए। शाम को रिहर्सल आदि के लिए देर तक स्कूल में रुके, उसे कतई पसंद नहीं था। उसका भय था कि बेटी बड़ी हो रही है। उसका रूप-यौवन निखरने लगा है। वह किसी तरह की अनहोनी से बचना चाह रही थी। उसे अपनी गरीबी और क्षमता का बोध था। वह चाहती थी कि संतोषी उसके साथ समय बिताए और स्कूल की घटनाएँ उसे बताती रहे। वैसी भी संतोषी के सिवा उसका कोई और तो था नहीं। बेचारी माँ इसी के सहारे तो जी रही थी। रुक्मिणी और शर्मा जी ने यहाँ भी मोर्चा संभाला और फैसला संतोषी के पक्ष में गया। तुलसी की फिर हार हुई। संतोषी ने माँ को अँगूठा दिखाते हुए रुक्मिणी की आँचल से लिपट गईं और उसे बाहों में पकड़ कर गोल-गोल घूमने लगीं। रुक्मिणी “छोड़ मुझे... मैं गिर जाऊँगी” दोहराती रही। माहौल फिर खुशनुमा हो गया। संतोषी के स्कूल चले जाने के बाद तुलसी का ज्यादा समय रुक्मिणी और शर्मा जी की सेवा में ही बीतता था। इस दौरान तुलसी को रुक्मिणी बहुत कुछ समझाती थी। स्त्री शिक्षा से लेकर लड़कियों को आर्थिक रूप से सक्षम होने के फायदे गिनाती। शर्मा जी भी कभी-कभी अपने अनुभव व ज्ञान साझा कर देते। तुलसी का रोना यही था कि “मैं अपनी बेटी के साथ समय बिताने के



लिए तरसती हूँ। लेकिन वह समझती ही नहीं...। वह जमाने के साथ बहुत तेज दौड़ने का प्रयास कर रही है और हम ठहरे गरीब आदमी। कहीं कुछ हो गया तो हम कहीं के नहीं रहेंगे।”

इस पर रुक्मिणी समझाती “देखो तुलसी! संतोषी पढ़ने में बहुत अच्छी है। उसका हर विषय ठीक है। स्कूल के टीचर भी उसे बहुत पसंद करते हैं। वह हर चीज को ठीक से समझना चाहती है और सबसे आगे रहना चाहती है। यह सब ऐसे ही नहीं होता। तुम्हारी बेटी बहुत कुशाग्र बुद्धि वाली है। ऐसी संतान बड़े भाग्य से मिलती है। आगे चलकर उस पर पढ़ाई का दबाव और अधिक बढ़ने वाला है। ऐसे में ये छोटे-मोटे झगड़े या मनमुटाव उसे तोड़ सकते हैं। तुम उसे प्यार से समझाओ और उसे भी समझने की कोशिश करो, उसका साथ दो, उसका दोस्त बनो, उसे सहारा दो। उसे खूब पढ़ाओ। मुझे विश्वास है कि वह पढ़-लिखकर तुम्हारा नाम रोशन करेगी।” संतान की प्रशंसा सुन कर तुलसी भाव-विभोर हो गई। आँखें उसकी डबडबा गईं। “ठीक है, मैडम, आप लोगों के सिवा भला-बुरा बताने वाला मेरा कौन है।” कहते हुए अपने आँचल से आँखें पोंछने लगी।

एक दिन शाम को शर्मा जी से मिलने भोलू आया। भोलू शर्मा जी को पूजनीय संत मानता था। बताने लगा कि “बाबा! सरकार की ओर से मुझे प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत मकान मिलने वाला है।” शर्मा जी ने चहक कर कहा “अरे वाह!... कहाँ मिलेगा?”



“यहीं, शहर के बाहर, यहाँ से लगभग 40-45 किलोमीटर दूरी पर एक जगह पर बन रहा है। मैंने पिछले साल ही इसके लिए आवेदन दिया था। सुना है, मकान का काम पूरा होते ही मुख्यमंत्री जी के हाथों उनका वितरण कराया जाएगा।” “कंस्ट्रक्शन कब तक पूरा होगा?” शर्मा जी ने प्रश्न किया। “बाबा! यहीं कोई 2-3 महीनों में पूरा हो जाएगा। कुल 10-12 बहुमंजिली बिल्डिंगें बन रही हैं और उन्हीं में से 6वीं बिल्डिंग में मुझे 10वीं मंजिल पर एक बेडरूम का मकान मिलेगा। देखिए न यह पासबुक भी आ गया है।” कहते हुए भोलू ने पास बुक शर्मा जी की ओर आगे बढ़ा दिया।

कुछ ही महीनों बाद भोलू को आवास आर्बटित हो गया। पूरे परिवार में खुशी की लहर सी दौड़ गई। भोलू, तुलसी और संतोषी अपने इष्ट देवता शर्मा जी एवं रुक्मिणी जी का आशीर्वाद लेकर अपने नए मकान में चले गए। आवास मिलने की खुशी ने बीसियों वर्ष से अधिक के संबंधों को तोड़ने पर मजबूर कर दिया। शर्मा जी और रुक्मिणी असहाय सा हो गए। उन्हें आभास होने लगा कि रिश्ते भी कितने क्षणभंगुर सा हैं। एक आवास ने वर्षों से एक हुए परिवारों को झटके में चकनाचूर कर दिया। पखेरू की तरह सभी पक्षी उड़ सा गये। बच्चों को पढ़ाया-लिखाया, काबिल बनाया। वे अपने रास्ते निकल गये। तुलसी और भोलू को घर मिला। वे अपना रास्ता बांट लिए। अब तो रुक्मिणी और भी बीमार रहने लगी। लगभग बिस्तर पर ही पड़ी रहने लगी। शर्मा जी ने ही सारी सेवा सुश्रूषा की जिम्मेदारी उठा ली थी।

संतोषी ने दसवीं पास कर लिया था। उसे बार-बार बाबा और रुक्मिणी याद आ रहे थे। पर समयभाव के कारण कभी मिलने नहीं आ पाई। क्योंकि उसकी पढ़ाई चल रही थी। हाँ जब कभी फुरसत मिलता, फोन पर बात करती, स्कूल में अपनी सफलता के किस्से जरूर सुनाती। उसकी बातों से बाबा और रुक्मिणी बहुत खुश होते थे। रुक्मिणी संतोषी को बहुत याद करती रहती थी। जब भी उससे बातें करतीं, बात खत्म



ही नहीं होती। बाबा तो उसके लिए चलता-फिरता एंसाइक्लोपीडिया थे, हजारों प्रश्न लेकर वह उनसे बातें करती। वे भी उसके सारे प्रश्नों का जवाब देते रहते।

अचानक एक दिन रुक्मिणी जी चल बसीं। पूरे मुहल्ले में हाहाकार मच गया। जान-पहचान के सारे लोग जमा हो गए। भोलू और तुलसी को तो मानों सांप सूँघ गया हो। रोते-रोते संतोषी की आँखें सूज गई थीं। बाबा अब एक दम से अकेले से हो गए थे। आस-पास के बच्चे ही उनकी दुनिया बन गए थे। संतोषी के साथ जो बच्चे ट्यूशन पढ़ने आया करते थे, वे भी अब आगे की पढ़ाई अथवा काम-धंधे की तलाश में बाहर जा चुके थे। बाबा निःस्वार्थ भाव से लोगों को योग सिखाने, जरूरतमंदों की सहायता करने में अपना समय काट रहे थे।

संतोषी इस साल इंटर की परीक्षा देने वाली थी। भोलू एक दिन संतोषी को लेकर बाबा के पास आया। उन्हें देखकर बाबा की आँखें चमचमा उठीं। बाबा संतोषी को तरह-तरह के उपहार व किताबें देने लगे। वह भविष्य में क्या करना चाह रही है, यह जानने की कोशिश की। संतोषी ने बताया कि वह पायलट बनना चाहती है। बाबा ने उसे बहुत प्रोत्साहित किया और आशीर्वाद दिया।

मुहल्ले के कुछ लोग एक दिन शर्मा जी के घर आए। वे एक राम मंदिर का निर्माण कर रहे थे, जिसकी मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा के अवसर पर उन्हें यजमान बनाना चाह रहे थे। उन्होंने सहर्ष हामी भर दी। तय तिथि व मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठा हुआ। बात ही बात में मंदिर के ट्रस्टी ने प्रस्ताव रखा कि “बाबा! इस मंदिर प्रांगण में हम एक बड़ा सा मेडिटेशन हॉल बनाना चाह रहे हैं और इच्छा है कि आप हफ्ते में दो दिन यहाँ आकर लोगों को ध्यान, योग, मेडिटेशन सिखाएँ।” शर्मा जी ने “ठीक है” कह कर प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

कार्यक्रम समाप्त होने के बाद मंदिर ट्रस्ट के सभी सदस्य शर्मा जी के साथ बैठकर इधर-उधर की बातें कर रहे थे। तभी ट्रस्टी ने बताया कि “शर्मा साहब

आपको पता है, भोलू की बेटी ने आत्महत्या कर ली है।” शर्मा जी चौंक गए, “कौन?” “शर्मा जी वही भोलू की बेटी संतोषी, जो आपके यहाँ रहा करती थी। चार-पांच दिन पहले ही आत्महत्या कर ली।”

शर्मा जी को मानों लकवा मार गया। उनकी वाणी रुद्ध हो गई, दिमाग स्विच ऑफ हो गया। हाथ-पैर सुन्न सा हो गए। आँखें पथरा सी गईं। काफी देर बाद उनके मुँह से शब्द निकले “अभी हफ्ते भर पहले ही तो उससे मेरी बात हुई थी। ऐसा क्या हो गया कि संतोषी ने...?” इस खबर ने आस-पास खड़े लोगों की नजरों में एक क्षण में ही शर्मा जी को पूज्यनीय से दयनीय बना दिया था।

ट्रस्टी ने बताया कि “अखबार में निकला था कि माँ के साथ उसकी अनबन हो गई थी। इसलिए बॉल्कनी से नीचे कूद कर अपनी जान दे दी।” शर्मा जी के मन में कई सवालों के बवंडर उठने लगे। उनका चेहरा निस्तेज हो गया था। वे कुछ कहने के पक्ष में नहीं रह गए थे। उनके दिमाग में हजारों सवाल कौंधने लगे थे। वे कभी आज की जनरेशन की नासमझी पर तरस खा रहे थे, तो कभी अपनी खामियों को खंगाल रहे थे। कभी सामाजिक परिवेश में आए बदलावों को दोषी मान रहे थे तो कभी आज की पीढ़ी की नाजुकता पर सवाल खड़ा कर रहे थे। जब हम विपरीत परिस्थितियों से लड़ना नहीं सीख पाएंगे तो फिर हमारी शिक्षा का क्या अर्थ है? छोटी-छोटी बातों पर आत्महत्या करने को जायज कैसे ठहराया जा सकता है? इसमें दोष किसका है, उनके माँ-पिता का या स्कूल-कालेज का या समाज या फिर बच्चों का? लोगों को व्यायाम सिखाने और हमेशा चुस्त-दुरुस्त रहने वाले शर्मा जी को इस खबर ने इतना कमजोर कर दिया कि वे अब अपने से उठ भी नहीं पा रहे थे। उनके लिए यह खबर केवल संतोषी की आत्महत्या की नहीं थी, बल्कि समाज की साझी पराजय की भी थी। मन अब वैराग्य की ओर तेजी से भागने लगा था।

डॉ. वी. सुगुणा

निदेशक (राजभाषा), रेलवे बोर्ड



रेल की पटरियों के बीच उगता सूर्य और ऊर्जा संरक्षण की दिशा में बनारस रेल इंजन कारखाना का अभिनव कदम

ऊर्जा संरक्षण आज केवल एक तकनीकी आवश्यकता नहीं, बल्कि राष्ट्र की आर्थिक, पर्यावरणीय और रणनीतिक प्राथमिकता बन चुका है। जलवायु परिवर्तन, बढ़ती ऊर्जा मांग और जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता ने विश्व समुदाय को नवीकरणीय ऊर्जा की ओर निर्णायक रूप से अग्रसर किया है। भारत सरकार के नेट जीरो कार्बन उत्सर्जन लक्ष्य को साकार करने के लिए हरित परिवहन प्रणाली की दिशा में भारतीय रेल एक अग्रणी भूमिका निभा रही है।

इसी क्रम में बनारस रेल इंजन कारखाना (बरेका), वाराणसी ने ऊर्जा संरक्षण के क्षेत्र में एक ऐसा नवाचार प्रस्तुत किया है, जो न केवल भारतीय रेल, बल्कि वैश्विक रेल प्रणालियों के लिए भी एक प्रेरक मॉडल सिद्ध हो सकता है। बरेका ने भारत में पहली बार सक्रिय रेलवे पटरियों के बीच हटाने योग्य सौर पैनल प्रणाली स्थापित कर यह प्रमाणित किया है कि ऊर्जा संरक्षण के लिए नई भूमि की आवश्यकता नहीं, बल्कि मौजूदा परिसंपत्तियों का नवोन्मेषी उपयोग ही पर्याप्त है। यह पहल भारतीय रेल की उस दूरदर्शी सोच को दर्शाती है, जिसमें विकास और पर्यावरण संरक्षण एक-दूसरे के पूरक हैं।

ऊर्जा संरक्षण का नवाचार: जहाँ रेल चलती है, वहीं ऊर्जा बनती है

बरेका कार्यशाला की लाइन संख्या 19 के 70 मीटर ट्रैक पर स्थापित 220 किलोवाट पीक प्रति किलोमीटर

पावर डेंसिटी एवं 880 यूनिट प्रति किलोमीटर प्रतिदिन ऊर्जा घनत्व का यह 15 किलोवाट पीक क्षमता का पायलट प्रोजेक्ट इस बात का सशक्त उदाहरण है कि ऊर्जा संरक्षण केवल नीति नहीं, बल्कि व्यावहारिक समाधान भी है।

यह परियोजना ऊर्जा संरक्षण के तीन प्रमुख स्तंभों को एक साथ साकार करती है-

- संसाधन संरक्षण-रेल पटरियों के बीच की अनुपयोगी भूमि का उपयोग
- ऊर्जा दक्षता-उच्च दक्षता वाले बाइफेसियल सोलर मॉड्यूल
- सतत विकास-बिना रेल परिचालन बाधित किए स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन तकनीकी नवाचार से ऊर्जा सुरक्षा



परियोजना के क्रियान्वयन से पूर्व कई तकनीकी चुनौतियाँ थीं-जैसे ट्रेन से उत्पन्न कंपन, पटरियों के रखरखाव की आवश्यकता और पैनलों की सुरक्षा। इन सभी का समाधान स्वदेशी तकनीकी नवाचारों के माध्यम से किया गया-

- कंपन अवशोषण हेतु रबर माउंटिंग पैड
- कंक्रीट स्लीपर पर मजबूत फिक्सेशन के लिए एपॉक्सी एडहेसिव
- रखरखाव के समय त्वरित हटाने हेतु एस.एस. एलन बोल्ट प्रणाली



■ धूल-मिट्टी से मुक्त रखने हेतु सरल सफाई व्यवस्था।

ये सभी उपाय इस प्रणाली को ऊर्जा संरक्षण के साथ-साथ परिचालन सुरक्षा का भी आदर्श मॉडल बनाते हैं।

ऊर्जा संरक्षण से आत्मनिर्भरता की ओर

भारतीय रेल के लगभग 1.2 लाख किलोमीटर ट्रैक नेटवर्क में बड़ी संख्या में यार्ड लाइनें उपलब्ध हैं। यदि इस तकनीक को चरणबद्ध रूप से अपनाया जाए, तो अनुमानित रूप से प्रति किमी 3.21 लाख यूनिट वार्षिक ऊर्जा उत्पादन होगा।

कोयला आधारित बिजली पर निर्भरता में उल्लेखनीय कमी

कार्बन उत्सर्जन में दीर्घकालिक गिरावट संभव है। यह न केवल ऊर्जा लागत को घटाएगा, बल्कि भारतीय

रेल को ऊर्जा आत्मनिर्भरता की दिशा में मजबूती से आगे बढ़ाएगा।

ऊर्जा संरक्षण : प्रतिबद्धता से उपलब्धि तक

“यह परियोजना सौर ऊर्जा के उपयोग का नया आयाम है और भविष्य में भारतीय रेल के लिए हरित ऊर्जा का सशक्त मॉडल बनेगी।”

बरेका की यह पहल सिद्ध करती है कि ऊर्जा संरक्षण केवल ऊर्जा बचाने तक सीमित नहीं, बल्कि यह नवाचार, संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग और आने वाली पीढ़ियों के प्रति उत्तरदायित्व का प्रतीक है।

रेल पटरियों पर स्थापित ये सौर पैनल केवल बिजली उत्पादन नहीं कर रहे हैं बल्कि भारतीय रेल के हरित, आत्मनिर्भर और सतत भविष्य की नींव भी रख रहे हैं।

राजेश कुमार

जन सम्पर्क अधिकारी, बनारस रेल इंजन कारखाना, वाराणसी

प्रकृति का वरदान

बूँद-बूँद से सागर है भरता, किरणों
से जग में उजियारा।

ऊर्जा है जीवन की धड़कन, इससे चलता है
संसार सारा।

प्रकृति का वरदान है ऊर्जा, सृष्टि का आधार है,
विकास की इस दौड़ का, ये ही मुख्य विस्तार है।
सिमट रहे हैं स्रोत ये सारे, जो पूर्वजों की थाती थे,
हम छोड़ रहे प्रकृति को, जिसके हम
कभी साथी थे।

मत समझो इसे निजी संपदा, ये सृष्टि
का उपहार है,

उचित प्रयोग ही समझदारी, दुरुपयोग... संहार है।

उपभोग हम अनियंत्रित कर रहे, जो संकट को
आमंत्रण है,

भविष्य में अंधकार से है बचना,
तो... बस एक ही मंत्र है...

जागृत हो हर कोई, संकल्प ये सबने लेना है,
ऊर्जा संरक्षण से ही, सुंदर कल हमें देना है।

सौर उर्जा की चमक से घर घर जगमाता है, पवन
वेग दूर मैदानों से मुस्काता है,

अक्षय ऊर्जा का है पथ नया, जो भविष्य
को दिखलाता है

बर्बादी छोड़ो व्यर्थ की, सहेज लो हर एक इकाई,
ऊर्जा की बचत ही समझो, आज की
सबसे बड़ी कमाई।

गौरव चाँदना

वरिष्ठ अनुभाग अधिकारी, उत्तर रेलवे, बड़ौदा हाऊस



भारतीय रेल में ऊर्जा संरक्षण की दिशा में जारी है अभिनव प्रयास

देश की आधुनिक रेल बुनियादी संरचना के विस्तार की दिशा में विभिन्न क्षेत्रों में कदम बढ़ाते हुए भारतीय रेल इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में दर्ज हो गई है। सौर ऊर्जा के उत्पादन और संरक्षण के तहत मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को गतिमान करते हुए ऐसी कई उपलब्धियां हासिल की गईं, जिनसे अभूतपूर्व प्रदर्शन जारी रखते हुए भारत की रेल शक्ति को विश्व के पटल पर उदित कर देश को एक नई पहचान दिलाई है, जो भारत की अगली पीढ़ी के लिए वरदान साबित हो रही है। भारतीयों की भारतीयों द्वारा भारतीयों के लिए सस्ती, सुगम और उपयोगी अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित रेलगाड़ियों और रेलवे स्टेशनों के परिचालन ने भारत के रेल परिवहन को एक नए दौर में पहुँचा दिया है। वर्ष 2025 में ऊर्जा संरक्षण के क्षेत्र में भी ऐतिहासिक सफलता हासिल करते हुए रेल इंजन निर्माण और यात्रा में भी सौर ऊर्जा का विस्तार कर पर्यावरण संरक्षण की दिशा में इसे मजबूती प्रदान की गई है।

भारतीय रेल में 2628 स्टेशन हैं, जो सौर ऊर्जा से संचालित होकर पर्यावरण संरक्षण में योगदान दे रहे हैं। वर्तमान में भारतीय रेल ने नवाचार स्वदेशीकरण के सहयोग से नवीनीकरण और पुनर्विकसित स्टेशनों पर सौर ऊर्जा जैसी नई तकनीक को अपनाकर हवाई अड्डे जैसी सुविधा यात्रियों को उपलब्ध कराई है। भारतीय रेल पर्यावरण संरक्षण और

नेट जीरो कार्बन उत्सर्जन के लक्ष्य के साथ सौर ऊर्जा संचालित सेवाओं का तेजी से विस्तार कर रही है। जानकारी के अनुसार 2600 से अधिक स्टेशन (जैसे चेन्नै, गुवाहाटी) सौर ऊर्जा से जगमगा रहे हैं और लगभग 898 मेगा वॉट सौर ऊर्जा क्षमता का उपयोग रेलगाड़ियों और स्टेशनों के लिए किया जा रहा है। वर्ष 2017 में पहली सोलर-डीईएमयू रेलगाड़ी दिल्ली में शुरू हुई थी। सौर ऊर्जा की सेवा विस्तार ने अब गति पकड़ ली है।

सौर ऊर्जा संचालित रेलवे सेवाओं की मुख्य विशेषताएं हैं, जिनके अनुसार गुवाहाटी (पहला) और चेन्नै सेंट्रल सहित 2,626 से अधिक स्टेशनों पर सोलर पैनल लगे हैं, जो स्टेशन की लाइट और पंखों की जरूरत पूरी करते हैं। इसके साथ-साथ रेलवे ने 2017 में दिल्ली के सफदरजंग रेलवे स्टेशन से पहली बार अपनी छत पर लगे सौर पैनल (Solar Panels) वाली रेलगाड़ी शुरू की थी, जो गैर-एसी सवारी डिब्बों को बिजली देती है। रेलवे ने ऊर्जा क्षमता का विकास करते हुए 2025 तक 898 मेगावाट (MW) से अधिक सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किए हैं, जिसमें से लगभग 70%





का उपयोग सीधे रेलगाड़ियों को चलाने (कर्षण) के लिए किया जा रहा है। 2030 तक 'नेट जीरो कार्बन उत्सर्जन' प्राप्त करने के लिए, रेलवे खाली जमीन पर 20 गीगावाट के सौर संयंत्र लगाने की योजना बना रहा है। रेलवे में ऊर्जा संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए ऊर्जा के कुशल उपयोग पर ऊर्जा संरक्षण सप्ताह का आयोजन किया जाता है। प्रतिवर्ष 14 दिसंबर को राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस मनाया जाता है। इस दौरान रेलवे के सभी क्षेत्रों, इकाइयों और मंडलों में ऊर्जा दक्षता के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए संगोष्ठियां, प्रतियोगिताएं, नुक्कड़ नाटक और ऊर्जा-कुशल तकनीकों के उपयोग को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। रेलवे की इस पहल न केवल बिजली के खर्च को कम करती है बल्कि प्रदूषण को भी कम करती है।

भारतीय रेल में ऊर्जा संरक्षण एवं उत्पादन के लिए नवीनतम तकनीक पर भी काम किया जा रहा है। 2025 में बनारस लोकोमोटिव वर्क्स में पटरियों के बीच भारत का पहला 70 मीटर लंबा रिमूवेबल सोलर पैनल सिस्टम स्थापित किया गया है। बनारस रेल इंजन कारखाना (बरेका) में रेल ट्रैक पर सौर ऊर्जा का नवाचार देखने को मिल रहा है। रेल ट्रैक पर लगे सोलर पैनल का इस्तेमाल सफलतापूर्वक किया जा रहा है। भारत का पहला सौर पैनल सिस्टम सक्रिय रेलवे पटरियों के बीच स्थापित किया गया है। स्वदेशी डिजाइन की नई विशेष इंस्टॉलेशन बीम का उपयोग कर पटरी के बीच सौर पैनल लगाए गए हैं। यह नवाचार भारतीय रेल को जीरो कार्बन उत्सर्जन के लक्ष्य की ओर आगे बढ़ा रहा है। यह परियोजना भविष्य में भारतीय रेल के लिए हरित ऊर्जा का सशक्त मॉडल साबित हो सकती है। बरेका और चिरेका, (चित्तरंजन रेल इंजन कारखाना) में पहले से ही स्थापित रूफ टॉप सोलर पावर प्लांट्स के साथ कार्य सफलतापूर्वक संचालित किए जा रहे हैं। चिरेका में सौर ऊर्जा को ध्यान में रखकर कई अभिनव कार्य संपादित किए जा रहे हैं।

भारतीय रेल ने देश की पहली ऐसी हाइड्रोजन रेलगाड़ी का ट्रायल किया है, जिससे परिचालन का खर्च कम होने के साथ-साथ प्रदूषण मुक्त रेल यात्रा का सपना भी सच होने जा रहा है। सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि हाइड्रोजन रेलगाड़ी के लिए तैयार किया गया इंजन 1200 हॉर्स पावर का है। भारतीय रेल ने इस दिशा में कवायद तेज कर दी है। इससे रेलगाड़ी के परिचालन खर्च में कमी आएगी और वायु प्रदूषण एवं ध्वनि प्रदूषण के मामले में भी लाभ पहुँचेगा। जल्द ही भारतीय रेल की पटरियों पर हाइड्रोजन रेलगाड़ी के सफर की शुरुआत होने वाली है। हरियाणा और जींद सोनीपत के लगभग 90 किलोमीटर के क्षेत्र पर हाइड्रोजन ट्रेन का ट्रायल शुरू किया गया है। सौर ऊर्जा से संचालित रेल व्यवस्था की शुरुआत पहले ही हो चुकी है। यह सभी मामलों में भारत की सफलता के लिए रेल की लंबी छलांग है। देश के महत्वपूर्ण रेलवे स्टेशन और व्यवस्था को सौर ऊर्जा से सफल संचालित किया जा रहा है।

रेलगाड़ी और स्टेशनों के संचालन में ऊर्जा संरक्षण की बात की जाए तो रेलगाड़ियों में अब एलईडी लाइट का इस्तेमाल किया जा रहा है जो ऊर्जा को संरक्षित करती है, जिसमें ऊर्जा की खपत बहुत कम है। आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना रायबरेली में ऊर्जा संरक्षण के कई तकनीक अपनाए गई हैं, जो सफलता की नई दास्तान लिख रही हैं। जल संरक्षण के द्वारा भी भारतीय रेल की कई रेल परियोजनाएं ऊर्जा तैयार कर इसका इस्तेमाल कर रहे हैं।

भारतीय रेल वर्तमान में केवल लोहे की पटरी पर दौड़ने वाली परिवहन व्यवस्था नहीं है, यह देश की प्रगति परिवर्तन और तरक्की का पर्याय बन चुकी है। वह दिन दूर नहीं, जब शत-प्रतिशत क्षेत्र में भारत का रेल परिवहन सौर ऊर्जा का साथी बन जाएगा। भारतीय रेल लगातार भारत को रेल के मानचित्र पर विश्व में शिखर पर पहुँचाने का कार्य कर रही है।

भारतीय रेल ने यात्री सेवा को सर्वोपरि साबित करते हुए रेल यात्रा की व्यवस्था तकनीक और सेवा तथा



सुविधा के क्षेत्र में भी लगातार नए इतिहास रचे हैं जिसकी चर्चा दुनिया भर में हो रही है। आत्मनिर्भर भारत और मेक इन इंडिया की पटरी पर यात्रा करते हुए भारतीय रेल ने ऊर्जा संरक्षण के फलक पर लगातार सफलता का झंडा बुलंद किया है, जिसने समस्त भारतवासियों को गौरवान्वित करते हुए रेल यात्रा का नया अनुभव प्रदान किया है।

संजीव कुमार सिंह

लिपिक जनसंपर्क विभाग, चिरेका, चित्तूरंजन

रचनाएँ भेजने हेतु निवेदन

- आपकी उत्कृष्ट रचनाओं का 'रेल राजभाषा' में स्वागत है।
- अपनी रचनाओं की मूल प्रति ही भेजें। लेख/कविता आदि के साथ एक घोषणा पत्र भी संलग्न करें, जिसमें यह स्पष्ट किया गया हो कि शीर्षक से शुरू होने वाला लेख/कहानी/कविता आदि मौलिक एवं अप्रकाशित है तथा इसमें दी गई सामग्री एवं फोटो की जिम्मेदारी लेखक की है। लेख/कहानी/कविता आदि से संबंधित फोटो सामग्री के साथ भेजें। रचनाएं यूनिकोड फार्मेट/मंगल में टाइप कराकर वर्ड फाइल के रूप में ही भेजें।
- पत्रिका को और बेहतर बनाने के लिए लेखकों और पाठकों के पत्रों एवं सुझावों का स्वागत है।
- लेखकों से अनुरोध है कि अपना फोटो (जेपीजी फार्मेट में), नाम, पता, मोबाइल नं., ई-मेल आईडी, बैंक खाता विवरण और चेक की एक फोटोकॉपी अपनी टाइप की हुई रचना के साथ हमारे ई-मेल patrikahindi@gmail.com पर भेजें।

-संपादक, रेल राजभाषा

ऊर्जा संरक्षण

आओ मिलकर करें प्रयास,
ऊर्जा संरक्षण में छिपी है आस।
ऊर्जा है जीवन का आधार,
इससे चलता सारा संसार।
सूरज की किरणें देती प्रकाश,
ऊर्जा संरक्षण में छिपी है आस।
कोयला, पेट्रोल सीमित भंडार,
सीमित करो इनका इस्तेमाल।
बुझा दो बत्ती जब हो उजाला,
बचत से ही होगा भविष्य निराला।
सौर ऊर्जा अपनाएँ हम,
पवन चक्की से रोशन हो ऊर्जा।
जल विद्युत का करें सम्मान,
भारतीय रेल में करें सौर ऊर्जा इस्तेमाल।
आज बचाएँ हर एक यूनिट,
कल मिलेगा सुख का लाभ असीमित।
पेड़ लगाएँ, धरती सँवारेँ,
हरियाली से सपने निखारेँ।
ऊर्जा संरक्षण का लो संकल्प,
तब बनेगा विकसित भारत का कल्प।
मिलकर करें हम यह प्रयास,
ऊर्जा बचाना है सबकी आस।
आओ मिलकर करें प्रयास,
ऊर्जा संरक्षण में छिपी है आस

राम प्रजापति

खेल समन्वयक, भारतीय रेल खेलकूद संवर्द्धन बोर्ड,
तिलक ब्रिज, नई दिल्ली



सौर ऊर्जा आत्मनिर्भरता की ओर बनारस लोकोमोटिव वर्क्स का सशक्त कदम

ऊर्जा किसी भी औद्योगिक संस्थान की प्रगति का मूल आधार होती है। बदलते वैश्विक परिदृश्य में जहां एक ओर ऊर्जा की मांग निरंतर बढ़ रही है, वहीं दूसरी ओर पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता भी उतनी ही महत्वपूर्ण हो गई है। ऐसे समय में भारतीय रेल का बनारस लोकोमोटिव वर्क्स (बीएलडब्ल्यू), वाराणसी सौर ऊर्जा के उपयोग के माध्यम से सतत विकास की दिशा में एक प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है।

बीएलडब्ल्यू परिसर में विभिन्न सेवा भवनों पर ग्रिड-संलग्न सौर फोटोवोल्टिक संयंत्र स्थापित किए गए हैं। लगभग 2 मेगावाट पीक क्षमता के संयंत्र लोक-निजी सहभागिता (PPP) मॉडल के अंतर्गत तथा लगभग 1.859 मेगावाट पीक क्षमता रेलवे संसाधनों से स्थापित की गई है। इस विकेन्द्रीकृत व्यवस्था का सबसे बड़ा लाभ यह है कि ऊर्जा का उपभोग उसी स्थान पर हो जाता है, जहां उसका उत्पादन होता है, जिससे संचरण हानियां न्यूनतम रहती हैं।

स्थापित संयंत्र आधुनिक तकनीकी मानकों के अनुरूप हैं तथा नेट मीटरिंग सुविधा से युक्त हैं। इससे न केवल उत्पादित ऊर्जा का प्रभावी उपयोग संभव हो पाया है, बल्कि अधिशेष विद्युत का समायोजन भी सुनिश्चित हुआ है। परिणामस्वरूप संस्थान की पारंपरिक ग्रिड विद्युत पर निर्भरता में उल्लेखनीय कमी आई है।

ऊर्जा उत्पादन के आंकड़े इस पहल की सफलता को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं। वित्तीय वर्ष 2022-23 में लगभग 4.64 मिलियन किलोवाट घंटे, वर्ष 2023-24 में

4.37 मिलियन किलोवाट घंटे तथा वर्ष 2024-25 में अब तक लगभग 4.23 मिलियन किलोवाट घंटे सौर ऊर्जा का उत्पादन हुआ है। विशेष रूप से वर्ष 2023-24 में कुल ऊर्जा उपभोग का लगभग 21.82 प्रतिशत भाग सौर स्रोतों से प्राप्त होना इस दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

सौर ऊर्जा अपनाने का सकारात्मक प्रभाव वित्तीय स्तर पर भी परिलक्षित हुआ है। वर्ष 2022-23 में लगभग ₹2.16 करोड़, वर्ष 2023-24 में 21.85 करोड़ तथा वर्ष 2024-25 में अब तक लगभग 55 करोड़ की बचत दर्ज की गई है। यह निरंतर बचत न केवल सुदृढ़ वित्तीय प्रबंधन को दर्शाती है, बल्कि यह भी सिद्ध करती है कि नवीकरणीय ऊर्जा दीर्घकालीन दृष्टि से आर्थिक रूप से अत्यंत लाभकारी है।

सौर ऊर्जा के एकीकरण के पश्चात प्रति रेल इंजन ऊर्जा खपत में कमी देखी गई है, जो परिचालन दक्षता में वृद्धि का संकेत है। ग्रिड विद्युत के स्थान पर सौर ऊर्जा का प्रत्यक्ष उपयोग, नेट-मीटरिंग की व्यवस्था, दिवसकालीन औद्योगिक भार का सौर उत्पादन के





साथ समन्वय तथा स्थानीय स्तर पर उत्पादन ये सभी कारक ऊर्जा बचत में सहायक सिद्ध हुए हैं।

इस पहल के पर्यावरणीय लाभ भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। सौर ऊर्जा के उपयोग से कार्बन उत्सर्जन में कमी आई है, जिससे पर्यावरण संरक्षण को बल मिला है। साथ ही, भविष्य में संभावित विद्युत दर वृद्धि के प्रभाव से आंशिक सुरक्षा भी प्राप्त होती है। दीर्घकालीन दृष्टि से यह व्यवस्था उत्पादन इकाइयों की ऊर्जा सुरक्षा को सुदृढ़ बनाती है।

निरीक्षण के दौरान यह पाया गया कि सभी सौर संयंत्र सुचारु रूप से कार्यरत हैं और कुल ऊर्जा उपभोग में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। हालांकि, उत्पादन में मामूली वार्षिक उतार-चढ़ाव यह संकेत देता है कि संयंत्रों की दक्षता बनाए रखने के लिए नियमित सफाई एवं निवारक अनुरक्षण अत्यंत आवश्यक हैं।

आगामी समय में यदि सौर क्षमता का और विस्तार किया जाए तथा नवीकरणीय ऊर्जा की हिस्सेदारी को 30 से 40 प्रतिशत तक बढ़ाया जाए, तो बीएलडब्ल्यू ऊर्जा आत्मनिर्भरता की दिशा में और अधिक सशक्त बन सकता है। साथ ही, केंद्रीकृत रियल-टाइम मॉनिटरिंग तथा सुदृढ़ ऊर्जा लेखांकन प्रणाली अपनाने से उत्पादन और बचत का अधिक सटीक आकलन संभव होगा।

समग्र रूप से देखा जाए तो बनारस लोकोमोटिव वर्क्स की यह सौर ऊर्जा पहल तकनीकी दक्षता, वित्तीय विवेक और पर्यावरणीय उत्तरदायित्व का उत्कृष्ट संगम है। ₹1.5 करोड़ से अधिक की वार्षिक बचत और 20 प्रतिशत से अधिक नवीकरणीय ऊर्जा योगदान के साथ यह परियोजना न केवल संस्थागत ऊर्जा प्रबंधन का आदर्श प्रस्तुत करती है, बल्कि अन्य औद्योगिक प्रतिष्ठानों के लिए भी एक अनुकरणीय मॉडल के रूप में उभरती है।

निस्संदेह, सौर ऊर्जा की यह यात्रा केवल विद्युत उत्पादन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आत्मनिर्भर, पर्यावरण-सम्मत और भविष्य उन्मुख औद्योगिक भारत

की ओर बढ़ता हुआ एक दृढ़ कदम है।

जगन्नाथ मुखर्जी

सहायक वित्त सलाहकार, लेखा विभाग, बनारस लोकोमोटिव वर्क्स, वाराणसी

बसंत के दूत



आ रहे बसंत के दूत
हर्षोल्लास मनाते,
धरती की काया को रंगने
धानी चुनर पहनाते,

स्वर्णिम पुष्पों पर छिड़की
थोड़ी नेह की गंध,
फूल फूल इतराते मधुकर
खिलखिला कर हंसते दंग,

कोयल कूक मुनादी करती
आ रहे मोहक बसंत,
शीत की सारी व्यथा मिटाने
और बिखराने प्रीत अनंत,

धरती तुम अगवानी करना
प्रेम को अंगीकार करो,
लो.. फूलों के गुच्छों से
नववधू सा श्रृंगार करो

रेखा शाह आरबी

बलिया, उत्तर प्रदेश



बदलते सामाजिक परिप्रेक्ष्य में सशक्त होती महिलाएँ

परिवर्तन जगत का नियम है और मनुष्य इस परिवर्तन का केंद्र बिंदु। इस परिवर्तन को गतिशील बनाने वाले तत्व हैं—औद्योगिकीकरण, आर्थिक विकास, शिक्षा का सर्वव्यापीकरण, विभिन्न समाजों का आपस में मेल-जोल आदि। आजकल के इंटरनेट, मोबाइल फोन, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, टेलीग्राम, फेसबुक, ट्विटर आदि ने इस औद्योगिकीकरण, आर्थिक विकास, सामाजिक मेलजोल आदि को तीव्रता प्रदान की है।

एक ओर हम इन तकनीकों, साधनों का प्रयोग करते हुए दूसरे देशों में क्या घटित हो रहा है, इसकी जानकारी तुरंत हासिल कर लेते हैं, तो दूसरी ओर दूसरी भाषा और संस्कृति के लोगों से भी जुड़ जाते हैं। अमरीका में बैठा कोई व्यक्ति हमसे मित्रता करना चाहे तो फेसबुक

को अपना माध्यम बनाकर तुरंत फ्रेंडशिप रिक्वेस्ट भेजता और हमें अपने विचारों से प्रभावित करता है। वह अपने औद्योगिक और आर्थिक विकास का वर्णन करता है तो बदले में हमारी संस्कृति में क्या कुछ महत्वपूर्ण है, उसकी जानकारी भी प्राप्त कर लेता है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि आजकल के आधुनिक जमाने में पूरी दुनिया सिकुड़ कर मोबाइल फोन में आ गई है और विश्व भर की तमाम जानकारियां मोबाइल के छोटे से स्क्रीन में समा गई हैं।

इस आधुनिक वैश्विक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य में महिलाएं कहां खड़ी हैं? हमारी आधी आबादी इस

निरंतर विकसित हो रही व्यवस्था में कितनी सशक्त हुई है? यदि समाज का एक पहिया पुरुष है तो दूसरा स्त्री। स्त्री के बिना हम समाज की तो क्या मानव जाति की ही कल्पना नहीं कर सकते हैं। नारी को नारायणी मानने वाला भारतीय समाज आज के सामाजिक परिप्रेक्ष्य में उसे कहां खड़ा रखना चाहता है? क्या महिला सशक्त हुई हैं? क्या उसे वह आजादी मिली है, जो पुरुषों को समाज ने आरंभ से ही दे

रखी है? कामकाजी महिलाओं ने समाज को बदलने में कितनी बड़ी भूमिका निभाई और समाज की नजर में नारी की छवि को कितना मजबूत किया है? क्या कामकाजी महिलाओं और घरेलू महिलाओं की छवि में भिन्नता है और दोनों को समाज द्वारा दी गई आजादी के दायरे भी

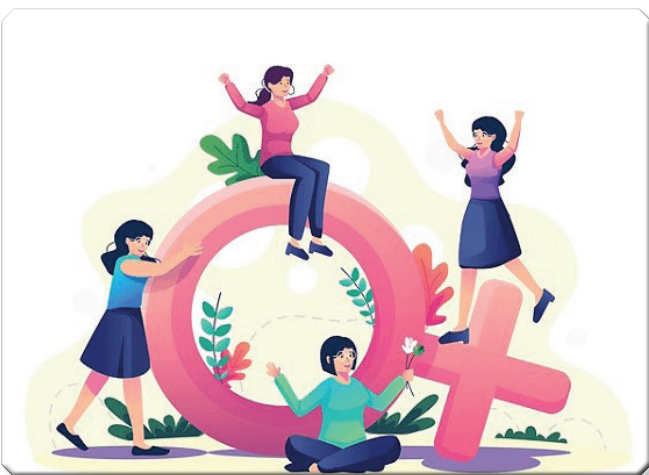


अलग-अलग हैं? क्या पूरी नारी जाति सशक्त हुई है या केवल अपने हक की लड़ाई लड़कर जीतने वाली महिलाएं ही सशक्त हो पाई हैं? सवाल कई हैं। समाज में महिलाओं की सशक्त होती तस्वीर के संबंध में पैलिनीथुराई (2001) ने लिखा है कि “महिला सशक्तीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा समाज के विकास की प्रक्रिया में राजनीतिक संस्थाओं के द्वारा महिलाओं को पुरुष के बराबर मान्यता दी जाती है।” इस संबंध में वीरेन्द्र सिंह यादव (2010) ने अपनी पुस्तक ‘महिला सशक्तीकरण मिथक एवं यथार्थ’ में लिखा है कि “महिलाएं समाज का आधा हिस्सा होने के कारण महिला एवं विकास का अंतरंग संबंध है।”



भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका विषय पर पूर्व में काफी लेखन कार्य किया गया है। उनकी राजनीतिक सक्रियता और हैसियत पर भी शोधकर्ताओं ने काफी काम किया है, जिसमें कई राजनीतिज्ञों एवं समाजशात्रियों की विवेचनाएं शामिल हैं। बिना राजनीतिक मजबूती के महिलाएं सामाजिक रूप से भी सशक्त नहीं हो सकतीं, क्योंकि व्यक्ति, समाज और राजनीति आपस में घुले-मिले हैं। डॉ. लक्ष्मीराजी कुलश्रेष्ठ (2001) ने अपने लेख 'पंचायती राज और महिलाएं' में लिखा है कि "पंचायतीराज व्यवस्था में महिला आरक्षण के परिणामस्वरूप अब महिलाओं की मनः स्थिति बदल रही है। वे अब अपना पक्ष पूरी निर्भीकता तथा निष्पक्षता से रखने लगी हैं। बहरहाल पंचायतीराज व्यवस्था में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी से उन्हें जो नया परिवेश मिल रहा है, वह उनके लिए प्रगति और विकास के द्वार तो खोल ही रहा है, पुरुष तथा स्त्री के बीच समाज में जो सामाजिक विषमता है, उसमें भी कमी हो रही है।" निश्चित ही इससे वर्तमान में ग्रामीण समाज में बदलाव आया है।

महिलाएं परिवार की धुरी हैं। उन्होंने एक हाथ से पुरुष का हाथ पकड़ रखा है तो उनका दूसरा हाथ बच्चों के पालन-पोषण और देखभाल में व्यस्त है। यदि महिला मजबूत होगी तो परिवार मजबूत होगा, समाज मजबूत होगा और राष्ट्र मजबूत होगा। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन (1999) ने इसे रेखांकित किया



है, "महिला सशक्तीकरण से न केवल महिलाओं के जीवन में निश्चित रूप से सकारात्मक असर पड़ेगा बल्कि पुरुष एवं बच्चों को भी लाभ होगा।"

सामाजिक परिस्थिति निरंतर परिवर्तित होती है। आधुनिक सामाजिक परिप्रेक्ष्य में महिलाओं की स्थिति में भी काफी बदलाव हुआ है। जैसे-जैसे समाज आगे बढ़ रहा है और विकसित हो रहा है, महिलाएं भी सशक्त हो रही हैं। हम सामाजिक परिवर्तन को स्वीकार कर रहे हैं तो महिलाओं की बदलती छवि को भी स्वीकार कर रहे हैं। अधिकांश पुरुष और स्त्री मानते हैं कि बदलती सामाजिक परिस्थिति का सकारात्मक प्रभाव महिला सशक्तीकरण पर पड़ रहा है और महिलाएं सशक्त हो रही हैं। महिलाओं की इस मजबूत होती स्थिति से समाज को भी आगे ले जाने में मदद मिलती है।

भारतीय समाज में महिलाएं हमेशा पुरुषों के अधीन रहती आई हैं। आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक रूप से पुरुषों का उन पर पूरा नियंत्रण रहा है। यह नियंत्रण स्वयं महिलाओं द्वारा भी स्वीकृत रहा है। पर आधुनिक सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक परिस्थिति ने तस्वीर बदली है। एक ओर भारत का औद्योगिकीकरण हुआ है तो दूसरी ओर व्यापारिक और वाणिज्यिक प्रगति ने भी समाज को दिशा दिखाई है। लेकिन समाज पर सबसे गहरा असर इंटरनेट, मोबाईल, फेसबुक व्हाट्सएप, ट्विटर, इंस्टाग्राम इत्यादि का पड़ा है। इन संचार माध्यमों ने पुरुष और स्त्री दोनों की सोच को बदला है। अब स्त्री घर की चहारदीवारी से बाहर निकल कर अपनी एक अलग छवि बना रही है। पुरुष भी उसके इस स्वरूप को स्वीकार कर रहा है। महिला सशक्त हो रही है और उसके प्रति आधुनिक समाज का नजरिया बदल रहा है।

डॉ. प्रियंका पाठक
हनुमान नगर, पटना



दो- दूनी चार

शब्दकोश से पहले की बात है
गिनती पहाड़े सब बाद में बनें
या ये माँ की देन हैं
तुमने डाला खेत में एक दाना
खेत ने लौटाए तुम्हें दो दाने
और आदमी ने पढ़ा पहली बार
दो-दूनी चार
ये दोनों तब भी उतने ही उर्वर थे
धरती और माँ दोनों ने
लौटाया दो-एकम-दो
दो-दूनी-चार
चार-दूनी-आठ
धरती और माँ दोनों
उर्वरा हैं
दोनों में अंकुरण हैं
दोनों में प्रस्फुटन है
दोनों में बढ़ना निहित है
दोनों में उत्साह है
धरती और माँ हमेशा दोगुना देते हैं
छींट दो चना, मकई, गेहूँ का दाना
भर देतीं हैं बखार
बोरी-बोरी अनाज से
धरती की तरह माँ भी लौटाती है दोगुना
नहीं उसके पास कोई ब्याज का हिसाब नहीं है
नहीं है कोई खाता-बही
पुरुषों की तरह नहीं जानतीं
वे जोड़-घटाव
गुणा-भाग
उनको लौटाना है,
दिए जाने वाले भाग से
हमेशा कई-कई गुना
भाग, घटाव, से वे खाली हैं
वो सर्जना हैं, अन्नपूर्णा हैं
दोनों में दो-दूनी चार की तरह तरह लौटाने का हुनर है
ये महज इत्तेफाक नहीं है कि शब्दकोश
में दोनों स्त्रीलिंग हैं
दोनों लौटातीं हैं दो दूनी चार!

महेश केशरी
बोकारो, झारखंड

रेल कर्मों और ऊर्जा संरक्षण



रेल कर्मों हैं देश की शान,
जिनसे चलता हिंदुस्तान।
दिन हो चाहे काली रात,
कर्तव्य ही इनकी पहचान।
ऊर्जा का रखें जो ध्यान,
तो बदलेगा हर एक विधान।
छोटी बचत, बड़ा उपकार,
यही है सच्चा योगदान।
ड्यूटी पर हों या विश्राम में,
सजग रहना है हर पल हमें।
अनावश्यक दीप न जलें,
यही सीख देनी है कल को हमें।
सौर शक्ति से रोशन स्टेशन,
हरित रेल का सपना साकार।
बिजली बचाकर, ईंधन संभाल,
कर्मचारी बनें बदलाव की धार।
हर स्विच, हर उपकरण बोले,
“संरक्षण मेरा अधिकार।”
आज बचाई एक इकाई,
कल बनेगी शक्ति अपार।
रेल कर्मों जब ठान लें मन में,
ऊर्जा संरक्षण होगा अभियान।
स्वच्छ पर्यावरण, उज्ज्वल भविष्य,
यही रेलवे का गौरव, यही पहचान।

नीरज सिंह
सीनियर सेक्शन इंजीनियर, आरडीएसओ, लखनऊ



विवेकानंद का ऐतिहासिक शिकागो जयघोष

स्वामी विवेकानंद आधुनिक भारत के एक अनूठे महापुरुष हैं। उनके नाम के दोनों शब्द 'स्वामी' और 'विवेकानंद' उनके धर्मगुरु होने का आभास देते हैं। किंतु वे परंपरागत दृष्टि से मंदिरों व मठों में रहने वाले धर्मगुरु नहीं, बल्कि आध्यात्मिक एवं कर्मशील व्यक्ति थे, जिन्होंने दो-दो बार समूचे देश तथा विदेश का भ्रमण करके वेदांत, योग व भारत की आध्यात्मिक शक्ति

का प्रचार-प्रसार करके हिंदू धर्म तथा भारत के प्रति दुनिया की दृष्टि बदल दी। विवेकानंद ने देश की स्वतंत्रता के लिए ब्रिटिश सेना के खिलाफ किसी संघर्ष या आंदोलन में भाग नहीं लिया, किंतु उनके चिंतन, कथन एवं कर्म में देशभक्ति की प्रबल भावना स्पष्ट झलकती है। उन्होंने अपने समय में प्रचलित सामाजिक दर्शनों में कोई रुचि नहीं दिखाई, किंतु वे एक आदर्श समाजसेवी तथा समाजचिंतक थे।

वे भारत की परंपराओं का पालन करते हुए भी उनके नकारात्मक पहलुओं का डट कर व खुल कर विरोध करते थे। स्वामी जी का अनूठापन यहीं तक सीमित नहीं है। उन्होंने ब्रिटेन में जाकर वहाँ के विद्वानों, पत्रकारों, राजनेताओं तथा बुद्धिजीवियों से मुलाकात की और उन्हें भारत की जनता के साथ उनकी सरकार द्वारा किए जा रहे अन्याय के प्रति सचेत किया। उस समय के सबसे आधुनिक व शक्तिशाली देश अमरीका में भगवा चोले में

शहर-दर-शहर घूम कर वेदांत तथा भारतीय मूल्यों का डंका बजाया। उस समय जब मार्क्सवाद तथा समाजवाद का भारत में किसी ने नाम ही सुना था, विवेकानंद ने महिलाओं की समानता तथा दलितों व आदिवासियों की समानता व उत्थान की बात की। संन्यासी होते हुए उन्होंने विज्ञान, उद्योग, आधुनिक शिक्षा, कृषि तथा आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता पर बल दिया। यही

नहीं, उन्होंने संन्यासियों को मठों की चहारदीवारी से बाहर निकल कर समाज सेवा की ओर उन्मुक्त होने की राह दिखाई। रामकृष्ण मिशन के माध्यम से उन्होंने धर्म को समाज कार्य से जोड़ दिया। ऐसे मौलिक अन्वेषी और विविध आयामों से ओतप्रोत देशभक्त संत की समानता यदि किसी अन्य आधुनिक व्यक्ति से करनी हो तो वे महात्मा गांधी ही हो सकते हैं। एक स्वामी और दूसरा

महात्मा। उनके अनूठेपन का बड़ा प्रमाण यह तथ्य भी है कि केवल 39-40 वर्ष की अल्पायु में गुलाम देश का एक भगवाधारी संत देश, विदेश के प्रसिद्धतम व्यक्तियों की सूची में शामिल हो गया। स्वामी विवेकानंद ने स्वयं केवल एक पुस्तक लिखी, किंतु उनके व्यक्तित्व, कृतित्व एवं विचारों की व्याख्या करने वाली पुस्तकों की संख्या सैकड़ों में है और यह साहित्य विश्व की सभी प्रमुख भाषाओं में उपलब्ध है।





1893 में शिकागो की विश्व धर्म संसद में 11 सितंबर को दिया गया व्याख्यान उनके अनूठेपन को चरम सीमा तक ले जाता है। व्याख्यान से पहले प्रारंभिक संबोधन ने ही वहां उपस्थित विश्वभर के प्रतिनिधियों और अमरीकी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अद्वितीय अभिनंदन ने विवेकानंद के शिकागो व्याख्यान को ऐतिहासिक बना दिया। सामान्यतः यह माना जाता है कि स्वामी विवेकानंद विश्व धर्म संसद में हिंदू धर्म का प्रतिनिधित्व करने के लिए गए। किंतु, वास्तव में यह उनकी देशभक्ति थी, जो उन्हें विदेश में भारत की असली छवि प्रस्तुत करने को प्रेरित कर रही थी। वे जानते थे कि उस समय पश्चिम ही सारी दुनिया का सिरमौर है। वे चाहते थे कि पश्चिम के लोगों को भारत की वास्तविक सामर्थ्य से परिचित कराएं। उन्होंने सर्वप्रथम अपना यह विचार दक्षिण की यात्रा के दौरान मद्रास (चेन्नै) में अपने युवा शिष्यों के सामने बातों ही बातों में प्रकट किया। 1893 में हैदराबाद के महबूब कॉलेज में स्वामी जी ने बहुत ओजपूर्ण भाषण दिया, जिसके बाद उनके शिष्यों को विश्वास हो गया कि स्वामी जी विदेश में भी प्रभावपूर्ण ढंग से व्याख्यान दे सकते हैं। इसी सभा में उन्होंने विदेश जाने की अपनी इच्छा की स्पष्ट चर्चा की। उन्हीं दिनों खेतड़ी के महाराजा अजीत सिंह ने, जो स्वामी जी के परम भक्त थे और उत्तर भारत की उनकी यात्रा के दौरान उन्हें अपने महल में कई दिनों तक ठहरा चुके थे, स्वामी जी को किसी पारिवारिक समारोह के लिए अपने यहां आमंत्रित किया। खेतड़ी



में ही उन्हें विवेकानंद नाम दिया गया और महाराजा ने उन्हें गेरुआ काषाय और पगड़ी पहनाई, जो शिकागो यात्रा में उनका वेश बना। उन्होंने स्वामी जी की विदेश यात्रा खर्च के लिए पर्याप्त धन भी दिया। उनके प्रधानमंत्री स्वामी जी को विदा करने बंबई गए। मद्रास और हैदराबाद के उनके शिष्य भी धन लेकर बंबई पहुँच गए। दिनांक 31 मई, 1893 को स्वामी विवेकानंद ने एस. एस. पेनुंसलर नामक जहाज से पश्चिम के लिए प्रस्थान किया। आज भले ही हम शिकागो सम्मेलन में स्वामी विवेकानंद की भागीदारी को ऐतिहासिक और युगांतकारी घटना मान कर गौरवान्वित होते हैं, किंतु यह जान लेना भी जरूरी है कि सम्मेलन में भाग लेने के लिए उन्हें किस-किस तरह के कष्टों व मानसिक क्लेश से गुजरना पड़ा। जैसे ही उनका जहाज एशिया को लांघकर पश्चिम के तटों पर पहुँचा तो ठंड बढ़ने

लगी। लेकिन उनके पास ऊनी कपड़े नहीं थे। जुलाई में स्वामी जी शिकागो पहुँचे तो उन्हें ज्ञात हुआ कि धर्म सम्मेलन सितंबर के दूसरे सप्ताह में होना है। अनजान और महंगे शहर में दो महीने तक रहने से उनका सारा पैसा खत्म हो जाने का डर था। सम्मेलन के कार्यालय से उन्हें यह भी पता चला कि सम्मेलन में भाग लेने के लिए उन्हें किसी विशिष्ट व्यक्ति का परिचय-पत्र लाना होगा, क्योंकि विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों का पंजीकरण पहले ही पूरा हो चुका है। वे अपेक्षाकृत कम महंगे शहर बोस्टन में रहने के लिए चले गए।



संयोगवश जिस रेलगाड़ी से वे बोस्टन गए उसमें उनके साथ की सीट पर एक वृद्ध महिला केट सनबोर्न उनसे बातें करके इतनी प्रभावित हुई कि वह उन्हें अपने घर पर ले गई। केट सनबोर्न ने वहां अपने कई मित्रों का स्वामी जी से परिचय कराया। अपनी विद्वता, ज्ञान और विनयशील स्वभाव से विवेकानंद सभी को मंत्रमुग्ध कर देते थे। वहीं स्वामी जी की भेंट हारवर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जान हेनरी राइट से भी हुई, जिन्होंने सम्मेलन की प्रबंध समिति के प्रमुख को, जो उनके परिचित थे, पत्र लिख कर विवेकानंद को प्रतिनिधि का दर्जा देने का अनुरोध किया। प्रोफेसर राइट ने उन्हें परिचय पत्र भी दिया और समिति के अध्यक्ष डॉ. जॉन हेनरी बैरोज का पता तथा उनके नाम अपना पत्र दिया। इससे स्वामी जी धर्म सम्मेलन में भाग लेने को लेकर निश्चित हो गए। वापस शिकागो पहुँच कर जब विवेकानंद ने प्रोफेसर बैरोज के पते का कागज निकालने के लिए जेब में हाथ डाला तो वो नदारद था। कागज कहीं गिर गया था। स्टेशन से उतर कर वे जिस इलाके से गुजर रहे थे, वहां अधिकतर आबादी जर्मन लोगों की थी, इसलिए कोई भी उनकी बात नहीं समझ सका और वे दिन भर भूखे-प्यासे इधर-उधर भटकते रहे। उनकी वेशभूषा देख कर आसपास से गुजरने वाले उन पर हंसते भी रहे। बैरोज का पता ढूँढते हुए रात हो गई और वे निराशा और चिंता के कारण किसी होटल का भी पता नहीं लगा पाए। अनजान राहों पर भटकते हुए आधी रात के समय वे स्टेशन के यार्ड में पहुँच गए। ऊपर से कड़कड़ाती सर्दी पड़ रही थी। स्वामी जी ने देखा कि यार्ड में लकड़ी का एक बड़ा बक्सा पड़ा है। मरता क्या न करता, वे उसी बक्से में घुस गए और वहीं उन्होंने सर्दी से ठिठुरते हुए रात बिताई। किसे पता था लकड़ी के बक्से में भूखा-प्यासा रात बिताने वाला यह भारतीय साधु दो दिन बाद धर्म सम्मेलन में धूम मचा देगा। सुबह उठ कर वे हिम्मत करके फिर यात्रा पर निकले और एक संभ्रांत बस्ती में पहुँच गए। उन्होंने भारत में साधुओं की परंपरा के अनुसार भीख मांग कर पेट भरने का

रास्ता चुना। लेकिन कुछ लोग उनका मजाक उड़ाते तो कुछ दुत्कार कर घर का दरवाजा बंद कर देते। अंत में हार कर वे गली के किनारे पर बैठ गए। अचानक सामने वाले मकान से एक महिला उनके पास आई और उनसे पूछा कि आप धर्म सम्मेलन में भाग लेने आए हैं? स्वामी जी ने हां में उत्तर दिया तो श्रीमती जार्ज-डब्ल्यू हेल नाम की वह महिला उन्हें आदर के साथ अपने घर में ले गई। स्वामी जी ने वहां स्नान किया, खाना खाया और आराम किया। जब श्रीमती हेल को स्वामी जी ने अपनी विषम स्थिति की जानकारी दी तो वह भद्र महिला स्वयं उन्हें धर्म सम्मेलन के कार्यालय में ले गई और आयोजकों ने प्रोफेसर राइट का परिचय-पत्र पाकर स्वामी जी को प्रतिनिधि के रूप में सम्मेलन स्थल में भाग लेने की अनुमति दे दी। उन्हें सम्मेलन स्थल पर रहने के लिए कमरा भी मिल गया।

उस दिन 10 सितंबर, रविवार था और अगले दिन 11 सितंबर सोमवार को धर्म सम्मेलन का उद्घाटन होना था। शिकागो के 'आर्ट इंस्टीट्यूट' में आयोजित धर्म सम्मेलन में सभी धर्मों के बड़े-बड़े नेता मौजूद थे। भारत से भी 4-5 पंजीकृत प्रतिनिधि सम्मेलन में भाग ले रहे थे। विवेकानंद किसी भी संगठन की ओर से मनोनीत नहीं थे। उद्घाटन सत्र के पश्चात् प्रतिनिधियों के व्याख्यान होने लगे। सम्मेलन के सभापति ने कई बार विवेकानंद का नाम पुकारा, किंतु वे मना करते रहे। उन्हें हिम्मत नहीं हो रही थी क्योंकि सभी लोग अपने व्याख्यान तैयार करके आए थे और लिखित भाषण पढ़ रहे थे। सभापति के बार-बार आग्रह पर अंततः शाम को स्वामी जी भाषण देने के लिए उठे। सभा में बैठे असंख्य श्रोताओं पर नजर दौड़ाने और कुछ पल मन ही मन गुरु और मां काली का स्मरण करने के बाद विवेकानंद ने अपने भाषण का प्रारंभ करते हुए अपनी ओजपूर्ण वाणी में कहा, "सिस्टर्स एंड ब्रदर्स आफ अमेरिका!" इससे पहले कि वे अगला वाक्य बोलते आत्मीयता और स्नेह से सिक्त इन पांच शब्दों ने सम्मेलन में उपस्थित सभी लोगों



को रोमांचित कर दिया और समूचा सभाकक्ष तालियों की गड़गड़ाहट से गूँजे लगा। ऐसा आत्मीयतापूर्ण पारिवारिक संबोधन अमेरिकावासियों के लिए एकदम नया अनुभव था। सभी श्रोता और वक्ता अपनी सीटों पर खड़े होकर 30 साल के इस युवा भारतीय संन्यासी का कई मिनट तक अभिनंदन करते रहे। स्वामी जी ने अपने संक्षिप्त भाषण में भारत और हिंदू धर्म की महानता का बखान किया और कई उदाहरण और दृष्टांतों से अपना भाषण रोचकता के साथ प्रस्तुत किया। इसके बाद तो वे धर्म सम्मेलन के हीरो और सबसे लोकप्रिय वक्ता बन गए। जब भी आयोजकों को लगता कि श्रोता बोर हो रहे हैं और हाल से जाने लगे हैं तो वे स्वामी जी को बोलने के लिए बुला लेते और श्रोता अपनी सीटों पर लौट आते। 17 दिन के इस सम्मेलन में विवेकानंद ने कई बार व्याख्यान दिया, किंतु उनका मुख्य भाषण 19 सितंबर को हुआ, जिसका विषय था, 'हिंदू धर्म'। यह भाषण वे लिख कर लाए थे। इस विस्तृत भाषण में उन्होंने हिंदू धर्म की व्युत्पत्ति, विकास और बुनियादी सिद्धांतों की व्याख्या की। वेदांत दर्शन का विवेचन करते हुए उन्होंने निष्कर्ष दिया कि हिंदू धर्म सभी धर्मों में समन्वय की बात करता है। शिकागो में किए गए जयघोष ने विवेकानंद को अमरीका का चहेता बना दिया। धर्म सम्मेलन के दौरान स्वामी विवेकानंद के बड़े-बड़े चित्र और बैनर सड़कों पर दिखाई देने लगे। सम्मेलन समाप्त होने पर जगह-जगह उनके व्याख्यान होने लगे। वेदांत और भारतीय चिंतन के लिए इस वातावरण को अनुकूल पाकर विवेकानंद ने वहां योग और वेदांत की शिक्षा प्रारंभ कर दी और अनेक शिष्यों को संन्यासी भी बनाया।

कई विद्वान, प्रोफेसर और बड़े-बड़े कलाकार उनके भक्त बन गए। स्वामी जी की देशभक्ति, साहस और निष्पक्षता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि ईसाइयों के गढ़ अमेरिका में विचरते हुए भी उन्होंने भारत में ईसाई मिशनरियों के कारनामों की खुल कर निंदा की। उन्होंने स्पष्ट कहा कि भारत

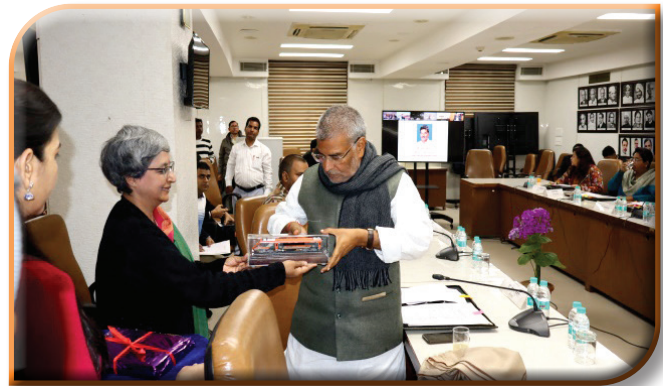
को धर्म की नहीं, विज्ञान, राजनीति, प्रशासन और उद्योग की शिक्षा की आवश्यकता है। स्वामी जी की लोकप्रियता और सम्मान से केवल अमेरिकी धर्माचार्यों को ही नहीं, भारत के कुछ धर्म ध्वजों को भी ईर्ष्या हुई और उनके चरित्र हनन का अभियान चलाया गया। किंतु विवेकानंद के चरित्र, स्वभाव, व्यक्तित्व और चिंतन की श्रेष्ठता के सामने ये सभी ओछे प्रयास विफल हो गए। स्वामी जी चार वर्षों तक अमेरिका और ब्रिटेन तथा अन्य पश्चिमी देशों में घूमते रहे और उन्होंने वहां अनेक आश्रम तथा योग केंद्र स्थापित किए। उनके बहुत से पश्चिमी शिष्यों ने भारत को अपनी कर्मभूमि बनाया और अपना जीवन वेदांत प्रचार तथा भारत सेवा को समर्पित कर दिया। मार्ग्रेट नोबल यानी भगिनी निवेदिता जैसी भारत भक्त महिला ब्रिटेन से यहां आईं। वह विवेकानंद की मानसपुत्री कहलाईं। उन्होंने पूर्णतया भारतीय नारी का जीवन जिया तथा स्त्री शिक्षा के प्रसार के साथ-साथ देश के स्वतंत्रता संग्राम में भी भाग लिया। शिकागो जयघोष स्वामी जी के जीवन का प्रस्थान बिंदु बन गया, जहां से उनकी भारत निर्माण की अजेय यात्रा प्रारंभ हुई। पश्चिम में मिली प्रसिद्धि से भारत में उनके सम्मान तथा स्वीकार्यता में एकाएक वृद्धि हो गई। पहले जो लोग उनका मजाक उड़ाते थे, वे उन्हें गंभीरता से लेने लगे। इस नई मान्यता से उनका आत्म-विश्वास दृढ़ हुआ और अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस का सपना पूरा करने के लिए उन्होंने रामकृष्ण मठ तथा रामकृष्ण मिशन की स्थापना की और समाजसेवी संन्यासियों की समर्पित मंडली तैयार की। स्वामी विवेकानंद सचमुच अनूठे देशभक्त संत थे, जिन्होंने परंपरा और आधुनिकता, पूर्व और पश्चिम, धर्म और कर्म, संन्यास एवं समाज सेवा, अध्यात्म व विज्ञान को एक साथ साधते हुए देश-विदेश में नई चेतना का संचार किया, जो शिक्षित-अशिक्षित, अमीर-गरीब, युवा-वृद्ध, पुरुष-नारी सबको एक साथ रास आईं।

सुभाष सेतिया
द्वारका, नई दिल्ली



रेलवे हिंदी सलाहकार समिति की 62वीं बैठक की झलकियां

रेलवे हिंदी सलाहकार समिति की 62वीं बैठक का आयोजन दिनांक 18 फरवरी, 2026 को माननीय रेल राज्य मंत्री (आर) श्री रवनीत सिंह जी की अध्यक्षता में रेल भवन के विचार सभागार में किया गया, जिसमें माननीय रेल राज्य मंत्री श्री वी. सोमन्ना जी के साथ-साथ रेलवे हिंदी सलाहकार समिति के सभी सदस्यों ने भाग लिया। महानिदेशक (मानव संसाधन) श्रीमती अरुणा नायर ने सभी सदस्यों को वंदे भारत रेलगाड़ी की प्रतिकृति एवं शॉल देकर सम्मानित किया।





रेलवे हिंदी सलाहकार समिति की 62वीं बैठक की झलकियां





रेलवे हिंदी सलाहकार समिति की 62वीं बैठक की झलकियां





संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा रेल कार्यालयों के निरीक्षण की झलकियां





संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा रेल कार्यालयों के निरीक्षण की झलकियां





संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा रेल कार्यालयों के निरीक्षण की झलकियां





रेलवे बोर्ड में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 157वीं बैठक की झलकियां

अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड की अध्यक्षता में दिनांक 26 दिसम्बर, 2025 को रेल भवन में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 157वीं बैठक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड ने हिन्दी की प्रगति की समीक्षा की तथा राजभाषा पत्रिका 'रेल राजभाषा' के 143वें अंक का विमोचन किया। बैठक की कुछ झलकियाँ :-





रेल मंत्री राजभाषा शील्ड/ट्रॉफी पुरस्कार-2024 वितरण की झलकियां





रेल मंत्री राजभाषा शील्ड/ट्रॉफी पुरस्कार-2024 वितरण की झलकियां





क्षेत्रीय रेलों/उत्पादन इकाइयों/प्रशिक्षण संस्थानों/उपक्रमों के उप महाप्रबंधकों (राजभाषा), वरिष्ठ राजभाषा अधिकारियों/ राजभाषा अधिकारियों की बैठक की झलकियाँ

अपर सदस्य (मानव संसाधन) की अध्यक्षता में क्षेत्रीय रेलों/उत्पादन इकाइयों/प्रशिक्षण संस्थानों/उपक्रमों में राजभाषा के प्रयोग-प्रसार को बढ़ावा देने तथा निगरानी रखने के उद्देश्य से सभी क्षेत्रीय रेलों/उत्पादन इकाइयों के उपमहाप्रबंधकों (राजभाषा)/वरिष्ठ राजभाषा/ राजभाषा अधिकारियों की रेल भवन के विचार सभागार में दिनांक 12 दिसम्बर, 2025 को आयोजित बैठक की कुछ झलकियाँ :-





आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना में आयोजित अखिल रेल हिंदी प्रतियोगिता-2024 की झलकियां

रेल कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग-प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से तथा कर्मचारियों में हिंदी में काम करने की रुचि उत्पन्न करने के लिए रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) प्रतिवर्ष अखिल रेल स्तर पर हिंदी निबंध, हिंदी वाक तथा हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन करता है। वर्ष 2024 की इन प्रतियोगिताओं का आयोजन दिनांक 7 से 9 अक्टूबर, 2025 तक आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना, रायबरेली में किया गया। प्रस्तुत हैं इस कार्यक्रम की कुछ झलकियां :-





रेलवे बोर्ड में आयोजित जयन्ती कार्यक्रम की झलकियां

दिनांक 26 नवंबर, 2025 को रेल भवन के सम्मेलन कक्ष में डॉ. हरिवंश राय बच्चन एवं श्रीमती शिवानी की संयुक्त जयन्ती का आयोजन किया गया एवं उनकी कृतियों एवं रचनाओं की प्रदर्शनी लगाई गई। इस अवसर पर व्याख्यान के लिए आमंत्रित प्रोफेसर सुश्री गरिमा श्रीवास्तव, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय एवं कुमार अनुपम, संपादक साहित्य अकादमी द्वारा लेखकों के जीवन एवं कृतित्व पर विचार व्यक्त किए गए।





ऊर्जा संरक्षण और भारतीय रेल

भारत जैसे विकासशील देश में ऊर्जा संरक्षण आज की सबसे बड़ी आवश्यकताओं में से एक है। बढ़ती जनसंख्या, औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के कारण ऊर्जा की मांग लगातार बढ़ रही है। ऐसे में प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव कम करने और पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए ऊर्जा संरक्षण अत्यंत आवश्यक हो गया है। भारत की जीवनरेखा कही जाने वाली भारतीय रेल इस दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। रेलवे ने ऊर्जा संरक्षण को प्राथमिकता देते हुए कई प्रभावी और नवाचारी कदम उठाए हैं।

भारतीय रेल दुनिया के सबसे बड़े रेल नेटवर्कों में से एक है। प्रतिदिन करोड़ों यात्री और विशाल मात्रा में माल ढोने के कारण रेलवे ऊर्जा का बड़ा उपभोक्ता भी है। इसी कारण रेलवे द्वारा ऊर्जा संरक्षण के प्रयासों का प्रभाव बहुत व्यापक होता है। रेलवे ने यह समझ लिया है कि यदि उसे भविष्य में टिकाऊ और पर्यावरण-अनुकूल परिवहन प्रणाली बनना है, तो ऊर्जा के पारंपरिक स्रोतों पर निर्भरता कम करनी होगी।

ऊर्जा संरक्षण की दिशा में रेलवे का सबसे बड़ा कदम विद्युतीकरण है। पहले जहां अधिकांश रेलगाड़ियाँ

डीजल इंजन से चलती थीं, वहीं अब तेजी से रेलवे लाइनों का विद्युतीकरण किया जा रहा है। इलेक्ट्रिक रेलगाड़ियाँ डीजल रेलगाड़ियों की तुलना में कम प्रदूषण फैलाती हैं और अधिक ऊर्जा-कुशल होती हैं। इससे न केवल ईंधन की बचत होती है, बल्कि कार्बन उत्सर्जन में भी भारी कमी आती है। इसके साथ-साथ रेलवे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की ओर भी तेजी से बढ़ रहा है। रेलवे स्टेशनों, कार्यालयों और वर्कशॉप्स की छतों पर सोलर पैनल लगाए जा रहे हैं। कई रेलवे स्टेशन अब पूरी तरह सौर ऊर्जा से संचालित हो रहे हैं। इससे बिजली की लागत कम होती है और स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा मिलता है। कुछ स्थानों पर रेलवे ने पवन ऊर्जा का भी उपयोग शुरू किया है, जो ऊर्जा संरक्षण की दिशा में एक सराहनीय पहल है। रेलवे ने अपनी ट्रेनों और स्टेशनों में ऊर्जा-कुशल उपकरणों का उपयोग भी बढ़ाया है। पारंपरिक बल्बों की जगह अब एलईडी लाइट्स का प्रयोग किया जा रहा है, जो कम बिजली खपत करती हैं और अधिक समय तक चलती हैं। कोचों में ऊर्जा-कुशल पंखे, एसी सिस्टम और स्वचालित बिजली नियंत्रण प्रणालियाँ लगाई गई हैं, जिससे अनावश्यक ऊर्जा की बर्बादी रोकी जा सके।





एक और महत्वपूर्ण कदम है रीजेनरेटिव ब्रेकिंग सिस्टम का उपयोग। इस प्रणाली में जब रेलगाड़ी ब्रेक लगाती है, तो उत्पन्न ऊर्जा वापस विद्युत ग्रिड में भेज दी जाती है या अन्य रेलगाड़ियों द्वारा उपयोग में लाई जाती है। इससे ऊर्जा की बचत होती है और कुल बिजली खपत कम होती है। यह तकनीक आधुनिक और तेज रेलगाड़ियों में विशेष रूप से उपयोग की जा रही है। भारतीय रेल ने ऊर्जा ऑडिट और निगरानी प्रणालियाँ भी लागू की हैं। इसके माध्यम से यह पता लगाया जाता है कि ऊर्जा कहाँ और कैसे खर्च हो रही है तथा किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है। कर्मचारियों को भी ऊर्जा संरक्षण के प्रति जागरूक किया जा रहा है, ताकि वे दैनिक कार्यों में ऊर्जा की बचत को अपनाएँ।

माल परिवहन के क्षेत्र में भी रेलवे ऊर्जा संरक्षण को बढ़ावा दे रहा है। सड़क परिवहन की तुलना में रेल परिवहन अधिक ऊर्जा-कुशल होता है। अधिक से अधिक माल को रेल के माध्यम से ढोने से ईंधन की बचत होती है और प्रदूषण कम होता है। यह देश की अर्थव्यवस्था और पर्यावरण-दोनों के लिए लाभकारी है। इन सभी प्रयासों के परिणामस्वरूप भारतीय रेल न केवल अपनी परिचालन लागत कम कर रहा है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। ऊर्जा संरक्षण की दिशा में उठाए गए ये कदम भारत को हरित और सतत विकास की ओर ले जाने में सहायक हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि ऊर्जा संरक्षण की दिशा में भारतीय रेल के कदम अत्यंत सराहनीय और प्रेरणादायक हैं। यदि भविष्य में भी रेलवे इसी तरह तकनीक, नवाचार और जागरूकता के माध्यम से ऊर्जा संरक्षण को बढ़ावा देता रहा, तो वह न केवल देश की प्रगति में योगदान देगा, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वच्छ और सुरक्षित पर्यावरण भी सुनिश्चित करेगा।

अभिषेक कुमार प्रसाद

कनिष्ठ अनुवादक, पूर्व रेलवे कोलकाता

बाल कविता

मेंढक और अजगर



निकल ताल से एक मेंढकी,
ने मन में यह ठानी।
मौसम अब हो गया सुहाना,
कुछ कर लें शैतानी।

टर्-टर् कर राग भैरवी,
लगी जोर से गाने।
सुनकर मेंढक राजा निकले,
लगे खूब टर्नने।

निकल देख राजा को अपने,
मेंढक बाहर आए।
बिजली चमके बादल गरजे,
बारिश धूम मचाए।

टर्-टर् आवाज सुनी जब,
नींद खुली अजगर की।
निकल पेड़ से ली अंगड़ाई,
त्याग छांव तरुवर की।

देखा जब अजगर को सबने,
भूल गए टर्नने।
उछल-उछल कर कूद गए सब,
अक्ल लगी ठिकाने।

डॉ. कमलेन्द्र कुमार

रावगंज, कालपी, जिला जालौन, उत्तर प्रदेश



जलती दोपहर

तीन दिनों तक उसने रोज थोड़ा-थोड़ा कर के अलमारी के सारे बर्तन मांज कर चमका दिए थे और अलमारी को झाड़ू-पोंछ कर फिर से करीने से सजा दिए थे। कमरे के सारे जाले हटाए। फर्श को साबुन के पानी से रगड़-रगड़ कर साफ किया। चादर और दो लिहाफ अपने हाथों से धोए। कौन जाने, वे लोग शायद रात को रुक जाएं, तो उन्हें बिछाने और ओढ़ने के लिए चाहिए होंगे। और अगर लिहाफ में जरा-सा भी दाग होता, तो ओढ़ने वाले को बुरा लगता।

सुबह

चार बजे ही वह उठ गई थी और घर का बहुत-सा काम निपटा चुकी थी।

उन्होंने समय नहीं बताया था, बस साढ़े नौ बजे के बाद किसी भी समय आने की बात कही थी। सात-आठ साल बाद वे लोग इधर आ रहे थे, इसलिए बसों के समय की उन्हें खास जानकारी नहीं थी। ऊपर से उन्हें कई जगह जाना भी था, इसलिए निश्चित समय नहीं बता सके थे। उधर से पहली बस साढ़े नौ बजे चलती थी, फिर हर घंटे, डेढ़ घंटे में आती थी। उन्हीं में से किसी बस से वे आ सकते थे।

खाने के बारे में कुछ लिखा नहीं था, लेकिन आएंगे

तो खाना तो खाएंगे ही। उन्हें क्या पसंद है, उसे पता नहीं था। वह तो आज पहली बार उन्हें देखने वाली थी। उसने पति और सास से पूछा, पर दोनों कुछ बता नहीं सके थे। इसलिए उसने सूजी का हलवा और दहीवड़े बनाने का निश्चय किया। बहुत-सी दाल पीसनी थी, वह सुबह उठकर पीस चुकी थी। दो सब्जियां, दाल, चावल और तीन-चार तरह के सलाद बनाए थे। छोटे नैपकिनों के कोनों पर खुद की कढ़ाई थी। उन्हें निकाल कर हाथ पोंछने के लिए रख दिया था। हाथ धोने के लिए नया



साबुन निकाला और नौ बजे फिर एक बार झाड़ू लगा दिया था।

घर भूतल पर था और हवा के साथ बहुत धूल अंदर आ जाती थी, इसलिए बार-बार सफाई करनी पड़ती थी। रोज तो वह दो बार झाड़ू लगाती थी, पर आज दस बजे तक तीन बार लगा चुकी थी।

साढ़े दस होने को आए थे। वह नहा-धो कर तैयार हो गई थी। गहरे केसरिया रंग की, पीले किनारे वाली साड़ी पहनी थी। उसे लगता था कि यह साड़ी उस पर खूब फबती है। एक बार उसने पति से पूछा भी था, पर उन्हें इन बातों में खास रुचि नहीं थी। उन्होंने बस 'हूँ' कहा और अखबार पढ़ते रहे। सास बहुत



बूढ़ी और बीमार थीं, उनसे यह पूछना कि कौन-सी साड़ी उस पर अच्छी लगती है, अटपटा लगता था। सास के पास वह अक्सर बैठ कर रामायण या भागवत की कथाएं पढ़ती थी। उसे यह सब पढ़ना पसंद है या नहीं, यह वह भूल चुकी थी। रोज पढ़ना पड़ता था, इसलिए पढ़ती थी। कभी-कभी भजन भी गा कर सुनाती थी। उसका गला कैसा है, यह किसी से जानने की उसे बहुत इच्छा होती थी, पर वह बहुत संकोची थी। पति से भी नहीं पूछ पाती थी कि मैं कैसा गाती हूं। पति ने शायद ही कभी ध्यान से सुना हो और सास तो सुनते-सुनते सो जाती थीं या फिर राम-नाम की महिमा बताने लगती थीं।

पर आज मान लो कि वे लोग आए, आंगन में बैठे हों और रंजना कहे, “भाभी, आपको गाना आता है? कुछ गाइए ना।” और शायद वह गाए और रंजना कहे, “वाह, आप की आवाज तो बहुत मीठी है!” या फिर कहे, “भाभी, यह साड़ी कहां से ली? रंग कितना सुंदर है।”

दरवाजे-खिड़कियां कपड़े से पोंछते हुए वह मुस्करा पड़ी, कैसे दिवास्वप्न देखता है मन।

बारह बज गए, फिर भी वे लोग नहीं आए। उसने सास और पति को खाना खिला दिया। खुद नहीं खाया। बुरा लगता, मेहमान आए हों और घर की गृहिणी खा चुकी हो।

अचानक उसे याद आया कि सास की खांसी की दवा तो लाना ही भूल गई। शुक्रवार से दवा खत्म हो गई थी। शनिवार को किसी तरह जाना नहीं हो पाया। कल रविवार था, दवा मिलती नहीं। कल दोपहर उन्हें बहुत खांसी आई थी। आज भी आए और उस वक्त वे लोग होंगे तो सास ठीक से बात भी नहीं कर पाएंगी। दवा लानी चाहिए। पति घर पर थे, पर उनसे कहने के बजाय खुद जाना बेहतर लगा। ऊपर से वे लोग आए तो पति को घर पर होना चाहिए, क्योंकि उसने उन्हें पहले कभी नहीं देखा था।

वह तुरंत चप्पल पहन कर निकल पड़ी। चलते-चलते

जब पैर जले, तब याद आया कि चप्पल बहुत घिस चुकी थीं। मरम्मत करानी थी या नई लेनी थी, भूल गई थी। काम क्या कम होते हैं!

धूप बहुत तेज थी। बीच में पीपल के नीचे मोची बैठा दिखा, पर रुकती तो देर हो जाती। वैद्य अगर काम निपटा कर आराम करने चले गए तो फिर घंटों बाद मिलते। इसलिए वह रुकी नहीं, जलते पैरों से चलती रही।

वैद्य के घर पहुँची तो उसे राहत मिली। बरामदे में एक बेंच पर बैठी, बहुत अच्छा लगा। वर्षों से वह दोपहर की धूप में जलते पैरों से चलती रही थी, आज छाया मिली थी। बरामदे और एक कमरा दवा व मरीजों के लिए था। बाहर नीम का आंगन था, तेज दोपहर में भी ठंडी हवा चल रही थी। झपकी लेने का मन हुआ, पर अच्छे घर की बहू, वैद्य के यहां बेंच पर सो जाए, अजीब लगता। वह पीठ सीधी करके आंखें जबरन खुली रखे बैठी रही।

वैद्य किसी गंभीर मरीज को देखने गए थे। एक पल को उसे लगा कि लौट जाऊं, शायद मेहमान आ गए हों। फिर सोचा कि दवा नहीं ले गई तो बेचारी मांजी बहुत परेशान होंगी। मेहमानों से ढंग से बात भी नहीं कर पाएंगी। घर में शांति नहीं रहेगी। इसलिए वह वहीं बैठी रही।

आखिर दो घंटे बाद वैद्य आए। रविवार के बाद सोमवार था, आज मरीज ज्यादा थे। उसकी बारी आते-आते काफी देर हो गई। दवा ले कर वह फिर छाया से निकल कर जलते रास्ते पर चल पड़ी। अब भूख भी लग रही थी।

काश, घर पहुँचते ही सब आ जाएं, तो जल्दी से खाना खा सकें!

आधे रास्ते में पड़ोसन मिल गई। उसने पूछा, “अरे, तू कहां गई थी इस धूप में?”

“वैद्य के यहां, मांजी की खांसी की दवा लेने।”

“पर तेरे यहां तो मेहमान आए थे!”

“आ गए?” वह घबरा गई।



“आए भी और चले भी गए। गाड़ी से आए थे, ज्यादा वक्त नहीं था। फिर भी लगभग एक घंटा बैठे थे।”

“खाना?” उसने उदासी से पूछा।

“नहीं, खाना नहीं खाया, नाश्ता किया। उसी वक्त मैं भी पहुँची थी। चने का आटा चाहिए था, मांजी ने रोक लिया। मैंने ही हलवा और दहीवड़े दिए।”

“दही-बड़े उन्हें पसंद आए?”

“हां, दोबारा मांगे।”

“और मांजी ने क्या कहा?”

“कहा कि आज दूध अच्छा था, इसलिए दही अच्छा जमा।”

उसने अपने खुरदरे हाथों की ओर देखा, जो बर्तन मांजने से सख्त हो गए थे। ऐसे हाथों से सास का सिर दबाने में उन्हें तकलीफ होती होगी। उसे शर्म आई।

“मेरे बारे में किसी ने कुछ पूछा?”

“हां, रंजना ने पूछा, भाभी कहां हैं? मांजी ने कहा कि अभी तो यहीं थीं, कहीं गई होंगी।”

उसकी आंखों में आंसू भर आए। लगा कि अगर इन्हें बहने दिया तो बाढ़ आ जाएगी। उसने आंसू रोक लिए।

उसे याद आया कि सास के पैरों की खुजली के लिए मेहंदी की राख दही में मिला कर लगाने को कहा गया था। वैद्य के यहां मेहंदी होगी। शाम को फिर आने से अच्छा है कि अभी ही लौट जाए।

वह मुड़ी और वैद्य के घर की ओर चल पड़ी। उसे लगा कि आज की दोपहर कुछ ज्यादा ही जल रही है। जैसे रास्ते पर किसी ने जलते अंगारे बिछा दिए हों। छाया का विचार उसे थोड़ी ठंडक देता रहा और वह तेज कदमों से चलती चली गई।

स्नेहा सिंह
नोएडा, (उ.प्र.)

सानिध्य

प्राकृतिक परिवेश का
छांवदार वृक्ष का, हरे भरे पौधों का
चह-चहाते पंछियों का, नरम नरम घास का
कल-कल बहती नदी का, उससे आती प्राण-वायु का
तारों भरे आकाश का, चांदनी रात का,
बहुत सुहाता है- मन को

सानिध्य-

बचपन की भूली बिसरी यादों का
अपने शहर जौनपुर का, वहां बिताये लम्हों का
रिश्तों और मित्रों के, खट्टे मीठे जज्बातों का

तजुबों का, अहसासों का
तमाम- कही अनकही बातों का,
ऊर्जित रखता है- मन को

सानिध्य-

अपने कार्यालयी परिसर का
उसके आस पास के वातावरण का
खुद को मिली भूमिका का, उसके सफल निर्वहन
का

कुछ ‘अर्थपूर्ण’ योगदान, दे पाने के अहसास का
संतुष्टि देता है- मन को

सानिध्य-

अपनी मनपसंद पुस्तकों का, विचारप्रेरक लेखों का
उनमें से ‘अपने निष्कर्ष’ निकालने का
ब्रह्माण्ड के तथ्य, जानने समझने का
अपनी लिखीं कविताओं को, बार बार पढ़ने का,
आह्लादित करता है- मन को

सानिध्य-

अपने परम प्रिय प्रभू का
उनकी छत्र छाया में जीवन बिताने का
उनके पास बैठने का, उनसे बतियाने का
कुछ अपनी कहने का, कुछ उनकी सुनने का,
भाता है- मन को ।

अतुल कुमार
संयुक्त निदेशक, रेलवे बोर्ड



प्रशंसा में नहीं प्रसन्नता में जिएं : स्वयं को स्वयं से स्वयं के द्वारा प्यार करना सीखो

आज के भागदौड़ भरे जीवन में खुद को खुश और स्वस्थ रखने का बेहतरीन तरीका है, सेल्फ लव यानी खुद से प्यार करना। यह कोई स्वार्थ नहीं, बल्कि खुद का सम्मान, स्वीकार और देखभाल करना है। जब आप खुद से प्यार करते हैं तो तन और मन दोनों फिट और फाइन रहते हैं। नेशनल हेल्थ मिशन सेल्फ लव के बारे में जानकारी देते हुए बताता है स्वयं का सम्मान और ध्यान रखना सिर्फ एक आदत नहीं, बल्कि भीतर से मजबूती देने वाला अहसास है। याद रखें, मदद लेना भी खुद के प्रति प्रेम और सम्मान का प्रतीक है। इसके लिए खुद की तारीफ करे, जरूरत पड़े पर मदद ले, आराम करे और खुद को प्राथमिकता दें। खुद से किया गया प्यार सबसे अच्छा प्यार है, जो आपको मजबूत, खुश और स्वस्थ बनाता है।

‘सेल्फ लव’ का मतलब है खुद को अपनी कमियों, ताकतों, गलतियों और उपलब्धियों के साथ वैसे ही स्वीकार करना जैसे आप हैं, खुद के प्रति विनम्र, रहना, नकारात्मक आत्म आलोचना को कम करना, अपनी जरूरतों को प्राथमिकता देना और खुद को प्रोत्साहित करना इसमें शामिल है। यह खुद को दोष देने के बजाय खुद को माफ करना, खुद की तुलना दूसरों से न करना और अपनी खुशियों को संजोना सिखाता है।

विशेषज्ञों के अनुसार, सेल्फ लव के कई फायदे हैं। यह मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है। इससे तनाव, चिंता और घबराहट की समस्या दूर होती है, नकारात्मक सोच कम होने से मन शांत रहता है। खुशी और ग्रेटिट्यूड बढ़ता है। इससे आत्मविश्वास और रेजिलिएंस बढ़ता है। इससे खुद पर भरोसा





मजबूत होता है, जीवन की चुनौतियों का सामना आसानी से किया जा सकता है, विफलता से टूटने की बजाय मजबूत होकर उठते हैं।

जब खुद की अहमियत करते हैं तो दूसरों से भी रिश्ते मजबूत होते हैं। सेल्फ लव की वजह से दूसरों से भी स्वस्थ और संतुलित रिश्ते बनते हैं। यही नहीं शारीरिक स्वास्थ्य भी सुधरता है। सेल्फ लव से सेल्फ केयर की आदत पड़ती है, अच्छा खाना, व्यायाम, नींद और आराम इसमें शामिल होते हैं। इससे स्ट्रेस हार्मोन कम होते हैं, इम्यून सिस्टम मजबूत होता है, दिल की बीमारियां और अन्य समस्याओं का खतरा घटता है। वहीं खुद को महत्व देने से जीवन में सकारात्मक बदलाव आते हैं। लक्ष्य हासिल करने की प्रेरणा मिलती है और आप ज्यादा उत्पादक और संतुष्ट महसूस करते हैं।

“बहुत जीते हैं अतीत की याद लेकर बहुत जीते हैं, भविष्य का वाद लेकर बहुत ही कम है वे जीने वाले जो जीते हैं वर्तमान का स्वाद लेकर।”

एक कहावत है, ‘खुश रहो और 100 वर्ष जियो’ सारे संसार में किए गए शोध से यह बात सामने आई है कि खुशहाली और लंबी उम्र के बीच का यह रिश्ता सिर्फ कहावत ही नहीं सत्य तथ्य है।

“गुजरी हुई जिंदगी को कभी याद ना कर, तकदीर में जो लिखा है उसकी फरयाद मत कर, जो होगा वह होकर रहेगा, तू कल की फिकर में, अपनी आज की हंसी बर्बाद ना करा।” अतीत के बारे में अधिक मत सोचो यह आंसू लाता है भविष्य के बारे में अधिक मत सोचो यह भय लाता है आज के पल मुस्कराहट के साथ जिएं।

इंसान व्यर्थ ही भविष्य के बारे में सोच कर दुखी हो जाता है। जबकि सच्चाई यह है कि कल क्या होगा किसी को नहीं मालूम। लेकिन हर व्यक्ति को कठिन परिश्रम करना चाहिए जिससे कि उसको मनचाही सफलता मिल सके। परिस्थिति व्यक्ति के हाथ में नहीं होती लेकिन परिस्थिति उत्पन्न होने पर

किस तरह आगे बढ़ना है यह व्यक्ति की सूझबूझ पर निर्भर करता है इसलिए हमेशा कड़ी मेहनत करें स्वयं एवं भगवान पर भरोसा रखें, अगर वर्तमान में कठिन परिश्रम किया जाएगा तो भविष्य अपने आप जाएगा निम्न पंक्तियों को ध्यान से पढ़ें;

**वक्त से लड़कर जो नसीब बदल दे,
इंसान वही जो अपनी तकदीर बदल दे।**

कल क्या होगा कभी मत सोचो,

क्या पता कल वक्त खुद अपनी तस्वीर बदल दे।

हंस मरते हुए भी गाता है और मोर नाचते हुए भी रोता है यह जिंदगी का फंडा है, दुखों वाली रात नींद नहीं आती है और खुशी की रात कौन सोता है।

कनाडा के वैज्ञानिकों ने एक अनुसंधान में पाया है कि रोजाना की जिंदगी में की गई बातें व्यक्ति की उम्र व स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं देखने सुनने में यह बातें ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं लगती हैं किंतु हम गहराई व गंभीरता से लें तो हमें यह महसूस होगा कि शांत, सहज, सरल, तनाव रहित, प्रदूषण रहित वातावरण, पारिवारिक वातावरण, सुखद दांपत्य, जीवन सादा जीवन उच्च विचार से फिजूलखर्ची से दूर सीमित आवश्यकताएं शुद्ध सात्विक आहार से हम हमारे जीवन की अवधि को बढ़ा सकते हैं स्वस्थ प्रसन्न रह सकते हैं इसके विपरीत मद्यपान, मांसाहार, अनियमित जीवन, गलतसंगत, शोर-शराबा, दुखद दांपत्य जीवन इत्यादि ऐसी बातें हैं जिसके कारण हम अकाल मृत्यु को प्राप्त कर सकते हैं या दुखी रह सकते हैं अतः हमें चुनाव करना कि हम स्वस्थ प्रसन्न होकर कैसे जिएं;

1-कनाडा के वैज्ञानिकों ने एक अध्ययन में पाया कि किसी मेन रोड के किनारे न रहने से जिंदगी के ढाई साल बढ़ जाते हैं, क्योंकि मुख्य सड़क से गुजरने वाले वाहनों का शोर शराबे और प्रदूषण के कारण शांत जीवन में बाधा होती है नींद में व्यवधान होता है तथा यह कई जानलेवा बीमारियों का कारण बन जाता है।



2-वेल यूनिवर्सिटी द्वारा एक अध्ययन में यह बात सामने आई है कि सकारात्मक व आशावादी सोच वाले व्यक्ति स्वस्थ रहते हैं। इसके विपरीत निराशावादी नकारात्मक दृष्टिकोण व कुंठा ग्रस्त व्यक्ति औसतन 7/8 वर्ष कम जीते हैं दूसरी ओर खुशहाल व सुखद वैवाहिक जीवन से मिलने वाली प्रसन्नता जीवन के 9 साल बढ़ा देती है।

3- आंकड़ों से पता चलता है कि शहरी लोगों की तुलना में ग्रामीणों की औसत आयु 8 वर्ष अधिक होती है।

4-आज इस बात को बहुत कम लोग जानते हैं कि विचारों का स्वास्थ्य पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। यदि हम अस्वस्थ व बुरे विचारों को मन में स्थान देंगे तो उसका प्रभाव शरीर पर निश्चित रूप से पड़ेगा मन के विचारों का शरीर के विभिन्न अंगों पर अलग-अलग प्रभाव होता है। यदि मन में अत्यधिक स्वार्थ भावना है, ईर्ष्या के विचार है तो उसका लीवर पर प्रभाव पड़ता है यदि मन में जलने के विचार है तो हृदय पर बुरा प्रभाव पड़ता है मन में चिंता भय व षड्यंत्र का विचार हो तो वह हृदय रोगों के लिए उत्तरदायी है।

ऐसी पुस्तकें पढ़ें जो आप को प्रेरित करें और आपका उत्साह बढ़ाएं अपने मस्तिष्क को नियमित रूप से सकारात्मक और प्रेरणादायक सामग्री की खुराक दें

जितना आप सकारात्मक माहौल में समय बितायेंगे उतना ही आपके लिए बेहतर रहेगा।

5-अपने विचारों का अवलोकन करें वह आपके शब्द बनते हैं, अपने शब्दों पर निगरानी रखें वे आपकी क्रियाएं बनते हैं। अपनी क्रियाओं को जांचें वे आपकी आदत बनती हैं। अपनी आदतों को परखिये वे आपका चरित्र बनती हैं। आप किसी को बदल नहीं सकते



आप अपनी माता अपनी बहन अपने पिता भाई, मित्र व बॉस को भी नहीं। इसलिए सर्वप्रथम स्वयं को बदलो। आपकी भावनाएं आपके मनुष्य होने की निशानी है लेकिन इनका संतुलित होना आवश्यक है असंतुलित भावनाएं न सिर्फ आपकी दूसरे लोगों के साथ संबंधों को खराब करती हैं बल्कि आपके जीवन की गुणवत्ता को भी प्रभावित करती हैं।

6-जब तक आप अपने आप पर विश्वास नहीं करेंगे

तब तक दूसरों से अपनी तुलना करते रहेंगे और जलन व हीन भावना के शिकार हो जाएंगे। परिस्थितियां कैसी भी हो स्वयं में और अपनी क्षमताओं में विश्वास रखें। अपनी क्षमता को कम न आंके।

अपने जीवन की तुलना किसी के साथ ना करना चाहिए सूर्य और चंद्रमा के बीच कोई तुलना नहीं जब जिसका वक्त आता है वह चमकता है।



आप जैसे हैं वैसे ही खुद को स्वीकार करें, किसी की नकल करने या किसी के जैसा बनने का प्रयास ना करें। अपने आप से प्रेम करें और अपना सामान सामर्थ्य बढ़ाने के लिए सतत प्रयत्नशील रहें।

7-सुखद स्वस्थ प्रसन्न जीवन जीने के 3 उपाय हैं। भूत को याद मत करो, भविष्य की फरियाद मत करो और वर्तमान को बर्बाद मत करो। प्रसन्न रहने का सूत्र भी यही है क्योंकि भूत को लौटाया नहीं जा सकता भविष्य को लाया नहीं जा सकता और इसी कारण वर्तमान में जीने वाला प्रसन्न रहता है। इसे यूँ समझा जाए वर्तमान 'कैश पेमेंट' है भूतकाल 'बाउंस चेक' है भविष्य 'प्रॉमिसरी नोट' है इसलिए वर्तमान में जिएं।

8-क्षमा करना सीखें अगर आप किसी के लिए मन में दुर्भावना पालेंगे तो आप कड़वाहट से भर जाएंगे लेकिन अगर आप किसी को माफ कर सकते हैं , जिसने आपको गुस्सा दिलाया है तो यह उसके लिए ही नहीं आपके लिए भी एक सकारात्मक बात होगी आपको यह समझना चाहिए कि हर कोई ठीक उसी प्रकार से व्यवहार नहीं करेगा जैसा आप चाहते हैं।

9-अच्छे मित्र बनाएं नारिघंमम यूनिवर्सिटी के एक शोध के अनुसार जिन वयस्क लोगों के 10 दोस्त हैं वह अन्य लोगों की तुलना में अधिक खुश मित्र थे तथा तनाव रहित थे।

अपने सह कर्मियों की सफलता पर उनसे जलने से बेहतर है कि सफलता के लिए अपने प्रयासों को गति दी जायें, दूसरों से जलने से आपके हाथ सिर्फ दुःख और चिड़चिड़ापन ही आयेगा।

एक कवि ने कहा है

बहुत से लोग अपने दुखों के गीत गाते हैं,
दिवाली हो या होली केवल सदा मातम मनाते हैं।
मगर दुनिया उन्हीं की रागिनी पर झूमती है हरदम,
कि जो जलती चिता पर बैठकर वीणा बजाते हैं।
जीवन में उतार चढ़ाव तो हमेशा ही आते रहते हैं।

धूप के बाद छांव और दुख के बाद सुख यही जीवन का सार है। हमें इस बात को अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए जीवन में कोई भी चीज हमेशा एक समान नहीं रहती है। वक्त के साथ सब कुछ बदलता है किसी भी परिस्थिति में धैर्य नहीं खोना चाहिए क्योंकि अगर आज आपके ऊपर दुख का पहाड़ टूटा है तो भी यह वक्त चला जाएगा और अगर आज आप किसी चीज को लेकर बहुत खुश हैं तो भी यह वक्त गुजर जाएगा। इसलिए हमेशा खुद को एक समान रखने की कोशिश करें जिंदगी में कभी हार ना माने चलते रहें और अडिग होकर जीवन की राह में कदम बढ़ाते रहें।

आप प्रतिदिन यह महसूस करते होंगे कि एक दिन में ही सूर्य की तीन दशाएं होती है, सुबह बाल सूर्य, दोपहर में धधकता हुआ तथा शाम को अस्ताचल की ओर।

इस दुनिया में मौजूद हर किसी इंसान के जीवन में कुछ ना कुछ वेदना, तड़पन, दुख तो है। आपको खुद के आसपास जितने भी चेहरे नजर आते हैं उन सभी को कुछ ना कुछ तकलीफ या परेशानी जरूर होगी हर इंसान किसी ना किसी परेशानी से जूझ रहा है लेकिन असल मायने में वही इंसान जिंदगी जीना जानता है जो अपने दुख को नजरअंदाज करके सदैव जीवन में आगे बढ़ने का हुनर रखता है।

वो कभी अपने दुख का रोना नहीं रोता, एक बार तकलीफ में होने पर कदम भले ही डगमगा उठे लेकिन कदम को रुकने नहीं देना है। हालात कैसे भी हो बस चलते रहना ही जिंदगी है।

अभिमन्यु की तरह वीर बनो।

कृष्ण की तरह धर्म का साथ दो ॥

विदुर की तरह स्पष्टवादी शुभचिंतक बनो।

घटोत्कच की तरह धर्म कार्य में सहर्ष बलिदान दो।

अर्जुन की तरह अपनी बागडोर भगवान के हाथों में सौंप दो।



सुख चाहते हो तो देर रात तक जागना नहीं, शांति चाहते हो तो दिन में सोना नहीं, सम्मान चाहते हो तो व्यर्थ में बोलना नहीं और प्रेम चाहते हो तो अपना को छोड़ना नहीं।

10-वेदों में विनम्रता और शालीनता को मानव जीवन का आधार स्तंभ कहा गया है। ऋग्वेद में कहा गया है हम छोटे, बड़ों, युवाओं और वृद्धों सबके प्रति विनम्र बने। मनुस्मृति में कहा गया है अहंकार से मुक्त विनम्र जीवन आयु, विद्या, यश और बल में वृद्धि करता है और यही हमारी प्रसन्नता और खुशहाली को बढ़ाते हैं कहा भी गया है, 'विनम्रता मानवता का श्रृंगार है।'

जो व्यक्ति ईश्वर में भरोसा एवं विश्वास रखते हुए अपना जीवन जीता है, वह निश्चित रूप से आनंदमय जीवन व्यतीत करता है। अतः ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास एवं उसमें भरोसा रखना भी व्यक्ति को आनंद प्रदान करता है। सादा और संयमी जीवन भी आनंद प्रदाता होता है इसलिए सादा और संयमी व स्वस्थ जीवन जीने वाले व्यक्ति सुखी जीवन जीते हैं जबकि व्यसन, विलासिता, व मिथ्या प्रदर्शन एवं झूठी

शान के साथ जीने वाले व्यक्ति का जीवन दुख भरा ही होता है अतः इन सब से बचना ही हितकर है।

11- संतों का कहना है कि व्यसन बुराइयों का मूल है। व्यसन से व्यक्ति के अंदर आवेश तथा आवेग अधिक बढ़ता है, जो शारीरिक व मानसिक शक्ति नष्ट कर व्यक्ति को शक्तिहीन बना लेता है। व्यसन से मनुष्य के तन-मन में त्रिदोष पैदा होते हैं इसके फलस्वरूप व्यक्ति के अंदर उन्माद बढ़ता है। उसे धार्मिकता, तथा नैतिकता के अनुरूप जो कार्य नहीं करने चाहिए, वह वही करता है।

12-स्वस्थ भोजन का सबसे सरल मंत्र है ताजे तैयार खाद्य पदार्थ और मौसमी फलों का सेवन करना। आहार में नियमित ताजे खाद्य पदार्थ शामिल होने चाहिए, जिसमें ताजे फल और सब्जियां अपने शुद्धतम और बुनियादी रूप में आहार का एक अनिवार्य हिस्सा हो। नये शोध के अनुसार शाकाहारी होना हमारे शरीर के लिए बहुत अधिक फायदेमंद है।

13--जब भी थकान या चिंता सताए तो शांतिपूर्वक लेट जाए। अगर लेट नहीं सके तो कुर्सी पर बिल्कुल सीधे बैठिये, गहरी सांसे लीजिए और इसे छोड़िए। धीरे-

धीरे कोई भी कार्य करें मन लगाकर करें अर्थात कार्य में दिलचस्पी पैदा करें इससे थकान कम महसूस होगी और चिंताएं भी कम होगी। जब तक आपको दिल में विश्वास है कि आप सही हैं तब तक इस बात की चिंता ना करें कि लोग क्या कहेंगे। आपका दिल जो कहता है वही करें क्योंकि आलोचना तो हर हाल में होगी कुछ करेंगे तो भी होगी, नहीं करेंगे तो भी होगी।

14-संत विद्वानों का कहना है कि आलसी लोग भाग्य पर निर्भर रहते हैं लेकिन जो प्रयत्न करते हुए आगे बढ़ते हैं, भाग्य ही नहीं परिस्थितियां





भी उनका साथ देती हैं। हमें समझना होगा कि आलस्य के अंत में व्यक्ति को निराशा ही मिलती है क्योंकि आलस्य ऐसा राज रोग है जिसका आक्रमण होने पर कोई भी समझ नहीं पाता तथा उसका जीवन कभी सार्थक नहीं होता। यदि व्यक्ति के कर्म विपरीत दिशा की ओर जा रहे हैं तो भी कर्म से ही उनको सही दिशा दी जा सकती है।

15-मानसिक शांति के लिए ध्यान करें, ध्यान को मस्तिष्क की खुराक माना जाता है। ध्यान करने से मस्तिष्क में उन रसायनों का स्राव होता है जो इसे शांत रखते हैं। आपकी दिनचर्या कितनी भी व्यस्त हो प्रतिदिन 10 मिनट का समय ध्यान करने के लिए अवश्य निकालें। वैज्ञानिकों ने भी साबित किया है कि ध्यान हमारे मानसिक स्वास्थ्य के लिए चमत्कार कर सकता है।

सारांश रूप में यह कहा जा सकता है कि श्रम साध्य जीवन, सादा और संयमित जीवन, व्यसन, विलासिता रहित जीवन, आडंबर रहित जीवन, कृतज्ञता पूर्ण जीवन, उदारता पूर्ण जीवन निश्चित ही व्यक्ति के जीवन को आनंदमय व सफल बनाते हैं। इनके अतिरिक्त उद्देश्य लिए हुए जीवन कर्तव्य परायणता, लगन और ईश्वर में आस्था विश्वास श्रद्धा भी आनंदमय व सफल पूर्ण जीवन के महत्वपूर्ण घटक हैं।

प्रसन्न व खुश रहने का अंतिम सूत्र-

जीवन एक गणित है जिसमें मित्रों को जोड़ो, दुश्मनों को घटाओं, सुखों को गुणा करो व दुखों का विभाजन करो।

जीवन गणित है, सांसे घटती हैं, अनुभव जुड़ते हैं। अलग-अलग कोष्ठको में बंद हम बुनते रहते हैं। समीकरण लगाते रहते हैं, जबकि अंतिम सत्य शून्य है, इसलिए खुश रहो मस्त रहो।

अभय कुमार जैन

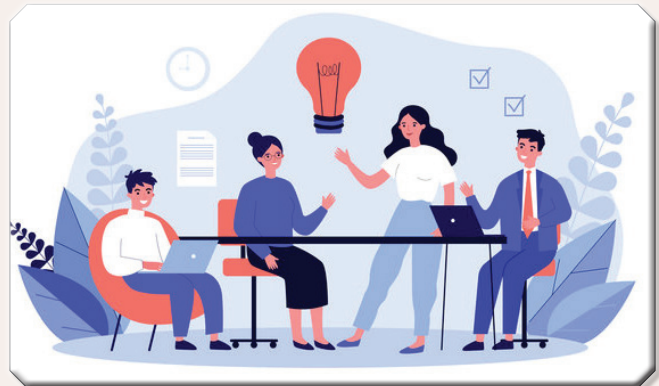
तृप्ति बंदा रोड, भवानी मंडी (राजस्थान)

दफ्तर वगैरह

जो जाते हैं हम जब भी दफ्तर वगैरह,
वहां मिलते हैं हमको अफसर वगैरह ।
जो करते अमल इनकी बातों पे अक्सर,
बना लेते हैं वो मुकद्दर वगैरह।
है कहने को बँगला बड़ा और गाड़ी,
परेशां तो हैं ये कलेक्टर वगैरह।
मियां इतने पे इतना इतरा रहे हो,
जमीं के हैं अंदर सिकंदर वगैरह।
वफादार कुर्सी का है ये जमाना,
दिखे ऊंची छत पे कबूतर वगैरह।
भरोसा तो करिए कभी हम पे साहिब,
बदल देंगे ये सारे मंजर वगैरह।
यूं काटो ना चक्कर किसी महजबी के,
कि बदनाम कर देंगे दिलबर वगैरह।
दिलाती शहरश दीन की राह मंजिल,
धरे रह गए थे वो लश्कर वगैरह।
'सहर' काम का ही तो है बोलबाला,
नहीं प्यासा मांगे समंदर वगैरह।।

विवेक कुमार गुप्ता

(उप मु. सिग. एवं दूर. सं. इंजी./मुख्या./पमरे)





हिन्दी साहित्य सृजन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका

इक्कीसवीं सदी के तकनीकी युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence & AI) मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन का वाहक बन चुकी है। शिक्षा, चिकित्सा, संचार, परिवहन, उद्योग, वित्त, प्रशासन और मनोरंजन के बाद अब साहित्य सृजन भी इससे अछूता नहीं रहा। विश्व साहित्य में एआई द्वारा रचित कविताएँ, कहानियाँ, पटकथाएँ और समीक्षाएँ चर्चा का विषय बन चुकी हैं; वहीं हिन्दी साहित्य भी इस वैश्विक परिवर्तन की धारा में प्रवेश कर चुका है। प्रसिद्ध भविष्यवेत्ता रे कुर्ज्वेल ने कहा है – “तकनीक मानव क्षमताओं का विस्तार करती है, उन्हें समाप्त नहीं करती।” यह कथन विशेषतः साहित्य के संदर्भ में सत्य प्रतीत होता है, क्योंकि एआई मनुष्य की कल्पनाशीलता को चुनौती नहीं देता, अपितु उसे नए उपकरण, नई गति और नई संभावनाएँ प्रदान करता है।

हिन्दी साहित्य सृजन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती जा रही है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और साहित्य के संबंधों पर विचार करते हुए हम देखते हैं कि वैश्वीकरण ने ‘विश्वग्राम’ और ‘विश्व बाजार’ का रास्ता खोल दिया है। जनजीवन में उपभोक्तावाद और बाजारवाद को नए रूप में

प्रतिष्ठित किया है। आज चैटजीपीटी और अन्य जेनरेटिव एआई टूल्स कविता, कहानी और निबंध लेखन में नए विषयों और शैलियों का सृजन कर रहे हैं। लेखक इन उपकरणों का उपयोग विषय विस्तार, समृद्ध शब्दावली तथा शैलीगत प्रयोगों के लिए कर रहे हैं, जिससे साहित्यिक सृजन में रोचकता, नवीनता और विविधता आ रही है। साहित्य की रचनात्मकता, ग्राह्यता, आस्वाद प्रक्रिया आदि पर अनेक दबाव और बदलाव महसूस किए जा रहे हैं। आगे क्या-क्या प्रभाव और परिवर्तन संभाव्य हैं, इसका पूर्वानुमान करना दुष्कर है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता क्या है?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता

(कृत्रिम बुद्धि, कृत्रिम प्रज्ञा, कृत्रिम मेधा), जिसको अंग्रेजी

में आर्टिफिशियल

इंटेलिजेंस (एआई) कहते

हैं। कृत्रिम बुद्धि के जनक के

रूप में जॉन मैकार्थी को माना जाता

है, जिन्होंने वर्ष 1955 में इस शब्द को गढ़ा

और वर्ष 1956 में डार्ट माउथ सम्मेलन का आयोजन

किया, जिसे एआई के जन्मस्थान के रूप में जाना

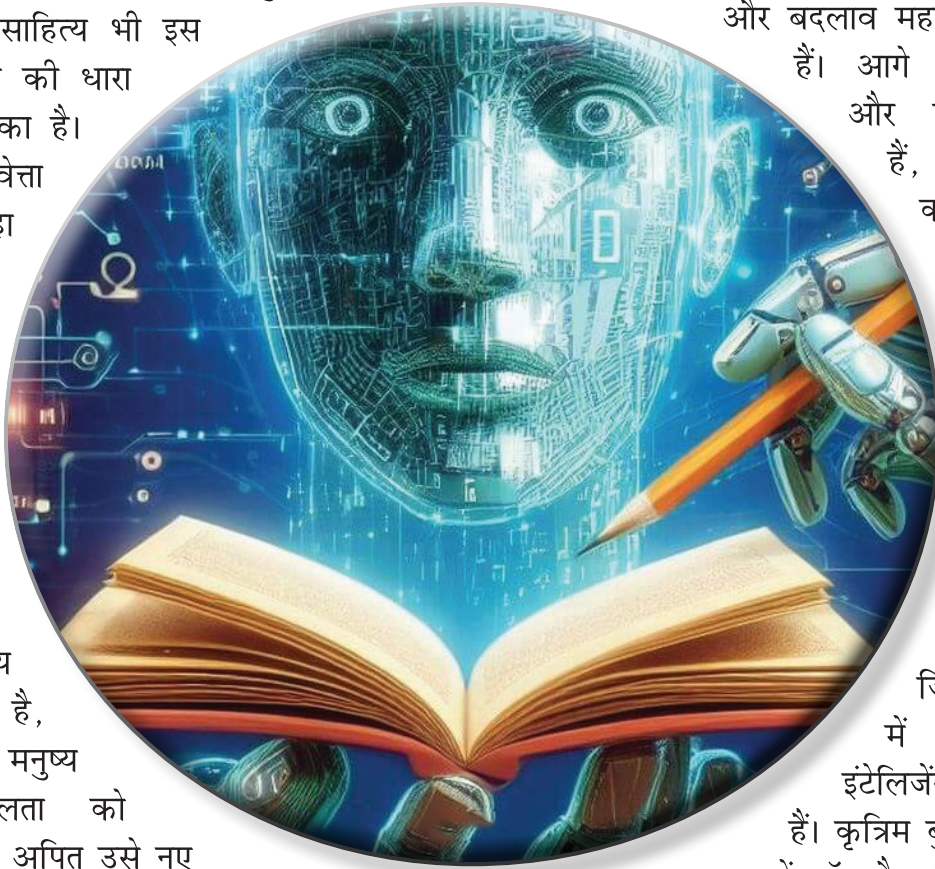
जाता है। जापान ऐसा देश रहा, जिसने सबसे पहले

एआई की ओर पहल की, और फिफ्थ जनरेशन

नाम से वर्ष 1981 में सुपर कंप्यूटर के विकास के

लिए दस वर्षीय कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की।

जनरेटिव प्री-ट्रेनिंग ट्रांसफर (जीपीटी)एप्लीकेशन की





लोकप्रियता के माध्यम से एआई को मुख्यधारा में लाया गया। इसमें सबसे लोकप्रिय एप्लीकेशन ओपन एआई का 'चैटजीपीटी' है।

एआई कंप्यूटर विज्ञान का एक क्षेत्र है, जो मशीनों को मानव की तरह सोचने, सीखने, तर्क करने और समस्याओं को हल करने में सक्षम बनाता है। एआई मानव-बुद्धि की भाँति कार्य भी कर सकती है, यथा-भाषा समझना, डेटा का विश्लेषण करना, स्वयं निर्णय या सुझाव देना, सीखना, तर्क करना, समस्या समाधान एवं रचना करना। हिन्दी साहित्य रचना के अंतर्गत एआई नई सामग्री टेक्स्ट इमेज, कोड बनाना (जैसे जनरेटिव आई) आदि कार्य करने में सक्षम है। चैटजीपीटी, जेमिनी जैसे टूल्स लेख, कहानी, कविता, कोड या चित्र बनाते हैं, और इस प्रकार साहित्य-सृजन में सहयोग करते हैं।

एआई रचनात्मकता के नए आयामों को खोलता है-कभी सहायक की तरह, कभी सहसर्जक की तरह, तो कभी आलोचक और संपादक की तरह। अस्तु, आज हिन्दी साहित्य सृजन में एआई की भूमिका, उसकी उपलब्धियों, चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं पर गहन विमर्श की आवश्यकता है।

एआई की हिन्दी साहित्य-सृजन में भूमिका

वर्तमान समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता समाज के हर क्षेत्र में परिवर्तन का माध्यम बन रही है। हिन्दी साहित्य भी इससे अछूता नहीं है। साहित्य-सृजन, अनुवाद, पत्रकारिता, आलोचना, शोध संरक्षण और अभिलेखन जैसे विविध क्षेत्रों में एआई का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिख रहा है। निम्नांकित कुछ बिन्दुओं में एआई की महती भूमिका को समझा जा सकता है-

1. रचना सहायक के रूप में

एआई आधारित टूल्स न केवल कविताओं, कहानियों और निबंधों की रचना में सहायक सिद्ध हो रहे हैं, अपितु हिन्दी साहित्य को वैश्विक मंच तक पहुँचाने में भी योगदान दे रहे हैं।

एआई आधारित भाषा मॉडल लेखकों को विचार देने, कथानक विकसित करने, भाषा सुधारने और शैली निर्माण में सहायता करते हैं। उदाहरणस्वरूप, कोई लेखक यदि ऐतिहासिक उपन्यास लिख रहा हो, तो एआई उसे ऐतिहासिक तथ्य, कालखंड-संरचना, संवाद-विन्यास आदि सुझा सकता है।

रस्किन बॉन्ड का यह कथन यहाँ सार्थक है-

“लेखन कभी अकेली यात्रा नहीं, विचारों की साझेदारी है।” एआई इसी साझेदारी को नए स्तर पर विस्तृत करता है।

2. भाषा संवर्द्धन एवं सम्पादन

एआई टूल्स व्याकरण जाँच, वाक्य-विन्यास सुधार, पर्यायवाची-प्रयोग और शैली परिशोधन में उपयोगी हैं। हिन्दी जैसी विशाल और विविध संरचना वाली भाषा के लिए यह एक बड़ा सहायक उपकरण है।

3. अनुवाद एवं भाषाई प्रचार

एआई आधारित अनुवाद उपकरण हिन्दी साहित्य के वैश्विक प्रसार में क्रांतिकारी भूमिका निभा रहे हैं। इससे हिन्दी साहित्य को अंग्रेजी और अन्य वैश्विक भाषाओं में हिन्दी में अनूदित कर रहे हैं। अब हिन्दी कहानियाँ, कविताएँ, नाटक और आलोचनाएँ अन्य भाषाओं में सहजता से अनूदित हो रही हैं, जिससे हिन्दी की पहुँच बढ़ी है।

4. शोध और संदर्भ-संग्रह

आलोचना, शोध-पत्र, निबंध आदि लिखने वाले विद्वानों के लिए एआई त्वरित संदर्भ-संग्रह, तथ्यों का विश्लेषण, उद्धरण खोजने और विषय-विस्तार का तीव्र साधन बन चुका है। एआई की डिजिटल संरक्षण और टेक्स्ट माइनिंग जैसी तकनीकों ने साहित्यिक धरोहर को सुरक्षित और शोध के लिए सुलभ बना दिया है।

5. डिजिटल साहित्य सृजन

आज अनेक कवि-कथाकार एआई आधारित टूल्स की मदद से डिजिटल कविता, इंटरैक्टिव कहानी,



दृश्य-काव्य और मल्टीमीडिया साहित्य का निर्माण कर रहे हैं। इसका एक उदाहरण “नेरेटिव जेनरेशन” है-जहाँ पाठक की प्रतिक्रिया के अनुसार कहानी आगे बढ़ती है।

6. शिक्षण और प्रशिक्षण में सहायक

शिक्षण और प्रशिक्षण की प्रक्रिया में भी एआई एक प्रभावी साधन के रूप में उभरा है, जो छात्रों को रचनात्मक लेखन की तकनीक सिखाने और लेखकीय अभिव्यक्ति को सुदृढ़ बनाने में सहायक सिद्ध हो रहा है।

एआई द्वारा हिन्दी साहित्य में प्राप्त उपलब्धियाँ :

1. लेखन सुलभता और सर्वसुलभ ज्ञान

एआई ने लेखन को लोकतांत्रिक बनाया है। जो लोग पहले भाषा-शुद्धि, संदर्भ-संग्रह या शैली को लेकर झिझकते थे, अब अधिक सहजता से लिख पा रहे हैं। वैज्ञानिकों द्वारा एआई की ऐसी तकनीक विकसित कर ली गई है, जो किसी लिखे हुए पाठ को मानव की तरह ही पहचान कर पढ़ सकती है।

2. पठन-संस्कृति के पुनर्जीवन में योगदान

एआई आधारित ऑडियो-बुक्स, टेक्स्ट-टू-स्पीच, सार-निर्माण और अनुशासित पठन-सूचियाँ नई पीढ़ी को हिन्दी साहित्य से जोड़ने में सहायक हैं। इस प्रकार पठन-संस्कृति को बढ़ावा मिलता है।

3. रचनात्मक प्रयोगों में वृद्धि

बहुत से युवा लेखक एआई के साथ मिलकर काव्य प्रयोग, मुक्त छंद, गीत, लघुकथा, संस्मरण, बालसाहित्य आदि में नवीन संरचनाएँ गढ़ रहे हैं। इससे हिन्दी साहित्य में नवाचार आया है।

4. हिन्दी भाषा का तकनीकी विस्तार

एआई ने हिन्दी को तकनीकी मंचों पर अधिक सक्षम बनाया है-जैसे हिन्दी स्पीच रिकॉग्निशन, हिन्दी चैटबॉट, हिन्दी व्याकरण-सुधारक, और बुद्धिमान शब्द-सुझाव प्रणाली। इससे भाषा डिजिटल दुनिया में

सक्षम और प्रतिस्पर्धी बनी है।

5. समावेशी सृजन को बढ़ावा

दृष्टिबाधित, शारीरिक रूप से अक्षम या वरिष्ठ नागरिक, जो परंपरागत लेखन नहीं कर पाते, वे अब बोलकर लेखन कर सकते हैं। एआई उनकी आवाज को स्वतः लेखन में बदल देती है।

6. साहित्यिक विश्लेषण एवं आलोचना में सहायक

एआई साहित्यिक शैली, वाक्य-रचना, भाव-विश्लेषण, शब्द-संरचना और समीक्षा को नए वैज्ञानिक उपकरण प्रदान करता है। इससे शोध की गहराई बढ़ी है।

एआई का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव :

उद्योग 4.0 के युग में वर्ल्ड वाइड वेब के आगमन के साथ एआई का साहित्य और साहित्य-सृजन पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। आजकल, यह न केवल लेखकों को उनके लेखन में सहायक उपकरण प्रदान कर रहा है, अपितु पूर्णतः स्वचालित तरीके से साहित्यिक रचनाएँ भी तैयार कर रहा है। एआई द्वारा लिखी गई कहानियाँ, कविताएँ और उपन्यास साहित्यिक जगत में एक नई क्रांति का कारण बन गए।

एआई विशेष रूप से नेचुरल प्रोप्राइमिंग तकनीक का उपयोग कर साहित्यिक शैली में लेखन कर सकता है। वह कविता और कहानी लेखन की प्रक्रिया को सरल बनाता है और नई शैली के साहित्यिक कार्य संपन्न करता है। इससे डिजिटल साहित्य का विकास भी हो रहा है और एआई द्वारा निर्मित साहित्य आनलाइन प्लेटफार्म पर तेजी से लोकप्रिय हो रहा है।

एआई का हिन्दी भाषा पर प्रभाव :

एआई भाषा की संरचना और शब्दावली में बदलाव ला रहा है। डिजिटल उपकरणों और चैटबॉट्स के माध्यम से भाषा अधिक तकनीकी और संक्षिप्त होती जा रही है। सोशल मीडिया और संदेशों में एआई आधारित सुझावों के कारण लोग संक्षिप्त और सरल भाषा का अधिक प्रयोग कर रहे हैं।



पाठक और साहित्य के संबंधों पर एआई का प्रभाव

पाठक और साहित्य के संबंधों पर भी एआई का प्रभाव दृष्टिगोचर है। एआई समर्थित रीडिंग एप्लिकेशन्स पाठक की रुचि और प्राथमिकताओं के अनुसार उपयुक्त सामग्री का चयन प्रस्तुत करती है, जिसमें व्यक्तिगत पठन-अनुभव संभव हो पाता है। एआई वॉयस टूल्स हिन्दी साहित्य की आडियोबुक और पॉडकास्ट के रूप में प्रस्तुत हो रहे हैं, जिससे साहित्य का श्रव्य रूप अधिकाधिक पाठकों और श्रोताओं तक पहुँच रहा है। पाण्डुलिपियों और दुर्लभ ग्रंथों का डिजिटलीकरण एआई आधारित स्कैनिंग तथा ओसीआर तकनीक के माध्यम से हो रहा है, जबकि डिजिटल पुस्तकालय और क्लाउड स्टोरेज में एआई संरचना इन ग्रंथों को सुरक्षित, व्यवस्थित और दीर्घकालीन रूप से संरक्षित कर रही है। विशाल साहित्यिक संग्रहों में पाठ खोज और अनुक्रमण की सुविधा भी एआई के कारण त्वरित, सटीक और प्रभावी रूप से प्राप्त हो रही है।

हिन्दी साहित्य सृजन में एआई की चुनौतियाँ

यद्यपि हिन्दी साहित्य के लिए एआई की उपलब्धियाँ महत्वपूर्ण हैं, तथापि चुनौतियाँ भी गंभीर हैं। इनका गहन विवेचन आवश्यक है।

1. मौलिकता एवं रचनात्मकता का प्रश्न

एआई द्वारा रचित साहित्य की प्रामाणिकता एवं मौलिकता पर प्रश्नचिह्न बना रहता है। नैतिकता की दृष्टि से भी लेखक और मशीन के योगदान की सीमा निर्धारित करना कठिन है। इस संदर्भ में साहित्यिक संस्थानों और शैक्षणिक निकायों द्वारा स्पष्ट दिशानिर्देश एवं आचार संहिताएँ तैयार की जानी चाहिए।

एआई “डेटा-आधारित पैटर्न” पर रचना करता है, जबकि साहित्य का सार मौलिक संवेदना, अनुभूति और भावभूमि में निहित है। यह आशंका है कि एआई पर अत्यधिक निर्भरता से लेखन की आत्मा कमजोर हो सकती है। एआई भावनात्मक बुद्धि का

अभाव रखता है, जो मानव कर्मचारी रखते हैं। एआई साहित्य (कला और संगीत भी) रच तो सकता है, लेकिन भावनात्मक गहराई को दोहरा नहीं सकता।

महान कवि निराला ने कहा था-

“साहित्य जीवन का दर्पण तभी है जब उसमें मानव-हृदय की धड़कन हो।”

एआई अभी इस तरह की धड़कन को समझने में सीमित है। विदेशी एआई माडलों पर निर्भरता कम करने के लिए स्थानीय अनुसंधान एवं विकास में सार्वजनिक निवेश की आवश्यकता है।

2. सर्वाधिकार सुरक्षा (कॉपीराइट) और बौद्धिक-सम्पदा

कॉपीराइट, कानून प्रौद्योगिकी के साथ-साथ विकसित हुआ है, जो अभिव्यक्ति के लिए नए रूपों को अपनाते हुए रचनाकारों की रक्षा करता है। वर्तमान में जनरेटिव आई प्रत्यक्ष पुनरुत्पादन के बिना प्रशिक्षण के लिए कॉपीराइट कार्यों का उपयोग करके कानून को चुनौती देता है।

एआई जनित रचनाओं का मालिक कौन?—यह प्रश्न विश्वभर में अनसुलझा है। यदि एआई पूर्व साहित्यिक कृतियों के आधार पर नई सामग्री बनाता है, तो क्या यह साहित्यिक चोरी है? इस पर स्पष्ट नियम अभी विकसित नहीं हुए हैं। इस प्रकार कॉपीराइट उल्लंघन और पायरेसी का संकट गहराता जा रहा है, क्योंकि डिजिटल मंचों पर साहित्यिक कृतियाँ बिना अनुमति के अपलोड हो जाती हैं। इसका समाधान प्रभावी विधिक प्रावधानों के माध्यम से किया जा सकता है।

3. भाषा-भाव समृद्धि और सांस्कृतिक सूक्ष्मताएँ

हिन्दी भाषा की संवेदनशीलता, सांस्कृतिक सूक्ष्मताओं एवं भावगहनता को एआई अभी पूरी तरह से नहीं पकड़ पा रही है। इस चुनौती का समाधान भारतीय भाषाओं पर आधारित व्यापक कॉर्पस तैयार करने तथा भाषाविदों और तकनीकी विशेषज्ञों के सहयोग की आवश्यकता है।



हिन्दी में मुहावरे, कहावतें, क्षेत्रीय रूप, सांस्कृतिक बिंब और भाव-निष्पत्ति अत्यंत विविध हैं। एआई कभी-कभी इनके गलत उपयोग से अर्थ का विकृतीकरण कर देता है।

4. लेखकों की अस्मिता एवं साहित्यिक गुणवत्ता प्रभावित

सोशल मीडिया ने साहित्य का प्रचार-प्रसार तो किया है, किन्तु इसके कारण साहित्यिक गुणवत्ता प्रभावित हुई है। डिजिटल साहित्य के कारण पाठकों की गहराई से पढ़ने की क्षमता में आई कमी एक गंभीर चुनौती है। इसका समाधान 'डीप रीडिंग' को प्रोत्साहित करने वाले शैक्षणिक कार्यक्रमों तथा पठन-अभियानों से संभव है। साथ ही, पुस्तक मेलों, साहित्यिक उत्सवों और पठन प्रवृत्ति को बढ़ावा देने वाले अभियानों के आयोजन किए जाएँ।

कुछ आलोचकों का मानना है कि एआई से साहित्य पर "मानव संवेदना की छाया" कम हो जाएगी। भविष्य में पाठक यह पहचानने में कठिनाई महसूस कर सकते हैं कि रचना मनुष्य की है या मशीन की। कृत्रिम बुद्धिमत्ता से उत्पन्न इन चुनौतियों के समाधान हेतु तकनीकी नवाचार और साहित्यिक मूल्यों के मध्य सम्यक संतुलन स्थापित किया जाए, जिससे मानव जैसी सोच, विश्लेषण और निर्णय लेने की क्षमता प्रदर्शित की जा सके।

5. डेटा पक्षपात

एआई अपने प्रशिक्षण डेटा के आधार पर काम करता है। यदि डेटा में पूर्वाग्रह या सीमाएँ हों, तो एआई की रचना भी पक्षपाती, असंतुलित या अपूर्ण हो सकती है। भारत में अपर्याप्त डेटा पारिस्थितिकी तंत्र के कारण एआई प्रशिक्षण के लिए आवश्यक गुणवत्ता वाले, समन्वित एवं उचित रूप से एनोटेट किए गए डेटा की कमी है।

6. भाषा-परिवर्तन का खतरा

यदि एआई गलत शब्द-प्रयोग या असंगत वाक्य संरचनाओं को बढ़ावा देता है, तो यह हिन्दी की

शुद्धता और उसकी परंपरागत संरचनाओं को प्रभावित कर सकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और लेखक का संबंध :

साहित्य केवल शब्दों की रचना नहीं, अपितु भाव, विचार, संस्कृति, अनुभूति और समाज का दर्पण है। इसलिए लेखक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बीच संबंध प्रतिस्पर्धात्मक नहीं, अपितु सहयोगात्मक होना चाहिए।

महान दार्शनिक टॉल्स्टॉय का कथन है-

“कला का उद्देश्य केवल संप्रेषण नहीं, संवेदनाओं का आदान-प्रदान है।” साहित्य मानव संवेदना का अभिव्यक्ति-क्षेत्र है, जिसे एआई केवल तकनीकी दृष्टि से समझ सकता है, किन्तु अनुभूत नहीं कर सकता। इसलिए भविष्य में लेखक-एआई संबंध “ह्यूमन-इन-द-लूप” मॉडल पर आधारित रहेगा, जिसमें मनुष्य की अनुभूति और मशीन की क्षमता मिलकर बेहतर साहित्य रचेंगे।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की संभावनाओं का क्षितिज

(क) सह-रचना (को-क्रिएशन) का संयोग-

आने वाले समय में कवि और एआई मिलकर मल्टी-लेयर्ड काव्य रचेंगे। कहानीकार एआई से संवाद कर पात्रों का मनोविज्ञान, कथानक का प्रवाह और संवाद की भाषा गढ़ेंगे।

(ख) व्यक्तिगत साहित्य पर प्रभाव-

एआई पाठकों की रुचि, आयु, मनोदशा और सीखने की शैली के आधार पर व्यक्तिगत कविता, कहानी या निबंध तैयार कर सकेगा। इससे बाल-साहित्य, शिक्षण-साहित्य और प्रेरक साहित्य में व्यापक बदलाव होगा।

(ग) डिजिटल साहित्य का विकास-

भविष्य में ऐसे साहित्य का उद्भव होगा जिसमें पाठक कहानी की दिशा चुन सकेगा, कविता ध्वनि-चित्रों और दृश्य कला के साथ बदलेगी, और नाटक इंटरैक्टिव मंच पर जीवंत रूप लेगा।

**(घ) हिन्दी संरक्षण और प्रसार में वृद्धि-**

एआई हिन्दी बोलियों-अवधी, ब्रज, मैथिली, बुंदेली, मारवाड़ी, हरियाणवी, भोजपुरी आदि-के लिए डेटा-संग्रह, शब्दकोश-सृजन और डिजिटल संरक्षण में महत्त्वपूर्ण योगदान देगा।

(ड.) एआई आधारित आलोचना एवं मूल्यांकन-

भविष्य में एआई साहित्यिक प्रवृत्तियों, शैली-विश्लेषण, भाषा-विकास और सांस्कृतिक संकेतों का अध्ययन करेगा। इससे हिन्दी आलोचना अधिक वैज्ञानिक और विश्लेषणात्मक बनेगी।

(च) प्रकाशन क्षेत्र में नए अवसर-

एआई आधारित संपादन, प्रूफ-रीडिंग, कवर डिजाइन, पुस्तक-सारांश और विपणन से हिन्दी प्रकाशन अधिक सुसंगत, तेज और व्यापक हो जाएगा।

आवश्यक दिशा-निर्देश

यदि एआई को साहित्य के लिए वरदान बनाना है, तो कुछ सिद्धांत अपनाने आवश्यक होंगे-

1. **एआई को सहायक मानें, नियंत्रक नहीं-**लेखन की संवेदना मनुष्य की अपनी रहे। एआई केवल उपकरण की तरह उपयोग हो।
2. **डेटा की गुणवत्ता और भाषा-शुद्धि आवश्यक-**विश्वसनीय, सांस्कृतिक रूप से संतुलित और शुद्ध हिन्दी सामग्री के आधार पर एआई को प्रशिक्षित करना आवश्यक है।
3. **कॉपीराइट नियम स्पष्ट हों-**सरकारों, संस्थाओं और प्रकाशकों को एआई लेखन से संबंधित कानूनी ढाँचा तैयार करना चाहिए।
4. **नैतिकता एवं पारदर्शिता-**एआई-आधारित रचनाओं में यह स्पष्ट होना चाहिए कि किस अंश में एआई की सहायता ली गई है।
5. **साहित्यिक मूल्यों का संरक्षण-**साहित्य प्रेम, करुणा, मानवता, सौंदर्य, संघर्ष और अनुभूति का संवाहक है-तकनीकी हस्तक्षेप इन मूल्यों को कमजोर न करे।

निष्कर्ष :

हिन्दी साहित्य के विकास में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका बहुआयामी और परिवर्तनकारी सिद्ध हो रही है। सृजनात्मक लेखन, अनुवाद, संरक्षण अभिलेखन और आलोचना आदि क्षेत्रों में एआई ने नए अवसर उपलब्ध कराए हैं।

एआई तकनीकों साहित्यिक पाठ के भाव, संरचना और प्रतीकात्मक प्रयोगों का सूक्ष्म विश्लेषण कर रही है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता हिन्दी साहित्य को नई ऊँचाइयों तक ले जाने की क्षमता रखती है। यह लेखक के लिए प्रतिस्पर्धी नहीं, अपितु सहयोगी सिद्ध हो सकती है।

यह नई गति, नए उपकरण, नई संरचना और नई संभावनाएँ प्रदान करती है। परन्तु इसके साथ साहित्य की मानवीय संवेदना, नैतिकता और मौलिकता की रक्षा करना भी उतना ही आवश्यक है। एआई का उपयोग विवेकपूर्ण और रचनात्मक दृष्टि से किया जाना चाहिए। आने वाले समय में एआई हिन्दी साहित्य को वैश्विक पटल पर और भी सशक्त रूप में प्रस्तुत करेगा तथा साहित्यिक अध्ययन और शोध को नई दिशा प्रदान करेगा।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर का प्रसिद्ध कथन यहाँ उपयुक्त है-

“सृजन मनुष्य की आत्मा से उपजता है; बाहरी साधन केवल उसकी सहायता भर करते हैं।” एआई साहित्यिक प्रक्रिया को तीव्र, व्यापक और समावेशी बना रहा है, लेकिन साहित्य का हृदय-अनुभूति, करुणा, सौंदर्य और कल्पना-मानव के पास ही सुरक्षित है। भविष्य का हिन्दी साहित्य मनुष्य और मशीन की साझी यात्रा होगा, जिसमें तकनीक रचनात्मकता की सीमा नहीं, अपितु उसके नए आयाम प्रस्तुत करेगी।

गौरीशंकर वैश्य
विकासनगर, लखनऊ



ऊर्जा संरक्षण - आज की जरूरत

राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस हर साल 14 दिसंबर को भारत में मनाया जाता है। यह दिन ऊर्जा संरक्षण और इसके महत्त्व के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए समर्पित है। ऊर्जा हमारे जीवन का एक अभिन्न हिस्सा है, और इसके विवेकपूर्ण उपयोग से न केवल हमारे पर्यावरण को संरक्षित किया जा सकता है, बल्कि आर्थिक लाभ भी प्राप्त किए जा सकते हैं। यह दिवस हमें याद दिलाता है कि ऊर्जा संरक्षण का अर्थ केवल लागत कम करना ही नहीं है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए पृथ्वी की रक्षा करना भी है। पर्यावरण संबंधी चुनौतियों से लगातार जूझ रही दुनिया में, विश्व ऊर्जा संरक्षण दिवस जिम्मेदार ऊर्जा खपत के महत्त्व पर बल देता है और व्यक्तियों, व्यवसायों और सरकारों से अधिक टिकाऊ भविष्य की दिशा में कदम उठाने का आग्रह करता है।



ऊर्जा संरक्षण का नियम (Law of Conservation of Energy) सबसे पहले जर्मन भौतिक विज्ञानी जूलियस रॉबर्ट वॉन मेयर (Julius Robert von Mayer) द्वारा 1842 में प्रतिपादित किया गया था। इस नियम के अनुसार, ऊर्जा को न तो बनाया जा सकता है और न ही नष्ट किया जा सकता है। यह केवल एक रूप से दूसरे रूप में परिवर्तित होती है। विश्व ऊर्जा संरक्षण दिवस पहली बार 1991 में भारत सरकार के ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (बीईई) के तत्वावधान में मनाया गया था। इसका उद्देश्य ऊर्जा दक्षता के महत्त्व और पर्यावरण संरक्षण में इसकी भूमिका के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। हालांकि

इस आयोजन की शुरुआत भारत में हुई। लेकिन ऊर्जा संरक्षण की आवश्यकता वैश्विक प्राथमिकता बनने के साथ ही इसे जल्द ही अंतरराष्ट्रीय मान्यता मिल गई। यह दिन हमें याद दिलाता है कि यद्यपि हम अतीत में ऊर्जा खपत के प्रभावों को उलट नहीं सकते, फिर भी हम गैर-नवीकरणीय ऊर्जा पर अपनी सामूहिक निर्भरता को कम करने और अपनी प्रणालियों की दक्षता में सुधार करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम उठा सकते हैं। भारत सरकार ने ऊर्जा संरक्षण अधिनियम 2001 (दिनांक 1 मार्च, 2002 से प्रभावी) के माध्यम से ऊर्जा के कुशल उपयोग को विनियमित किया है।

नवीकरणीय ऊर्जा (Renewable) : सौर ऊर्जा

- भारत उष्णकटिबंधीय मेखला (Tropical Belt) में स्थित है जहाँ वर्ष के 300 दिन सौर विकिरण की उच्च मात्रा का लाभ प्राप्त किया जा सकता है। इस मेखला में 2300-3,000 घंटे की धूप/सूर्य प्रकाश की मात्रा 5,000 ट्रिलियन किलोवाट घंटा (kWh) के बराबर है।
- दिसंबर 2025 की PIB रिपोर्ट के अनुसार, भारत की कुल स्थापित सौर ऊर्जा क्षमता लगभग 129 गीगावाट (GW) (1,29,000 मेगावाट से अधिक) तक पहुँच गई है। यह देश की कुल नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता का एक प्रमुख हिस्सा है, जो 259 GW से अधिक हो गई है।
- भारत को अपनी ऊर्जा माँग को पूरा करने में समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, सौर



ऊर्जा, ऊर्जा सुरक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

- ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन पर बहस विश्व को जीवाश्म आधारित ऊर्जा से स्वच्छ और हरित ऊर्जा की ओर बढ़ने हेतु मजबूर कर रही है।
- प्रदूषण मुक्त प्रकृति, निरंतर आपूर्ति और वैश्विक वितरण के साथ, सौर ऊर्जा एक अत्यधिक आकर्षक ऊर्जा संसाधन है।
- **तेजी से वृद्धि** : सौर ऊर्जा क्षमता में लगातार वृद्धि हो रही है। नवंबर 2024 में यह लगभग 94.17 GW थी, जो बढ़कर नवंबर 2025 में 132.85 GW से अधिक हो गई, जो 41% से अधिक की वृद्धि दर्शाती है।
- **प्रमुख योजनाएँ** : प्रधानमंत्री सूर्य घर (PM Surya Ghar) योजना जैसी पहलों के कारण रूफटॉप सोलर में भी काफी वृद्धि हुई है।
- **पीएम सूर्य घर** : भारत में घरों में रूफटॉप सोलर सौर संयंत्र द्वारा बिजली उपलब्ध कराने के उद्देश्य से शुरू की गई एक सरकारी योजना है। इस योजना का शुभारंभ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 15 फरवरी, 2024 को किया था। इस योजना के तहत, घरों को अपनी छतों पर सौर पैनल लगाने के लिए सब्सिडी दी जाएगी। सब्सिडी सौर पैनलों की लागत का 40% तक कवर करेगी। इस योजना से भारत भर में 1 करोड़ घरों को लाभ मिलने की उम्मीद है। अनुमान है कि इस योजना से सरकार को बिजली के खर्च में प्रति वर्ष 75,000 करोड़ रुपये की बचत होगी।
- **लक्ष्य** : भारत सरकार वर्ष 2070 तक शुद्ध शून्य (Net Zero) उत्सर्जन लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सौर ऊर्जा क्षमता का तेजी से विस्तार कर रही है।

यह प्रगति भारत को दुनिया के अग्रणी सौर ऊर्जा देशों में शामिल करती है।

- भारत को अपनी ऊर्जा माँग को पूरा करने में समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, सौर ऊर्जा, ऊर्जा सुरक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।
- ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन पर बहस विश्व को जीवाश्म आधारित ऊर्जा से स्वच्छ और हरित ऊर्जा की ओर बढ़ने हेतु मजबूर कर रही है।
- प्रदूषण मुक्त प्रकृति, निरंतर आपूर्ति और वैश्विक वितरण के साथ, सौर ऊर्जा एक अत्यधिक आकर्षक ऊर्जा संसाधन है।

सौर ऊर्जा की आवश्यकता

ऊर्जा सुरक्षा-

- भारत की ऊर्जा आवश्यकता काफी हद तक ऊर्जा के गैर-नवीकरणीय स्रोत से पूरी होती है।
- जीवाश्म संसाधनों की कमी अक्षय ऊर्जा स्रोतों की आवश्यकता पर बल देती है।
- सौर ऊर्जा की प्रचुरता भारत की स्वच्छ ऊर्जा की माँग को पूरा कर सकती है।
- भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने हेतु आयात पर निर्भर है, जिससे ऊर्जा सुरक्षा के संबंध में भारी व्यय और अनिश्चितता उत्पन्न होती है।

आर्थिक विकास-

- विकासशील अर्थव्यवस्था होने के नाते भारत को औद्योगिक विकास और कृषि हेतु बिजली की आवश्यकता है।
- भारत को न्यूनतम लागत के साथ विद्युत उत्पादन में आत्मनिर्भर होने की आवश्यकता है। विद्युत की नियमित आपूर्ति का आश्वासन उद्योगों और अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देगा।

सामाजिक विकास-

- बिजली की कटौती और अनुपलब्धता की समस्या विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्र में, मानव विकास में



रुकावट उत्पन्न करती है।

- अधिकांश ऊर्जा जरूरतों को ग्रामीण क्षेत्रों में रियायती दर पर मिलने वाले मिट्टी के तेल (Kerosene Oil) से पूरा किया जाता है, जिससे सरकारी खजाने को नुकसान होता है।

पर्यावरणीय चिंता-

- भारत की ऊर्जा माँग का एक बड़ा हिस्सा तापीय ऊर्जा द्वारा (Thermal Energy) से पूरा किया जाता है, जो काफी हद तक जीवाश्म ईंधन (Fossil Fuels) पर निर्भर है। इससे पर्यावरण प्रदूषण भी होता है। सौर ऊर्जा, ऊर्जा संसाधन का स्वच्छ रूप है, जो एक विकल्प हो सकता है।

प्रौद्योगिकी :

- सोलर फोटोवोल्टिक- सोलर फोटोवोल्टिक (Solar Photovoltaic & SPV) सेल्स सौर विकिरण (सूर्य के प्रकाश) को विद्युत में परिवर्तित करती हैं। एक सोलर सेल, सिलिकॉन (Silicon) या अन्य सामग्रियों से बना एक अर्द्धचालक उपकरण (Semiconducting Device) है, जो सूर्य के प्रकाश के संपर्क में आने पर विद्युत ऊर्जा उत्पन्न करता है।
- सोलर थर्मल- सोलर थर्मल पावर सिस्टम (Solar Thermal Power systems), जिसे कंसंट्रेटिंग सोलर पावर सिस्टम (Concentrating

Solar Power systems) के रूप में भी जाना जाता है, विद्युत उत्पादन करने हेतु थर्मल रूट का उपयोग कर उच्च तापमान ऊर्जा स्रोत के रूप में संकेंद्रित सौर विकिरण (Concentrated Solar Radiation) का उपयोग किया जाता है।

प्रकार :

ग्रिड में विद्युत आपूर्ति हेतु सौर ऊर्जा-

- विभिन्न ग्रिडों को आपस में जोड़ने हेतु प्रयोग की जाने वाली सौर ऊर्जा को बड़े पैमाने पर फोटोवोल्टिक सेल्स और संकेंद्रित सौर ऊर्जा संयंत्रों से प्राप्त किया जाता है।

ऑफ-ग्रिड के समाधान हेतु सौर ऊर्जा-

- ग्रिड तक आसान पहुँच वाले क्षेत्रों में ग्रिड कनेक्टिविटी का उपयोग किया जाता है। जिन स्थानों पर विद्युत की उपलब्धता बहुत कम या





बहुत महंगी है, ऐसे क्षेत्रों में आने वाली पीढ़ियों के पास कोई और विकल्प उपलब्ध नहीं है।

- ऐसे स्थान, जहाँ विद्युत की आसान पहुँच का अभाव है, छोटे स्थानीय जनरेटर की एक विविध श्रृंखला में बैटरी या जीवाश्म ईंधन (डीजल, गैस) और स्थानीय रूप से उपलब्ध अक्षय ऊर्जा प्रौद्योगिकियों (सोलर फोटोवोल्टिक, वायु, बायोमास आदि) का उपयोग कर विद्युत उत्पादन किया जाता है, जिसे ऑफ-ग्रिड विद्युत के रूप में जाना जाता है।

लाभ :

- सौर ऊर्जा की उपलब्धता पूरे दिन बनी रहती है। विशेष रूप से उस समय भी जब विद्युत ऊर्जा की मांग सर्वाधिक होती है।
- सौर ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में रूपांतरित करने वाले उपकरणों की अवधि अधिक होती है और उनके रखरखाव की भी कम आवश्यकता होती है।
- पारंपरिक ताप विद्युत उत्पादन (कोयले द्वारा) के विपरीत सौर ऊर्जा से प्रदूषण की समस्या भी उत्पन्न नहीं होती है तथा स्वच्छ विद्युत ऊर्जा के उत्पादन को बढ़ावा दिया जाता है।
- देश के लगभग सभी हिस्सों में मुफ्त सौर ऊर्जा की प्रचुरता है।
- सौर ऊर्जा के उपयोग में विद्युत के तार एवं ट्रांसमिशन का उपयोग करने की आवश्यकता नहीं होती है

सौर ऊर्जा के उपयोग में चुनौतियाँ :

- भारत की सौर ऊर्जा आवश्यकता काफी हद तक आयात पर निर्भर है।
- सौर ऊर्जा उत्पादन हेतु भारत निर्मित उपकरणों को WTO के समक्ष कानूनी चुनौती का सामना करना पड़ रहा है।
- भारत को अपने घरेलू लक्ष्यों को प्राथमिकता देने और डब्ल्यूटीओ की प्रतिबद्धताओं के मध्य चुनौती

का सामना करना पड़ रहा है।

- उत्पादों की डंपिंग स्थानीय निर्माताओं के लिए नुकसानदायक है।
- चीनी कंपनियों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए भारतीय घरेलू निर्माता, तकनीकी और आर्थिक रूप से मजबूत नहीं हैं।
- उच्च जनसंख्या घनत्व के कारण भारत में सौर संयंत्र को स्थापित करने हेतु भूमि की उपलब्धता कम है।
- वर्ष 2050 तक भारत में सौर कचरे का अनुमान 1.8 मिलियन के आसपास होने की संभावना है।

सरकारी पहल :

- नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (Ministry of New and Renewable Energy) भारत की नवीकरणीय ऊर्जा के मुद्दों से निपटने हेतु नोडल एजेंसी है।
- राष्ट्रीय सौर मिशन (National Solar Mission), भारत की ऊर्जा सुरक्षा चुनौती को संबोधित करते हुए तथा पारिस्थितिक रूप से स्थायी विकास को बढ़ावा देने हेतु भारत सरकार और राज्य सरकारों की एक बड़ी पहल है।
- भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास एजेंसी (Indian Renewable Energy Development Agency & IREDA) नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में एक गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थान है जो नवीकरणीय ऊर्जा और ऊर्जा दक्षता परियोजनाओं हेतु ऋण उपलब्ध कराती है।
- राष्ट्रीय सौर ऊर्जा संस्थान (National Institute of Solar Energy) नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के तहत स्वायत्त संस्थान के रूप में बनाया गया है जो अनुसंधान एवं विकास हेतु सर्वोच्च निकाय है।
- सौर पार्कों (Solar Parks) और अल्ट्रा मेगा सौर ऊर्जा परियोजना (Ultra Major Solar Power Project) की स्थापना और ग्रिड कनेक्टिविटी



बुनियादी ढाँचे को बढ़ावा देना।

- नहर बैंक (Canal Bank) और सौर नहर टैंक अवसंरचना (Canal Tank Solar Infrastructure) का संवर्द्धन करना।
- सस्टेनेबल रूफटॉप इम्प्लीमेंटेशन ऑफ सोलर ट्रांसफिगरेशन ऑफ इंडिया (SRISTI) योजना का सतत् कार्यान्वयन करना।
- योग्य कार्यबल तैयार करने हेतु सूर्यमित्र कार्यक्रम।
- बड़े ऊर्जा उपभोक्ता ग्राहकों हेतु नवीकरणीय खरीद दायित्व।
- राष्ट्रीय हरित ऊर्जा कार्यक्रम और हरित ऊर्जा गलियारा।

क्षमता

भारत जैसे विकासशील देश में जहाँ एक समय में हर घर तक बिजली की पहुँच एक सपना माना जाता था, अब वास्तविकता के करीब है। सभी के लिए विद्युत (Power for All) जैसी सरकारी पहल देश की सामाजिक-आर्थिक संरचना को परिवर्तित कर रही है।

- सौर ऊर्जा क्षेत्र में रोजगार के नए अवसर सृजित करने की अपार संभावनाएँ विद्यमान हैं; 1 गीगावाट GW सोलर मैनुफैक्चरिंग सुविधा लगभग 4000 लोगों के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार उत्पन्न करती है।
- सौर ऊर्जा के विकास के अलावा इसके, संचालन और रखरखाव क्षेत्र में अतिरिक्त रोजगार सर्जित होता है।
- सौर ऊर्जा के भंडारण हेतु विकास कार्य प्रगति पर है, जिससे इस क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर क्रांति लाने की क्षमता विद्यमान है। तब तक नवीनीकरण ऊर्जा स्रोतों की धीरे-धीरे बढ़ती हिस्सेदारी जीवाश्म स्रोतों पर निर्भरता को कम कर सकती है।
- वर्ष 2035 तक वैश्विक सौर क्षमता में भारत की हिस्सेदारी 8% होने की उम्मीद है। 363 गीगावाट (GW) की भविष्य की संभावित क्षमता के साथ, भारत का ऊर्जा के क्षेत्र में एक वैश्विक



नेता के रूप में उभरने की संभावना है।

अंतर्राष्ट्रीय पहल :

- भारत के INDC में सकल घरेलू उत्पाद उत्सर्जन की तीव्रता को वर्ष 2005 के स्तर की तुलना में वर्ष 2030 तक 33-35 प्रतिशत तक कम करना।
- वर्ष 2030 तक हरित जलवायु कोष सहित प्रौद्योगिकी और कम लागत वाले अंतर्राष्ट्रीय वित्त के हस्तांतरण की सहायता से, गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा संसाधनों से लगभग 40 प्रतिशत संचयी विद्युत ऊर्जा स्थापित क्षमता प्राप्त करना।
- अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (International Solar Alliance & ISA) जो कि भारत की एक पहल है, 122 से अधिक देशों का एक संगठन है। इसमें अधिकांश मकर और मकर रेखा के मध्य स्थित वे देश शामिल हैं जो सौर ऊर्जा से सम्पन्न हैं।
- वर्ष 2030 तक बड़े पैमाने पर सौर ऊर्जा के विकास और भविष्य में इस दिशा में कार्य करने तथा सौर प्रौद्योगिकियों के उपयोग को बढ़ावा देने हेतु 1000 बिलियन से अधिक के अमेरिकी डॉलर के निवेश किये जाने की आवश्यकता है।

आगे की राह :



- सौर परियोजनाओं के वित्तपोषण हेतु मजबूत वित्तीय उपायों को अपनाने की आवश्यकता है। हरित बॉण्ड, संस्थागत ऋण और स्वच्छ ऊर्जा निधि जैसे अभिनव कदम इस दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।
- अक्षय ऊर्जा विशेष रूप से भंडारण प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अनुसंधान और विकास को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।
- चीन द्वारा सौर उपकरणों की डंपिंग से निपटने हेतु उचित रणनीति को अपनाने की आवश्यकता है।
- नीति निर्धारण और कार्यान्वयन में अनावश्यक देरी से बचने हेतु एक रूपरेखा को निर्मित किया जाए।
- सौर अपशिष्ट प्रबंधन और विनिर्माण हेतु भारत को एक मानक नीति अपनाने की आवश्यकता है।

ऊर्जा संरक्षण एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जिसमें सभी को भाग लेना चाहिए। ऊर्जा बचाने के प्रयास प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा में सहायक होते हैं। इससे ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन कम होता है, जो वैश्विक तापमान वृद्धि की गति को धीमा करता है। इससे बिजली की खपत कम होने से पैसों की भी बचत होती है। ऊर्जा संरक्षण केवल बड़े कार्यों तक ही सीमित नहीं है। घर, स्कूल या कार्यस्थल पर हर कोई अपनी दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों में ऊर्जा-बचत के तरीके अपना सकता है। एक उपभोक्ता के रूप में आप जो सबसे महत्वपूर्ण काम कर सकते हैं, वह है ऊर्जा के उपयोग के प्रति सजग रहना। हर सकारात्मक कदम हमारे पर्यावरण की रक्षा करने और आने वाली पीढ़ियों के लिए इसे अधिक टिकाऊ बनाने में मदद करता है।

रणजीत सिंह ठाकुर

सहायक अभिकल्प इंजीनियर/इंजन,
बनारस लोकोमोटिव वर्क्स, वाराणसी



मेरी 'हम्टा पास' की यात्रा

जब बैग पैक किया तो लगा अपनी आजादी समेट रही हूँ। पैकिंग मेरे लिए बस कपड़े भरने की प्रक्रिया नहीं थी, ये एक संस्कार था अपनी घुमक्कड़ी प्रवृत्ति के साथ किया गया एक शान्त भावुक समझौता पत्र।

27 जून को यात्रा शुरू की, 28 अन्य कुछ जाने कुछ अनजाने लोगों के साथ। रेलगाड़ी से चंडीगढ़ फिर बस से कुल्लू (6720 फीट) सेओबाग बेस कैंप।

दिन 1- अगले दिन बस से बालों के पिन जैसी घुमावदार सड़क से होते हुए जोबरा (9843 फीट) और फिर ट्रेकिंग करते हुए चीका कैंप (10088 फीट) पहुँचे। ट्रेक में लगा जैसे वक्त धीमा हो गया, ना शोर, ना भाग दौड़, ना कोई भ्रमण सूची। बस हमारी टीम, एक अनजान रास्ता, कुछ अनकही कहानियां जो इन जगहों पर तैरा करती हैं। हवा की नमी, सूरज की सीधी रोशनी, प्रकृति की खामोशी की गूंज, उसका साधारण रूप और रौद्र रूप सब मन तक राह बना रहे थे, बादल इतने नीचे जैसे गले लगाने आए हो।

दिन 2- चीका कैंप से बालू का घेरा (11998 फीट)- पेड़ों की कतार खत्म होने को थी ऑक्सीजन का घनत्व और कम हो गया। एक्यूट माउंटेन सिकनेस (एएमएस) के लक्षण कुछ लोगों में दिखने लगे पर इच्छा शक्ति में कमी नहीं आई।

दिन 3- बालू का घेरा से हम्टा पास (14100 फीट) और फिर शे गोरो (12303 फीट) 12 घंटे का ट्रेक था, पत्थरों का सागर और बीच-बीच में

खामोशी को चुनौती देती नदियां, झरने और मन को मोह लेने वाले ग्लेशियर हमें हमारे गंतव्य तक आगे बढ़ने की प्रेरणा देते रहे। ये पूरे ट्रेक का कठिनतम दिन था जो हमारी टीम ने 3 घंटे पहले ही पूरा कर लिया।



दिन 4- शे गोरो से छत्रु कैंप (10896 फीट) यह 820 फीट की ढलान और 10 से 12 किलोमीटर की यात्रा जिसमें आगे बढ़ते हुए चंद्रा नदी को पार कर पूरा किया गया। यह ट्रेक चुनौती पूर्ण हम्टा पास ट्रेक को समाप्त करने का शानदार हिस्सा रहा।

दिन 5- छत्रु कैंप से चंद्रताल (13940 फीट) का कठिन सफर तय किया और अटल टनल (रोहतांग) होते हुए वापस सेओबाग बेस कैंप कुल्लू पहुँचे।

ट्रेक पर जाना खुद को एहसास कराने जैसा था कि मैं कितनी भाग्यशाली हूँ, मैं चल सकती हूँ, सोच सकती हूँ, निर्णय ले सकती हूँ, कि मुझे कहां जाना है। जब मोबाइल सिग्नल नहीं होता तो इंसानों की बात सीधे इंसानों से होती है। वहां भीड़ नहीं बादल होते हैं और जहां इंसान दिखावे से नहीं दिल से जुड़ते हैं।



पैकिंग दोबारा शुरू की, हर चीज की अपनी कहानी थी।

ट्रेकिंग शूज- जिसमें जंगल, घास के मैदान, झरने, पत्थरों की यादें अटकी होंगी छड़ी- जो मेरे सहारे थी और मैं उसके सहारे।

ट्रेकसूट- जो विविधता में एकता का पैगाम दे रहा था।

दो फोन और पावर बैंक- नेटवर्क तो नहीं मिलना था पर 5 दिन की यादों को बटोर कर लाना था।

टॉर्च, दवाइयां- डर का सामना सिर उठाकर करना होता है, हथियार नहीं तो हिम्मत ही सही। और सबसे जरूरी एक छोटी सी डायरी और पेन जिसमें

हर जंगल, मैदान, झरने, पहाड़ ने एक लाइन में कुछ सिखाया था, जैसे अधिक ऊंचाई पर ऑक्सीजन कम होती है, पर इच्छा शक्ति और बढ़ती है, सुनना आए तो नदियां सहेलियों की तरह ढेर सारी बातें करती है, देखना आए तो पत्थरों पर खिले फूल छोटे बच्चों की याद दिलाते हैं जो आपकी मुस्कुराहट लौटाते हैं, घड़ी की टिक टिक की जगह परिंदों की आवाज सुनाई देती है।

मेरे लिए विलासिता का मतलब आलीशान अधिकारी विश्राम गृह या रिसॉर्ट नहीं था असली विलास था सुरक्षित रहना, अलर्ट रहना, और खुद पर भरोसा रखना।

जब वापस लौटी तो सिर्फ मेरी त्वचा ही धूप से थोड़ी भूरी नहीं हुई थी, अपितु मेरी सोच भी और परिपक्व हुई, मेरा डर, आशंका थोड़े और कमजोर हुए और हिम्मत थोड़ी और मजबूत हुई।

कुछ खरीदा नहीं बस प्रकृति को आत्मसात किया।

कुछ यात्राएं हमारी मूलोत्पत्ति को ही नहीं हमारी सोच को भी बदल देती है, यह यात्रा उनमें से एक थी।

डॉ. स्नेहलता सिंह

उप मुख्य चिकित्सा निदेशक/ टी. ए.





व्यवहार से प्रमाणन (सर्टिफिकेशन) तक

कि सी भी संगठन के लिए प्रमाणन/चाहे वह ISO/GreenCo हो, गुणवत्ता-मानक हों या सुरक्षा संबन्धी ऑडिट-सिर्फ तकनीकी प्रक्रियाओं का विषय नहीं है, बल्कि कर्मचारियों के व्यवहार, कार्य-संस्कृति और अनुशासन का प्रत्यक्ष प्रतिबिंब भी है। मशीनें, दस्तावेज़ और मानक केवल ढाँचा प्रदान करते हैं, परंतु उस ढाँचे को जीवन देने वाला तत्व है- मानव व्यवहार।

जब कर्मचारी समयपालन, ईमानदारी, पारदर्शिता, सुरक्षा-निष्ठा और सतत-सुधार जैसी आदतों को अपने रोज़मर्रा के कार्य में शामिल करते हैं, तो प्रमाणन की प्रक्रिया स्वाभाविक रूप से सरल, सुगम और प्रभावी बन जाती है।

वास्तव में, किसी भी प्रमाणन की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि संगठन के कर्मचारी अपने कार्य को केवल "कर्तव्य" नहीं, बल्कि "गुणवत्ता की प्रतिबद्धता" मानकर करें। इसीलिए कहा जाता है- मानव व्यवहार सुधर जाए तो प्रमाणन अपने आप मिल जाता है, और कागज़ स्वयं बोलने लगते हैं। वे व्यवहार-परिवर्तन जिन्हें अपनाने से रेलवे की कार्य-संस्कृति स्वच्छ, व्यवस्थित व मानकीकृत बनेगी- और परिणामस्वरूप ISO Certification अपने-आप आसान हो जाएगा, निम्नलिखित हैं;

इसे आप "ISO-उन्मुख व्यवहार संहिता" भी कह सकते हैं।

1. कार्य अनुशासन एवं समयपालन

ड्यूटी समय पर ज्वॉइन करना एवं कार्य समय पर पूरा करना।
शिफ्ट और जिम्मेदारियों का स्पष्ट हस्तांतरण।

→ यह ISO के Time Management और Process Adherence मानकों को स्वतः पूरा करता है।

2. कार्य का स्पष्ट रिकॉर्ड और दस्तावेज़ीकरण

जितना काम करें, उतना लिखें, और जैसा लिखें- वैसा ही काम हो।

फाइल, लॉगबुक, मेंटेनेंस रिकॉर्ड, सुरक्षा चेकलिस्ट पूरी एवं अद्यतन।

→ ISO में "कागज़ बोलता है", इसलिए रिकॉर्ड की शुद्धता सबसे महत्वपूर्ण है।

3. पारदर्शिता और ईमानदारी

किसी गड़बड़ी को छिपाने की बजाय तुरंत रिपोर्ट करना।

गलत रिपोर्टिंग या कागज़ों में सजावट से बचना।

→ ISO में Corrective Action की संस्कृति को सराहा जाता है।

4. स्वच्छता और व्यवस्था (5S Culture)

"जहाँ से सामान उठाओ, वहीं वापस रखो"

कार्यस्थल साफ, व्यवस्थित और अनावश्यक चीजों से मुक्त रखना।

→ 5S व्यवस्था से ऑडिट में पहले 10 मिनट में ही सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

5. प्रशिक्षण में सक्रिय भागीदारी

SOP, सुरक्षा, गुणवत्ता और व्यवहारिक प्रशिक्षणों में गंभीरता।

नई तकनीक और नए नियमों को अपनाने की इच्छा।

→ प्रशिक्षित कर्मचारी ऑडिट में सबसे प्रभावी साबित होते हैं।

6. ग्राहकों/यात्रियों/अंतिम उपयोगकर्ताओं के प्रति संवेदनशीलता

शिकायतों को सम्मानपूर्वक सुनना तथा यथासंभव त्वरित समाधान देना।

→ ISO में Customer Focus एक महत्वपूर्ण तत्व है।

7. समस्या छिपाने की बजाय रिपोर्ट करने की संस्कृति

यह बताने में संकोच न करें कि "यहां सुधार की आवश्यकता है।"





निवारक (Preventive) और सुधारात्मक (Corrective) कार्यवाही को बढ़ावा देना।

→ यह परिपक्व संगठन का संकेत है।

8. सफाई और कार्यस्थल व्यवस्था (5S Behaviour)

कार्यस्थल साफ रखना एवं उपकरणों को व्यवस्थित रखना। अनावश्यक वस्तुओं को हटाना तथा प्रतिदिन 2-3 मिनट की "मिनी-सफाई"

→ यह ISO 5S और Workplace Hygiene का आधार है।

9. सुरक्षा नियमों का पूर्ण पालन

PPEs (हेलमेट, जैकेट, जूते इत्यादि) का नियमित उपयोग। रेलवे ट्रैक, मशीनरी, इलेक्ट्रिकल प्रणाली में SOP का पालन। किसी जोखिम पर तुरंत रिपोर्टिंग करना।

→ यह ISO के Safety & Risk Management मानकों को स्वतः संतुष्ट करता है।

10. यात्री-सेवा केंद्रित व्यवहार

यात्रियों से शिष्ट भाषा में बात करना। उनकी समस्याओं को सुनना और समाधान की कोशिश। स्टेशन/रेलगाड़ी में व्यवहार संयमित रखना।

→ ISO का मुख्य लक्ष्य "Customer Focus" इसी से पूरा होता है।

11. सही दस्तावेजीकरण और रिकॉर्ड-रखरखाव

काम पूरा होने पर तुरंत एंट्री करना। निरीक्षण/मेंटेनेंस का रिकॉर्ड अपडेट। फाइलें, रजिस्टर और डिजिटल डेटा व्यवस्थित रखना।

→ ISO की सबसे बड़ी मांग- Document Control- इसी व्यवहार से पूरी होती है।

12. टीमवर्क और सकारात्मक संचार

सहकर्मियों से समन्वय रखना। समस्या साझा करने में संकोच न करना। वरिष्ठों/कनिष्ठों से सम्मानपूर्ण बातचीत करना।

→ ISO में Effective Communication और Team Coordination बहुत महत्वपूर्ण तत्व हैं।

13. लापरवाही कम और जवाबदेही अधिक

"जो कि मेरे जिम्मे है, उसे पूरा करना ही है।"

गलती होने पर छुपाना नहीं, सुधारना।

शिकायतों व निरीक्षणों को गंभीरता से लेना।

→ इससे ISO का Accountability Culture अपने-आप विकसित होता है।

14. ऊर्जा का उपयोग सावधानी पूर्वक करना

सभी काम पूरी ऊर्जा-दक्षता के साथ करना।

ऊर्जा की अनावश्यक खपत को कम करना या रोकना।

विभिन्न ऊर्जा-विकल्पों के उपयोग हेतु अवसरों को ढूँढना।

ऊर्जा-खपत का पूरा ब्यौरा रखना।

→ कार्यस्थल स्वतः ही ग्रीनको-मानकों के अनुपालन हेतु तैयार हो जाता है।

15. निरंतर सुधार (Continuous Improvement) का व्यवहार

रोज़ अपने काम को थोड़ा बेहतर करने का प्रयास।

छोटी समस्याएँ उठने से पहले रोकना।

नई तकनीक/प्रक्रिया सीखने की आदत।

→ ISO में इसे Kaizen या Continuous Improvement कहा जाता है।

सारांश

यदि रेल कर्मचारी इन व्यवहारों को अपनाएँ तो बिना अतिरिक्त मेहनत के ISO एवं GreenCo Certification स्वतः सुलभ और स्वाभाविक रूप से प्राप्त हो जाता है। क्योंकि Certification कोई "फ़ाइल आधारित सिस्टम" नहीं, बल्कि व्यवहार आधारित संस्कृति है। कोई भी प्रमाणन कागज़ से ज़्यादा मनोवृत्ति का खेल है। यदि कर्मचारी जिम्मेदारी, ईमानदारी, सुरक्षा, सहयोग और सतत-सुधार की संस्कृति अपनाएँ तो प्रमाणन स्वतः ही आसान हो जाता है।

"कर्मियों के व्यवहार से, पहचान बने प्रमाण, शब्द नहीं, आचरण कहे, संस्था का सम्मान।।"

दीपक मिश्रा

सी.एम.एस. लैब, अहमदाबाद मंडल परे



साधारण पुरुष का असाधारण प्रेम



वह कोई नायक नहीं था।
 न उसके नाम के आगे उपाधियाँ थीं,
 न उसके शब्दों में कविता की चमक।
 वह बस एक साधारण पुरुष था-
 समय पर लौट आने वाला,
 थके हाथों से दरवाजा खोलने वाला,
 और चुपचाप उसके पास बैठ जाने वाला।
 पर स्त्री ने उसमें असाधारण क्या देखा?
 उसने देखा-
 उसकी चुप्पी में भरोसा,
 उसकी थकान में जिम्मेदारी,
 उसकी साधारण-सी मुस्कान में
 अपने लिए सुरक्षित एक दुनिया।
 वह बड़े वादे नहीं करता था,
 पर छोटी-छोटी बातों को निभा लेता था।
 उसे तारीखें याद नहीं रहती थीं,
 पर उसकी उदासी पहचान लेता था।
 वह कविताएँ नहीं सुनाता था,
 पर उसके माथे पर हाथ रखकर
 सारी व्याकुलता पढ़ लेता था।
 स्त्री को उससे कोई महल नहीं चाहिए था,
 बस एक कंधा-

जहाँ सिर रखकर वह
 अपनी सारी मजबूतियों को
 कुछ देर के लिए उतार सके।
 लोग कहते थे-
 “इतना भी क्या प्रेम किसी साधारण आदमी से?”
 वह मुस्कुरा देती थी।
 उसे पता था,
 असाधारण होना भीड़ को दिखता है,
 पर साधारण होना
 किसी एक के लिए पूरी दुनिया बन जाना है।
 वह उसके साथ बाजार भी जाती थी,
 और जीवन भी।
 वह उसके साथ रोटियाँ भी बेलती थी,
 और सपने भी।
 उसे उसके शब्दों से नहीं,
 उसकी उपस्थिति से प्रेम था।
 क्योंकि प्रेम हमेशा शोर नहीं करता-
 कई बार वह
 दिन भर की भागदौड़ के बाद
 रसोई के दरवाजे पर टिककर पूछता है-
 “थक गई हो क्या?”
 और बस इतना पूछ लेना ही
 उसके लिए असाधारण था।
 ऐसी स्त्री प्रेम में डूबी नहीं होती,
 वह प्रेम में सुरक्षित होती है।
 और शायद
 साधारण पुरुष का सबसे बड़ा असाधारण होना
 यही है-
 कि उसके पास लौटकर
 स्त्री खुद को कमजोर नहीं,
 पूरा महसूस करती है।

मेघा राठी

भोपाल, मध्य प्रदेश

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा रेल कार्यालयों के निरीक्षण की झलकियां





डॉ. एमजी रामचंद्रन सेंद्रल (डीआरएम) या चेन्नई सेंद्रल रेलवे स्टेशन को अब 100 प्रतिशत ऊर्जा सौर ऊर्जा से मिलेगी। चेन्नई सेंद्रल रेलवे स्टेशन दक्षिण मध्य रेल (एससीआर) जोन के अंतर्गत आता है, जो विश्व का सबसे बड़ा हरित रेल नेटवर्क बनने जा रहा है। यह स्टेशन अब भारतीय रेल का पहला स्टेशन होगा, जिसे सौर पैनलों के माध्यम से 100 प्रतिशत ऊर्जा प्राप्त होगी।

वाराणसी स्थित बनारस लोकोमोटिव वर्क्स (बीएलडब्ल्यू) हरित प्रौद्योगिकी और उन्नत इलेक्ट्रिक लोकोमोटिव उत्पादन के माध्यम से भारतीय रेल में नवाचार को बढ़ावा दे रहा है। प्रमुख नवाचारों में 2025 तक पटरियों के बीच भारत की पहली हटाने योग्य सौर पैनल प्रणाली की स्थापना शामिल है, जो स्थिरता को बढ़ावा देगी, साथ ही पूर्ण विद्युतीकरण का समर्थन करने के लिए 2,500 से अधिक उच्च क्षमता वाले इलेक्ट्रिक लोकोमोटिव का उत्पादन भी करेगी।



भारत की पहली हाइड्रोजन ट्रेन जल्द, जींद-सोनीपत रूट (हरियाणा) पर चलाई जाएगी। शून्य उत्सर्जन, अत्याधुनिक तकनीक और स्वच्छ ऊर्जा - रेलवे में आत्मनिर्भर भारत की एक और बड़ी उपलब्धि। यह सिर्फ ट्रेन नहीं, भविष्य की दिशा है।



रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड), नई दिल्ली